

सम्पर्क प्रकाशन

महात्मा 130 131, गैबट्टर 12 हनुमानगढ़ गणम 335512 (राज)

मुळकता मिनाख मोवणी धरती

अमर नाथ कश्यप

राजस्थाना भाषा, साहित्य एव गस्टृति अतामा
र आधिन सहयाग मू प्रवागित

मूल्य	पचीस रुपये
संस्करण	1988
आवरण	स्वामी अमित
वितरण	प्रज्ञा भारती प्रकाशन पोकर बवाटर्स रानी बाजार बाजार
प्रकाशन	सम्पन्न प्रकाशन मवान न 130-131 सक्टर 12 हनुमानगढ़ सगम 335 512 (राज)
मुद्रक	साखला प्रिंटर्स मुगल निवास चन्दन सागर बीकानेर

MULKATA MINAKH MOVNI DHARTI
by Amarnath Kashyap

(Rajasthani)
Price 25/-

रचना साँ

वचपण सू इ घूमणे फिरणे रो चाव उमाव रयो । स'र र बगीचे सू शुर हू'र नैडे कनै री हवेत्या, मदिर, स्मारक गढ महल, सग्रहालय आद निरखण रो शौक जाग्यो । अध्यापन अर रोवरिंग सू जुडचा पछ देशाटन स्थाई वृत्ति वणगी । दव योग अर परस्थित्या इस्ती वणती रई क राष्ट्र रा उतलेख जोग एतिहासिक अर सास्कृतिक क्षेत्र ई नइ प्रकृति रा अनुपम सुरम्य स्थळा र पदल भ्रमण अर ट्रकिंग आद र व्यापक कायत्रमा र निरतर आयोजन रा मीका सुलभ हुता रया ।

स्वानुभूत ज्ञान प्राप्ति रो भ्रमण सू आछो कोई दूजो सात नी हूव । आखे मानखे न एक सूत्र में बाधणे, दूजा देशा अर घर्मा र बीच सामजस्य वणावणे अर प्रेम भाव रो थापणा करण में भी यात्रावा महत्वपूण भूमिका निभाव । स्यात इण कारण सू ई उपनिषदा सामाय आदमी ने चरवेति चरवेति रो मंत्र दिया । दुनिया र लागा न भौगालिक, एतिहासिक, सास्कृतिक अर धार्मिक ज्ञान देवण में भ्रमणशील विभूतिया रो स्मरण जाग योगदान रँयो है । परिव्राजक महावीर अर गौतम, चीनी अध्येता, फाइयान अर मेगस्थनीज, प्ररयात नाविक कोलम्बस अर वास्काडिगामा, शाधकर्ता राहुल, सयासी भदत आनंद अर साहित्यकार अज्ञेय प्रभत यात्रिया र भारी ऋण सू उऋण हूणा कद सम्भव है ? म्हारो निजी अनुभव है क खुली दीठ सू परतख देख्या तथ्य जीवन जगत रा न जाणे कित्ता अणजाण्या अणदेरया रहस्या सू परत दर परत आवरण उठा'र इसान न सत्य रा दर्शन कराव है ।

यात्रा रो पाथेय है मौज मस्ती, निभय विचरण अर अमिट जिज्ञासा सू ज्ञान अर्जित करणे री तीव्र लातसा । जा वृत्ति 'लागी छूटे ना' है । एक'र इण

रो आस्वाद जाग्यो तो दो चार महिना बाद निश्चित हूँ बठ नी सक । मन
 यदन खातर उछाळा खाण लाग । देशाटन रो आणंद 'गुणे रो गुढ' ही है ।
 इण ताई तो कईज- 'सब ठाठ धर्यो र जावेलो, जद लाद खल्लो बिणजारो ।'

इण पुस्तक रो उद्देश्य आपणे सुरगे देश री नसगिक शोभा, पावन
 सस्कृति अर कलात्मक समृद्धि रो वविध्यपूण सरूप पाठका सामे राख'र उणा
 में आपरी माटी अर मानसे सू जुडण री तडफ जगाणो है । आ सलक इकसग
 पदा हूगी तो भ्रमणार्थी ने खुद तो देश अर सस्कृति र बारे में बीत कुछ सीखणे
 समझणे रो मौको तो मिलसी ही, दूजा लोगा न भी उण अनुभूत अर ययाय
 पान रो लाभ पूचसी । इण विनम्र अर मगल प्रयास में पुस्तक किस्ती कामयाब
 हुई है इ रो मूल्यांकन तो पाठका र ई हाथ है ।

राजस्थानी भाषा म याया विषयक लेख तो यदा कदा देखणे म आव
 पण इन विधा में एकळ पुस्तकाकार रूप में प्रस्तुत करणे रो ओ लघु प्रयास
 आपणे साहित्य री श्री वृद्धि ताई भळ प्रेरक हू सक्यो तो में रचना न कृताय
 मान सू ।

—अमरनाथ कश्यप

विगत

धरती रो सुरग काश्मीर	9
देवतावा री घाटी कुल्लू मनाली	20
दूध अर शहद री घाटी	29
उत्तराखण्ड रा तीरथ	37
पजाब रा नुवा पुराणा तीरथ	47
हाडीती सू मेवाड ताड	55
मस्कृत्पा री सगम स्थळी मगध	61
गरबीलो गुजरात	72
शिल्प जर कला रो खजानो-अजता एलोरा	81
मुळता मिनखा री मोवणी धरती गोवा	88
आधुनिक नगरा अर नदनवन री भूम	96
पोगल अर मदिरा री धरती तमिलनाडु	104

धरती रो सुरग--काश्मीर

धरती र सुरग अर सिरज्ठी र सिणगार काश्मीर ने देखण रो उमाव विण न नी हूव । भारत र सिरमौर इण भू खण्ड री बरफ सू ढकयोडी चादी बरणा पवत चोटया कळ कळ निणाद सू बहती उछाळ खाती'र छोटा मोटा भाटा पत्थरा सू अठखेल्या करती नदया चारू मेर हरियाळी सू मडयोडी ऊची नीची घाटया वर झर झरता झरणा बगा बहता बाहळा अर जीवन री ऊचाई री घोषणा करता सीधा तण्या खडया देवदार चिनार अर चीड रा विरवा सू र ब र होणे री कल्पना म् घणे हरख अर आणद र भावा रो निपजणी सीभाविक ही है । जक ठौड री प्राकृतिक शोभा रा दरसण करण न भारत ई नद समूळ ससार रा घुमक्कड तरसता रवे, बिण रै साक्षात्कार खातर खाना हूती बेळा दिल मे हरख री हिलोरा चालण लागी ।

31 मई 1985 ने पठान कोट सू श्री नगर ताई बस सू खाना हुया । औ सगळा भारग 400 किलोमीटर र अदाज है । जम्मू ताइ रो 108 कि मी रो मारग सपाट है । पठान काट स्यू ई चिनाव नदी सू निक्ळयोडी केई नहरा सडक र साथ साथ बवे । रास्ते मे बरसाती बाहळा माथ केई बडा बडा पुल भी आव । तालनपुर में चूगी चौकी है जठ यात्रा कर देणो पडे । अठ सू थोडी चढाई भी सरू हुव । सडक र डावे कानी एक चोखो शिव मंदिर दीम । कोई भी दोरी मुहिम सू पला मंदिर देवला री थापना भारत रो परम्परा र मुजीब है । सीभाग्य सू ई दिन आकाश म बादल वाइ छायोडी ही इण कारण यात्रा भळ घणी सोवणी बणगी ही । जम्मू ताइ रो दा घण्टा री सवारी बात करता इ पूरी हुती लागी । मोटर ट्रास पोड अर परिवहन री दीठ सू जम्मू एक बडो केन्द्र है । अठ पू हिमाचल, पनाव काश्मीर जाद जगावा खातर हजारू गाड्या

पी सक। कश्मीर जावणिया केई यात्री अठ भी रक्। कुद सू आगे बटोट नाम री जाग्या है। अठ रा प्राकृतिक सौदय वेजाड है। औ स्थान खासो ठडो है। यूथ होस्टल अर दूजा होटला म ठ'रण री चाखी व्यवस्था है। अठ सलाणी रात्री पडाव कर। बटोट में श्री नगर मारग मे कश्मीर री परसिध अर ऊँची पीरपजाल पहाडया है। आ परवत शृखळा जम्मू ने कश्मीर सू अळगी करण आळी भीत दाड है। इ म ही बनिहाल परवत माथ जवाहर सुरग वणाई गई है। इ दुतरफा सुरग री लम्बाई 2½ मील है। भारत र तकनीकी ज्ञान रो सुदर नमूनो इ ने क सका हा। इ र निरमाण सू कश्मीर रा 21 कि मी रस्तो कम हुग्यो अर राज मारग भी समूळ साल ताई खुल्ला रण लाग ग्या। सुरग पार कर्या पछ कश्मीर घाटी सर हुव। जागै र आखरी 2 घटा री यात्रा समतळ मारग में हुव।

बनिहाल सू 21 मील दूर जपरमडा नाम रो स्थान है जठ सू 8 मील री दूरी माथ बरीनाग रो स्रोत है। जो स्रोत ही कश्मीर री झेलम नदी रो निवास है। मुगल बादशाह जाहगीर र हुकम सू हैदर नाम र इजीनियर 1612 ई म इण र चारुमेर एक अष्ट कोण तलाब बणवायो। जो ताळाब बीच में 56 फुट ऊडो है। घणी गहराई र कारण इण रो पाणी गैरे नीळे रग रो दीम। तळाब र बुण पर सिला माथ फारसी रो शेर लिख्योडो है। जिक रो मतळब है 'धरती माथ जदी कठ ई सुरग है तो वो अठेई ही है अठेई है, अठेई है।' ताळाब र चौभीतें मे एक छाटो शिवाळय है। वारले पासे आछो वाग है जिण में गुलाब री फूटरी क्यार्या है। बेरी नाग सू पाठो ऊपर मुडा आणो पड। जठ सू सडक रो एक मारग अणत नाग हुतो पहल गाव जाव अर दूजो अवती पुर अर पामपुर हुतो श्री नगर पूग। इ दूज मारग सू म्है श्री नगर पूच्या। यूथ हास्टल में आगूच आरक्षण हो बठ जा ठरया। लगातार 14 घटा री यात्रा सू थाकयोडा सगळा साथी यात्री पडता पाण इ मूग्या जर दूज दिन सूरज ऊग्या पछ घणी ताळ सू उठ सकथा।

1 जून री दापहरी म भोजन अर विद्याम र बाद तीज पीर चार बज्या परमिद्ध आदि शनराचाय र मिदर रा दशन ताइ दुर्या। मिदर

नगर सू उतराद म हजार फुट ऊचे डूगर माये बण्योडो है। म्है केंद्रिय बजार, सचिवालय लाल चौक हुता हुया झेलम दरियाव र दूज छेडे पूच्या। सचिवालय माथ तिरग री जाग्या कश्मीर राज्य रो थण्डो लाग्योडो देस'र मत में खिनता हुई क आजादी मिल्या र इत्ता दिन उपरात भी समूळे भारत रो एक ध्वज जौजू भी नी हो सक्या है। सविधान में भी डण रो अळायदो स्तर बण्योडो है। झेलम र पार आगे मील डेढ मील रो रास्तो चाल'र पाछा पवत री पगडडी र मारग मू चढाई आरम्भ कीनी। आ चढाई सीधी ऊभी चढाई है जव मू दूरी थाडी हूणे पर भी ताण पड। ऊपर दा मिदर है। एक गिबजी रो शिवानय है जिण में अष्टघात रा विनाल गिब लिंग स्थापित है। बगल में नड ही आदि शकराचाय री प्रतिमा आळो एन छाटो मिदर है। कवत है क अठ ई आदि शकर अर बौद्ध पडित मडन मिश्र रो गास्नाथ हुयो। जक में मिश्र न हरा र बौद्ध धम री जाग्या पेर हिन्दू धरम रा थण्डो गवर जाखे भारत में पहरायो। शकराचाय री टकरी मू समूळी थ्री नगर, सप दाई बळखावती थेलम शिकरा अर हाउस बोटा मू भरयोडी डल थोल अर चार चिनारा रो अनूठो निजारो दीव। सिझ्या सात बज्या मिदर र लारला सडक मू पाछा ऊतरया अर डल झीत माथ पूग र नहरू पाक र मनचीत निजारे रो आणद लियो। रात र नौ बज्या पाछे होस्टल पूग्या। हाथ लागो वणावत खात ग्यारह बज्या। स थाक'र चूर होग्याहा पण पलड इ दिन र कार्यक्रम अर प्रवृति र सोवणे रूप रा दशन नर म्हे सब थार निवासी घणा आणदित उत्प्रेरित हुया।

दि 2 जून न बस स्टड म् परसिध टनमग ताड खाना हुया। ओ स्थान श्रीनगर मू 40 कि मी दूर है। अठ बस मू उतर र आगे गुलमग खातर पदल टुरया। अठ मू गुलमग ९ कि मी है। पहाडी चढाई सडी अर दोरी है पण सुस्ताणे वास्ते कोई बठयो नइ। राष्ट्र भक्ति रा गीत गाता रास्ता कटता देर नी लागी। 10 बज्या टनमग मू चाल्या हा 12 मू पला ई गुलमग पूग्या। जठे एक ऊँची चट्टान माथ महारानी मिदर बण्योडो है। कन ई ठटे पाणी रो

क्षरणा बव । दोपहर रा भोजन अठ ई करघो । गुलमग रा मारग हर्यो भर्यो
 अर अनेक क्षरणा आळी है । गुलमग में धरती माथ दूब अर फूला री पटया सी
 बिछघाडो ही । ओ स्थान अपणे नाम र भुजीब पुपप वाटिका दाई ही लाग ।
 सरदया अर वसत में तो इण री सोभा देखता ई वण । इण ठौड गोलफ रा
 कई बडा बडा मदान है । आख ससार रा मानीता गोलफ खिलाडी अठ भेळा
 हुव । हर साल केई बार अठ टूरनामेट हुव । अठ टूरिस्ट दफतर, यूथ हास्टल
 अर ठरण खातर केई आछा होटल है । गुलमग सू खिलनमग 6 कि मी है ।
 आग री चढाई तो टगमग-गुलमग मारग सू भी पणी दोरी है । खिलनमग
 ऊची ऊची बरफ सू ठकयोडी पाहडया मू धिरयोडी है । जून जुलाई र गर्मी र
 मौसम में भी अठ बरफ रव । इण बरफ माथ स्लैजिंग आदि तिसळण रा खेल
 गरम्या म खालता रव । खिलनमग री ऊचाई 11500 फुट है । अठ हमेशा
 ठडी अर तीखी पौन वैहती रव । परसिध अमरताथ गुफा ने छाड र आ जाग्या
 कश्मीर र स सू ऊचा दशनीय स्थाग में प्रमुख है । अठ सवारी वास्ते टट्टू
 भी मिल । स्लैजिंग री जाग्या ताइ पूगण में टट्टू री सवारी री आण द
 लियो । बरफ सू खलता बडा बूढा भी अठ आपर बचपण री याद ताजा बरता
 दीस । दापहरी बाद 3 30 बज्या पाछा बईर हुया । सात मील री उतराई
 डेढ घंटे सू भी कम में तय कर लो । 6 बज्या वस में बठया अर 7 ताई पाछा
 श्रीनगर यूथ हास्टल मे पूग्या । थोडी ताळ विसराम र पछ भाजन बणा
 खा र अमीरा कदल, बादशाह चौक लाल चौक आद मुख्य बाजारा री घुमाई
 करण वास्त भीसरया । रात में 11 बज्या वापस आ'र सा सवया । मदान र
 समतळ इलाकें मे जदी इतरो घूमणा हुव ता थाक'र चूर हो जाता । पण
 पयटन री उमाव अर देखण री जिज्ञासा र कारण इत्ती थकाण नो हुई ।
 गुलमग री शोभा अर सुन्दरता री छान औजू भी एकात क्षणा मे मन में
 ताजगी अर फुरती री सचार कर ।

दि 3 जून न श्रीनगर र ससार परसिध बगीचा-निशात, शालीमार,
 चश्मेशाही जर हरवन न दखण रा कार्यक्रम राख्यो । दा-यू बखत री भोजन

साथ ले र 10 बज्या बस सू चश्मेशाही वास्त निकल्या । यूथ होस्टल सू औ वाग 8 कि मी दूर है । मारग डलझील र सारे सार चाल । सिकारा अर वडा बडा हाउस बोटा री सजी सवरी कतारा न देखता जी नई धाप । तिस्सी आखा टल में तिरता वागा चप्पू चलावता सलाण्या अर तेज रपतार सू दौडती मोटर बोटा र मनभावते निजारा न दिल में उतारण खातर ललचावती रवे । 15 मिटा में ई चश्मेशाही पूग्या । भात भात र गुलाब र पुष्पा रो सातरो वगीचो है । मुगल गवरनर अली मदन ईन 1632 में वणवाया । कैव है क अठे शीतळ जळ रो झरणो पुराणे समय में बहतो हो पण आज वो रक्ग्यो । करीब एक घटा अठ रुक र निशात वाग खातर रवाना हुया । निशात चश्मेशाही सू 3 कि मी की दूरी माथ है । जहागीर की वेगम नूरजहा र भाई जासफ खा इण रा निरमाण करायो । एक डूगर री ढाळ माथ दस चवूतरा पर चूडी उतार रूप सू औ वणायो गयो है । पहाड सू पाणी र झरणे नै नहर दाइ चवूतरे दर चवूतरे बीचो बीच निवाळ र डल थोल म मिला दियो है । मुगल बगीचा में औ सगळा सू बडो कुदरती निजारा अर पेडा री हरियावळ सू भरयो पूरयो है । चरी खुमाणी, ग्लास, आडू अर बागू गासा जिसा रसाला सू सिगळी वाग लदयो रव । वाग में माळी ताजा फल वेचता रव । पूला री सुंदर ब्यारया अर झाडा री तरास काट'र लाइण सू सजायोडी वणगत सू वाग री सोभा म चार चाद लग्या दीख है । इण स्थान रा डड घटा आणद ल र अर दोपहर रो भाजन अठई जीम'र गोठ रो लूठो आणद लेवता लवता 2 बजे र नड शालीमार वगीचे ताइ बईर हुया । औ वगीचो निशात सू 3 कि मी दूरी पर बण्योडी है । इण न निज में आप यादशाह जाहगीर वणवायो हो । फूटरा पुष्पा अर रूखा री कतारा मनभावणी सोभा आळी है । वाग र बीचो बीच काळे मकराणे री वारादरी वण्योडी है, जिव र चारू मेर फवारा री कतारा निजारे की सोभा न दूणी करती दीस । वाग र पिछवाडे डूगर की आड म चारू कानी सोवणी वेल्या, फूल अर वरस्पति अर सामे लम्बी चोडी गरे पाणी आळी झीळ वाग न घणो मनमोवणी वणा देव है । प्रवृति रो खुल्लो कुदरती रगरूप इंसान री कतापूण साज

सजावट सू जीर भी खिलतो निखरतो लाग । श्रीनगर रा लोग भी गरम्या रँ
दिना में इण सँ बागा मे घणी मात्रा मे सर ताई आवँ है । साल भर वेसी सर्दी
अर बरफ पडन र कारण एक तर मू अ लोग आपरै घरा टापरा म कद सा हू
जाव है । इण लागा वास्ते भी आ मौसम घूमण फिरण री हुव । सँकडा री
सरया में पेशावरी सलवार कमीज परया टावर टावरी, माथ पर रेशमी स्वाफ
वाघ्या, ढीला चोगानुमा कुर्ता व सलवार पर्याडी महिलावा चाय रा थरभोस
अर नाशते पाणी रो सामान ल'र अठ गोठ मनावता निजर आव । अ नमकीन
चाय पीव । इसान अर प्रकृति दोनू माथ अठ ठावरजी री घणी किरपा है ।
अठ जिसा खूबसूरत मानसो अर कुदरत आस ससार मे इ ठौड ई देखणे मे
आव है ।

सिद्ध्या 4 वज्या हरवन ताइ रवाना हुया । हरवन शालीमार सू 5 कि
मी जागो है । पहाडा र बिच भेळे हुवण जाळे पाणी न पाळ सू बाघ'र झील
रा रुप दे दियो है । बाघ री भीत में पाणी र निकास खातर लो रा पाटक
वणायाडा है जिण सू जरूरत मुजीव पाणी रोकयो अर निवाळया जा सक है ।
इण झील सू ई श्रीनगर सर न पीणे रा पाणी मिळ । सुरक्षा री दीठ सू इण
स्थान रा फोटा लेवणो मना है । चारू मर पहाडा सू घिरया हुण कारण झील
रो निजारो अर डूगर माथ ऊचा सीधा तण्या खडा पेडा रो उणियारो पाणी
में क्षावतो दीस । चील र सामे एक छाटो सा सातरो बागीचो भी बणा दियो
है । सनाण्या र बठण ताइ बीच बीच मे लकडी री वैचा भी विछायोडी है ।
अठ सू पाछा घिरता डल झील माथ भळ आ र रुक्या । हरियावळ घाट्या
अर चारू पास डूगरा सू घिरयोडी गरे नीले जळ री फूटरी आभा आळी डल
श्री नगर रो सिणगार ही जाणो । 5 मील लम्बी अर 2½ मील चौडी आ झील
आपर नाम र मुजीव है । कश्मीरी भापा मे डल रो मतळव पाणी री मोक-
ळायत है । बताव क झील वेई ठाड 80 फुट ताइ ऊडी है । इण झील मे हर
बखत सज्या सवरया हजरू हाउस वोट अर सिवारा तिरता रवे जका इटली
र बनिस नगर ज्यू श्रीनगर री सोभा न चार चाद लगती दरसाव । डल झील

री एक विशेषता आ है के इण म वेई तिरता टापू भी है। इण टापुआ म सती नीपज पण अ टापू झील म धीम धीम सिरवता अर झूलता रव। सिझ्या पडघा इण म गगरीवल नाम रे टापू माथै घित नेहरू पाक मन मोवणा रोशनी म झिलमिल करतो जगमगाता गीस। हाउम बोटा री हजारू मन्मि राश्या सिमळ दृश्य न माह्व बणा देव है। रोगनी रा रगीन निजारा रूपाळा बगीचा, माय आधुनिक साज सजावट रो होटल, बगीचे मे बठण सातर पत्थर माथ नक्कागी र चोम काम री चौक्या अर बँचा री सुविधा हूण सू हररोज हजारू टूरिस्ट घूमण फिरण अर नौका विहार रो मजा लेवण न अठ आव। नहरू पाक सू अणजन 2 कि मी दूर डल झील र एक दूज टापू र चारू कुणा माथ चिनार का चार पड है। इणी कारण टापू न ई चार चिनार बव। सिवार सू अठ पूगीजे। जत ब्रीडा रा आनंद अर आप डाड चला'र दूजा सिवारा सू आम निकळण री होडाहोड मे घणा मजो आव। बय प्राप्त माटियार भी धाडी देर सातर भोळा निश्छळ टावरा सरीखो बरताव करण लागग्या। 2 घटा ताई वाटिंग अर एक घटे साण नहरू पाक म सुदर निजारा रा दशन अवलाकण करण रे उपरात रात्रि 10 बज्या होस्टल पूग्या अर भोजनादि र वाद विधाम लीयो।

दि 4 जून न दिनुगै 8 बजा बस पकड र पहल गाव ताई रवाना हुया। मारग मै पामपुर री बस्ती आव। अठ बेसर री सेती हव। बसर निपजणे रो समय नवम्बर रो महिनो है। बताव क केसर रा मिजर 2 या 3 डिगरी तापमान माथ अकुर। बस सू ई बेसर र सेता री बयारा दोसै। समूळ वातावरण म केसर री सुगध बाफर। पामपुर सू 16 कि मी आग अबन्ति पुर है। अठ प्राचीन काल र विशाल मिदरा रा अवशेष है। इण खण्डरा री खुदाई रो लूठो काम वा री श्रैष्टता रो गुण गावतो जाण पड। अ मिदर कश्मीर र राजा अवतिवमन (853 888 ई) र समय रा है पण भारत री पुराणी स्थापत्य कला रे बडपण रा जीता जागता नमूना है। अवतिपुर सू 22 मील आग अच्छावला नाम रो फूटरो बगीचो है। राजा अक्ष (426

16 सुळकता मिनल मोवणी धरती

486 ई) कश्मीर मे राज करता हा । वा र नाम सू ई आ वस्ती वज । मुगल बादशाह शाहजहा री बेटी 1640 ई मे इण ठाम ओ बगीचो बणवायो । अपुठे डूगरी सू एक बरणो बहतो इण बगीचे मे आवे । इण झरणे न एक छोटी नहर रो रूप दे दियो है । बीच बीच मे पवारा रो उछाळ भरतो निजारो देखणे मे आव है । पाणी रो वाहलो, फुनडा भरी क्यार्या, रसाल सू लद्या विरख अर कट्या सवरया झाडा र कारण बाग रो रूप घणो निखरयोडो लाग । अठ सू 10 मील रो दूरी पर बाकर नाग रो सुदर झरणो हे । पश्चिम दिशा री पहाडी सू पाच छ धारा मे तेज बहतो झरणो फूट अर आग चाल'र मिल र एक छोटी नदी दाइ बवण लाग जाव । इण र चौतरफे फल्यो बगीचो स्वास्थ बढाणे आळो है । इण वास्ते बोकरनाग चोखो शिविर स्थल गिणीज । गर्मी रो रत मे सलानी अठ तम्बुआ मे रवे । श्री नगर जावण खातर कोकर नाग सू पाछो अनंत नाग आणो पड । अनंत नाग श्री नगर सू 34 मील दूर है । अठ दो बरना है । एक ठड पाणी रो अर दूजो गधक रे गरम पाणी रो । ठेडे पाणी रो स्रोत एक तलाब मे पड जब रो निजारो भावणा है । तळाब मे छोटी बडी केई तरा री मछल्या तिरती रेवे है । इण ठाम शिव, राधा किसन लछमीनाथ अर दुर्गा माता रा केई मिंदर है । अनूठोपण ओ हे क किसन जी रो मूरती अठ गौर बरणा है । गधक र झरण सू अठे कुष्ठ रोग रो इताज हुवे । झरणे र एडे छेडे चिनार रा विरख है । विरखा री ठडी छाव मे लोग कम्पिग रा जाण द उठाव । अनंत नाग सू 2 मील दूर मातण्ड तीरथ है जठ 5 वी शताब्दी मे राम दित्य रा वणवायाडा चोखा सूय मिंदर है । 8 वी सदी मे ललिताब्दित्य इण रो जीर्णोधार करायो । परसिध तीरथ अमर नाथ रा यात्री इण स्थान न बौत पवित्र मान है अर अठ र तळाब मे स्नान कर है । बड तीरथा दाई अठ रा पण्डा वस ठहरता पाण बईया लिया आपणे आपणे जिजमाना रा पता ठिकाणा पूछता अर लिखता दीस है । जे केई यात्री रा पुरखा भाय सू कोई पले कदेई अमर नाथ री यात्रा गयोडो हुव ता वारा नाम तिथ्या सन सवत समत लिखयोडा इणा मे मिल जाव । इण पण्डा री यादास्त बौत तगडी हुव है । मिंदर र सामी साम एक प्राइमरी स्कूल है । वस र प्गता

इ स्कूल रा घुड माटी गू भरयाटा भाळा अर सवोची टावर यात्र्या न अळग सू इचरज सू देवण न ऊभा होयग्या । म्हार बुलाणे पर दो टावर भाग भाग' र पाणी री वेतळी नळ गू राजी राजी भर ल्याया । जद ताइ बलास री घटा नड बाजी स टावर यात्र्या र अडे छेडे मडराता रया ।

2 वज्या र नडे लीदर न्नी र सार मार पहलगव बानी आग वड्या । लीदर री वहाव खासा तज है अर पाट घणा चोडा है । बदरीनाथ मारग में अलमन-दा अर मदाकिनी जिया बद तज जर बद धीमी गति सू बव, उण भात ही लीदर भी बद ता गभीर अर बद चबल गति सू बवे । श्री नगर सू 16 मील दूर लीदर र पूर्वी घाट माथ समुद्र री सतह सू 6000 फुट री ऊचाई पर चार मर ऊचा अर बरफ सू ठनया पहाडा सू घिरयो पहलगव एक् घणो आछा छाटो मो बस्वो है । बरफीली चोटया सू नीसरती ठडी हवाया र कारण जून र महिन में भी अठ री मौसम बौत सुहावणो हो । कश्मीर र देखण जोग अर स्वास्थ बघव स्थाना में पहल गाव री ई पलो नम्बर है । दूर दूर ताई ऊचा घणा दरखत अर बरफ सू ढक्योडी पवत चोटया न देवता जी नई घाप । खासी देर लीदर न किनार बुदरती निजारा री जाणद लेणे र पाछे बस्वे र बाजार में आया । बाजार म अगरोट विदाम जर मेवा री ग्यासी दुयाना है । लकडी री कारीगरी री सजावटी सामान गरम कपडा अर ऊनी बस्त्रा री दूकाना ई बेसी है । सलाया खातर घुडसवारी रा टट्टू भी अठ किराये मिल । पहलगव में यूथ हास्टल, रेल्वे रस्ट हाउस अर छोटा बडा पचासू हाटल ह । चाय नास्त रा ढाबा अर हाटल भी बौत है । पहलगव सू इ अमरनाथ री आखी दुनिया में मशहूर यात्रा वास्त चदन बाडी शेष नाग अर पच तरणी हो र रस्तो जाव । दूरिष्ट हट जर तम्बू आद भी जठ किराये मिल । यात्री अठ सू तारसार, कोल्हाई री परसिध ग्लेशियर आद जगावा री यात्रावा न भी टुर । इ ताइ कुली टट्टू अर डाडा जाद री भी अठ समूळी व्यवस्था है । दूरिस्ट बगले में रात ने बिसराम करयो । नव वज्या रात तक जठ खासी ठड ह जाव जर बाजार दूकाना अर

हाटला न बढा दवे । आगले दिन भोर में छ बज्या पाछा पठान कोट ताइ
रवाना हुया । इण भात एक हफते री अनूठी यात्रा रै उपरात आपणे घरा
सातर पूठा चाल्या । पण आज ताइ भी जद जद इण यात्रा रो चितराम
निजारा घूमै घरती रै परतख सुरग रो चित्र सिनेमा री रील दाई आध्या
सामै घूम जाव है । कश्मीर सरीखो दूजो फूटरो रथान भारत तो बइ दुनिया
री दूजी ठौड भी कम ही दोखण में आव ।

देवतावा री घाटी-कुल्लू मनाली

प्राकृतिक सौंदर्य में काश्मीर सू टक्कर लेने वाली जदी भारत में कोई दूजी जाग्या है तो वा है कुल्लू घाटी। चारू मरे ऊचा पहाडा सू घिरयोडी देवदार अर चीड र दररता सू भरी अर अणजाणी दूरया सू उछाळा ल'र वहती आवती ब्यास नदी र सारे सार छोटी बडी वस्तया म मीला ताइ फल्यागी शात अर सुरगी इसी ठीड कठ कठई देखण न मिल। कुल्लू घाटी रो रूप भिनखा र जीवण काल दाइ मीमम मुजीब बदळतो रवे। गरमी हूव या विरखा अठ र पहाडा री शोभा देखण जोग हुव। वसत र महिना में घाटी रा वगीचा सेव चरी अर आलू बुखारा सू लद्या रग विरगा दीस तो विरगा म घाटी सफेद मटमैला अर काळा वादळा री रम्मत री चौक वण जाव। सितम्बर जकदूबर में देवदार अर फर रा रूखा री पत्या वसूवळ अर सोनालिया रगा सू भर जाव। मतलव जी व वारू मास अठ र दश्या में सुपन सी ताजगी रव।

कुल्लू चडीगढ सू 277 कि मी दूरी माथ वस्यो सलाण्या रो सुरग है। दूजा हिल स्टेशन दाइ भीड भडावे हाके जर गदगी रा परभाव औगू अठ नइ है। वस सू विलासपुर सुंदरनगर अर मडी हू'र जाणो पड। मडी हिमाचल प्रदेश रा एक चोखा सुंदर पहाडी कस्बो है। अठ उत्तराद सू ब र जाणे आळी उहल जर पूरव कानी सू जावण आळी ब्यास रा सोवणो सगम है। मडी सू दो सडका पट। एक जोगेदर नगर हू र घरमशाळा जाव। दूजी कुल्लू मनाली हू र राहताग दरें नीकळ। रोहताग र पार भारत री सीमा रा अतिम क्षेत्र लाहौल रपीती आद है। सम्पूरण मारग टेढो मेढो घेरदार है।

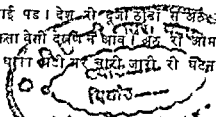
एक कानी ऊचा डूगर है तो डूज कानी मडी मू आगे मगळे मारग में व्याम
 सडक र सारे सार बव । नदी में जळ प्रवाह रा निजारा पळ पळ बदळता
 दीम । कठई ता इण रा पाट खासो चोडो है ता कठई छोटी अर सखडो ह
 कठई गभीर गजन सुणीजै ता कठई शात अर नीरव वहाव दीम । मटी मू
 ग्यामो आग लरजी नाम री जाग्या सू करीव 30 35 किमी मीटर दूर कुल्लू
 मू पला उण र दिखणाद में सुतर गाव ह । उण ठाम मू करीव 25 कि मी
 मार्थ माणिकरण बस्ती है जठ गरम पाणी रा चश्मा है । जमीन पाडर
 बुबुद करतो इती गरम पाणी अठ नीमर क इण में एक लग हाथ नी घाल्या
 जा सक । बद्रीनाथ दाड अठ नी ज पतील में चावळ ताव र उपर मू बी 7
 मूह बढ करे इण ऊळते जळ में टर देव ता चावळ आप पक जाव । अट
 सिक्का रो एक सुंदर गुट्टारा भावण्याडा है जक में जातर्या न टाण जात
 आवास अर जीमण ताड भाजन निवरचा मिल । जातरी जापरी नाथा मार
 चाव तो चढाप में या दान मार मन माफिक गणि अमित कर मके । कुलग्न
 रो एक डूजो करिश्मो अठ देखण नै और मिल । अट एक-ए एकडे में सुक
 में गरम पाणी इ पाणी रा चश्मा है ता ईमा रें मार मार 10 15 फू नीचें
 पावती गगा रा हिम गीतल जळ बव । मणिकरण में छाटी-मी बस्ती है । अगळ
 40 50 घर हमी । म मकान लकी रा वापरा है जक वदनी में वट्टा मू
 बणा पाणा माघ लभा खर्या है । कना रें नीच पाणी बंता र्व । घगर
 लार पणी बनस्पत्या मू लद्या उचा पश्या री उम्हा शृलंग है । पावती
 गगा सुतर काना जठ माह लव उण ठाम लामा सुन्या । खरी ग सुतो
 पुड है । अठ पारवनी गगा रो लूटा उळाळ मालो जक मत्रना जगना त्रिकराड
 एन मरें त्त में हर मा जाग्य लो । एन जाम्या री उण नी मार आव
 मन में रामाच हण नाम है । कुल्लू जाग बाटा परटका नै आ म्यान जरूर
 दगणो चाहिज । पाछो मुत्र आर मनी माग्य मू कुल्लू जाणा पडे ।
 चढागद मू नाथा कुल्लू प्रग में करीव 13 घण रा ममद नाम । जे मणिकरण
 पाई र्व ता रात्रि पटाव गुट्टार म कर र आळ दिन मीर म करीव । एते में
 कुल्लू पूष मक है । म्हा नाग मणिकरण म मत्री विमगाम ताई र्वग्या हा ।

देवतावा री पाटी-कुल्लू मनाली 21

आगले दिन उगता ई जल्दी बरहर हूर 7 घंटा कुन्तू पूग्या। राजकीय विश्राम गृह चौक में ई बग स्टैंड र सार ई है। इण में आवाग सार ठरण रो व्यवस्था करी।

कुल्लू 20 25 हजार रो एक छोटी बस्ती है। अठ जिले मुख्यालय रो दफतर है। एक माध्यमिक महाविद्यालय भी अठ है जक में आसपास रे पाहडा क्षेत्रा रा बालक भी पढणन आव। अठ रो वाजार छाटो सो है। कुल 100 125 दूकाना हुसी। पण लाक कलावा अर दम्तकारी रो दीठ सू अ खासी सम्पन है। अठ काफी तादाद में कुल्लू टोपी अर बुशारी बक जकी टाप्या वण। पगा में परण रा बेई तरा रा जूता अर पगरगवा भी बणाई ज। पट्टू नमदा गुदमा पट्टी अर कसीदाकारी रा लूठो काम हुव। अमें बेई सहकारी संस्थावा भी इण उद्योगा न बढायो देवण ग्यतर बणगी है। शहद, फल अर फळा र रस रो बिक्री भी चाकी मात्रा में हुव। कुल्लू रा सेव तो आसे सत्तर में प्रसिद्ध है। कुल्लू र अमरी अर डिलीसियस सवा रो तो देश सू बार निर्यात भी हुव अर विदेशी मुद्रा रो कमाई हुव। बस्व र बीचाबीच घालपुर रो बडो विशाल हरयो भरया मैदान है। इण मैदान में ई कुल्लू रा अंतर्राष्ट्रीय ह्याति रा सामाजिक सांस्कृतिक त्यौहार हुव। अठ रे लोगा न नत्य संगीत रो खूब शौक है। घाढा बरस पला ताइ तो लोक नत्या में लुगाया आम तौर सू अर खुलेपण सू भाग लेती ही। पण आजादी पछ गलत सामाजिक बधना अर रुकावटा र कारण अमें इण रो जाग्या छोटा मोटा स्थानीय नतक मण्डल बणग्या है जिण में एक परिवार रा या आपस र मित्र परिवारा रा लोग लुगाया भाग लेव। अणजाण अपरिचित यान्या न भी नत्य में आपणे साथ लेणे में इण लोगा ने घणो हरख हुव। कुल्लू रो स्त्रिमा बीत मेहनती अर लगनशील हुव। खता बागा अर घर रा घणखरो काम लुगाया ही कर। पुरव बग तो प्राय चाबळ सू घर बणायोडी लुगरी नाम रो दारू पीता अर हुक्के न गुडगुडावता घर या दूकाना में बठा दीस। इण लुगरी रो आ विशेषता भी बताइजे क वण सू मस्ती तो आव पण दूजी शराव दाइ आब्राहमक

उत्तेजना या उमाव दण सू नी हव । अठ र वाजार म दस्तकारी री जिसा
 वणती अर बियती भी नियाई पड । देश रो दूजा ठोनी से अठे र नारी
 जीवन म सहजता अर उमुक्तता बेसी देखिने आव । अठ रो आम अहिमी
 सरल अर धरम परायण है । धारा भी अर जारी जारी री घटनाया भी
 बीत वम गुणन म आव ।



कुल्लू र दगराव रो मळा अतर्राष्ट्रीय स्तर रो मेळी मानीज । सगळा
 हिमाचल अर देग रा दूजा प्राता रा लोकाई-नई मिदमा रा संबडू हजा
 कलाप्रेमी भी दण न देण न आव । हिमाचल सरकार 1967 मू कुल्लू र
 दगराव न राजरीय त्योहार र रूप में मनाव । 1970 में हमानिया री नतर
 मण्डनी पली वार दण में शामिल हुई । ज्या पाछ ता अनव दगा रा कलाकार
 दण उत्तमव म भाग लेवण ताद वरावर अठ आव । अतर्राष्ट्रीय भाई चारे अर
 सद्भाव रो ह मू आछा और कोई रासत नी हव । हिमाचली महिलावा काम
 मू पाया रम बिरगा गाभा, गादी रा बट्ट भात गणा अर रसमो रमाल माथ
 बाध र हरग उमाव मू दण में भाग लेव । कुल्लू घाटी में मिनग्य जरी रो पट्टी
 गाडी लाल गाठ टापी पेर । आ मगमन मू वण्याही हव । अठ रा लाग दूजा
 पहाडी लाग राद भाळा भाळा अर मोठा घोलण वाला हव । ठेठ ग्रामोण
 आचल रा लाग ता गामा शर्मोला अर गवोरी हुरे । आ वात माचो है वं जठ
 र माग पर कुदरत रा प्रभाव घणा है अर जठे सम्य रवावण आळी ममाग
 थयग्या रा छद्म नी पूग्या है वठ रा नाग महन सरन मुगी अर तनावहीन
 स्वाभाविक जीवन जीव है ।

कुल्लू र दगराव रा दो आवपण है । एक तोट रो घामिक अर
 धार्मिक मरूप अर दूजा री सामृत्तिक आयोजन । दगराव माथ घामिक
 जाग उमाव अर महिमा मू मण्डा क्षेत्र प्रेरित दीग । सम्पूरण कुल्लू घाटी में
 पती घानी-बही पहाटघा रा नाग आप आपर नाक दवतावा री मुग्गा न
 रथा अर पातक्या में गटा र कुल्लू र परमिड रपुनाथजी र मन्िर म दीग

9765
 13.3.88

देवतावा री घाटा-कुल्लू म

दमाया अर सुरहृद्या री आवाज र वीर पावन हरजस गावत लाव । चरु दिसावा मू लोग नद्या र मानिद उमडता कुल्लू र अथाह मानव समुद्र में मिलता दीय । पुराणे दिना में ठोड ठोड सू 360 देवता घाटी में आवता पण आज आ री मग्ग्या 80 र अडे गड रयगी है । इण अवमर पर रघुनाय मन्त्रि सू ठाबुरजी री प्रतिमा री रथ यात्रा नीसर । घाटी र देवतावा में विजली महादेव रे मंदिर रो ग्गसो महत्व है । घणी ऊचाई माथ पहाड री ऊची चोने माथ वण्योडे वण मंदिर पर विरग्ग्या में हर साल एव दो बार विजली शिवलिंग माथ पड अर लिंग रा किरवा किरवा टूट टूट'र विग्नर जाव । इणा न भेळा कर र पुजारी माग्गन अर मत्त म आ न पाछा जोड'र मूर्ति री भळ प्रतिष्ठा कर । इण भाति फेर औ चक्कर चालतो रव ।

इण उत्सव आयोजन र कारण कुल्लू देवतावा री घाटी नाम स जाणी ज । पण घाटी रा रवणिया आम लोग ई इणा देवतावा री साची सामथ न जाण । ज देवता स्वभाव जर आदता मै भिनग्ग्या सू इ तगडे बदलते सुभाव आळा हुव । व विगड ता विरग्ग्या सू सगळी घाटया न पाणी सू तिरिया मिरिया कर देव अर गाव गळया में आणा जाणी वद हू जाव । व हरस तो नीळ आभ न खुली उजळी घूप री चमक अर उप्मा सू मानखे अर वनस्पति न चमका देव । व चाव तो वरफ माथ सूरज री झिलमिल किरणा स सोनतिया आभा री चमक छिटका देव । व रिसाणा हुव तो नदी नाळा री पाणी पुळा मकाना भवेश्या न ई नइ मानते तक न डूयो देव । व शात हुव ता धीमा गीत गाता वादळिया ठडी पौन री लहरा विलेरता सवने हरखाता किया घाटी ऊपर सू आइस्ता आइस्ता निकळ जाव—औ सब कुल्लू घाटी रा देवता ई जाण ।

दशराव री त्योहार कुल्लू र विशाल घालपुर मैदान म मनाईज । साय समय सू प्रारम्भ हू र प्राय सम्पूण रात्रि नत्य सगीत रो सुरगो वायक्रम चालतो रव । मैदान मै इ एव उचो विशाल चव्तरौ वण्योडो है निण माथ

सकड़ू कलाकार एक साथ आपरो कायब्रम पश कर सक । खासा ऊचो हूणे सू लाखू लोग र दखणे में भी कोई अडचन नी आव । लोक नृत्य अर संगीत री बतरणी बवती सी लाग । वास्तव में इण उत्सव नै देखणो अनूठो अनुभव है जक न आज तक भी में भूल नी सक्या हूँ ।

कुल्लू री प्राकृतिक शोभा जित्ती मोवणी ह अठे ७ मानखे अर विशेष रूप सू अठ री नारी जाति ने भी उतणो ही फुटरापो कुदरत र वरदान रूप में मिल्यो है । स्यात औ ई कारण ही क पाण्डव आपरे बनवास र दिना में जद अठ निवास बियो तो भीम अठे री हिडिम्बा नाम री स्त्री सू मोह करण लाग्यो । हिडिम्बा री मदद सू भीम एक आदमखोर राक्स रो अत करयो । इण ठाम ई हिडिम्बा सू भीम र घटालच नाम र पुत्र रो जम हुयो, जवो बाद में महाभारत र परम जूयारू वीरा में गिणीज्यो । पहाड री दरिश्चमी अर कमठ मातावा ई इसी वीर प्रसविणी ह सक आ बात आज भी प्रमाणित है । देश री सना म उत्सग री भावना सू ओत प्रोत हा'र मातभूमि री मेवा करण वाला गढवाली कुमायुनी गोरखा, डोगरा आद पहाडी रणबाकुरा न आवी दुनिया में कुण जाण कोनी ।

कुल्लू र दशन भ्रमण रै बाद मनाळी खातर बस सू रवाना हुया । कुल्लू मनाली भारत माघ करीब आघे रास्ते में नगर नाम रो छोटो अर सुदर पहाडी कस्बो आव । अठ एक छोटो सो पुराणो गढ भी बण्योडो है । आजदी सू पला औ स्यान दस पुस्ता ताई कुल्लू रै राजावा री राजधानी रई ही । उण बेला पहाडी भावा री तुलना में राजधानी री वस्ती हूण कारण इण रो ओ नाम पडयो हूसी । गढ रो निरमाण राजा सिद्धासह करायो । नगर री प्राकृतिक सुदरता इत्ती मोवणी है क प्रसिद्ध रूसी चित्रकार रौरिक अठ ई आपरो स्थाई निवास वणा लियो । उणा रे विश्व विख्यात चित्रा री आट पलरी नगर में ई है । केई चित्र तो अत्यन्त विशाल अर इस्सा कलात्मक है क अनमान गिणीज । हिमालय आदि काज सू अणगिणत विद्वाना दाशनिदा, तबविदा, कवि अर मनीषिया न आपरे कानी आकर्षित करतो रयो है ।

कपिल अर वणाद नारद अर व्यास, वशिष्ठ अर अगस्त्य हैलरी अर रोखि देग विदेश रा न जाणे कतरा विगिष्ट ब्यक्ति अर कलाकार जीवन भर हिमालय सू सुद आप ई प्रेरणा लेता नी रया है वल्कि आगत री मानव पीठ्या न प्रेरणा रा अनुपम सदेश भी देवता रया है। रोखि गलरी रा बेजोड चित्र निरग र उतराद दिशा म मनाली कानी रवाना हुया।

नगर सू 28 किलो मीटर कुल्लू घाटी रो सबसू सुन्दर अर नायाब कस्बो मनाली है। इण न पहाडा रो राणी कव। अठ री नसगिब' शोभा माय रीष'र देस विदेस रा मोकळा पयटक कुदरत र अचरज पूण निजरा रो आण'द लेवणन अठ दूक। देग रा प्रधान मंत्री जवहार लाल नेहरू आपरे काय काल में दो बार अर श्रीमती इद्रा गाधी एक बार छुट्टा मनावणने अर भागम भाग व्यस्त जीवन सू आराम अर शांति पावणन इण गात सुरगी जाम्या आ र ठरया हा। मनाली में सेव अर खुशबू दार प्लम सू लदमा वागीचा दूर-तार्ई फल्मोडा दीस। व्यास नदी रो कळकळ प्रवाह ऊचा वरफ सू ढक्या पहाड, सीधा सादा भोळा मिनख अर सगळ वातवरण मे एकात नीरवता इण ठाम न अलीकिक सुन्दर अर सौम्य बणा देव है। कल्लू तार्ई आवता घाटी खाती चौडी हू जाव पण मनाली में आ र सक्डी बण जाव। मनाली में हिडिम्बा देवी रो ढगरी मंदिर इतिहास अर स्थापत्य दोनो दीठ सू बीत महत्वपूर्ण है। मंदिर देवदार री लकडी सू बण्योडो है। बडा बडा शहतीरा सू पगाडा री शली रो चार तल्ला छत में जी मंदिर निमित्त है। मंदिर र कने देवदार रा इसा विशाल अर प्राचीन रूख है जका री उमर हजार साल बनाव। मनाली रो बाजार छोटी हुता कवा भी सोवणो है। वस्ती र बीच में दूरिष्ट बगलो है अर बीरे सामे खुलो चौडो मैदान है। मनालो र बाजार में सौ एक दूकात हूसी। खाणे पीणे रा होटल अर कलाकारी व दस्तकारी री जिंसा री दूकाना बेसी है। बीकानेर रे गगाशहर कस्बे रो एक व्यापारी बठ होटल गोल राखी है। जापरे देग अर क्षेत्र र म्हा लोगा सू मिल र बीन घणो हरम हुयो।

मनाली में चायपाणी र बाद वशिष्ट आश्रम देखण ने पूया । आश्रम
मनाली सू 2 कि मी उत्तर म स्थित है । अठ ताई सडक रो रास्तो है । ई
जाग्या पिरामिड र आकार रा वशिष्ट ऋषि र नाम पर एक जूणा मंदिर
है । अठ भी गरम पाणी रा स्रोत है । गधक युक्त इण र जळ में स्नान करणे सू
चरम रोग मिटै । इण वारण अठ खासी तादाद में चरम रोगी स्नान छातर
पूच । थडालु दान दातावा खात माथ 5 6 स्नान पर वणवा दिया है । दिन
भर खाता माथ आण जाणे वाळा रो मळो मो मड्या रवे । आस पास रा
हर्या भरयो वातावरण आश्रम री सुदरता न ओर बढ़ावै । वशिष्ट सू 5
मीठ दूर उत्तर पूव में बोटी नाम री जाग्या है । अठ ताई भी सडक पूग ।
आग पदल ट्रकिंग मारग सू सलानी रोहताग दरे री चढाई कर । रोहताग
पवत री चढाई बौत दारी है । दरें री जाग्या भी इण पवत री ऊचाई दग
हजार फुट र नेडे है । मई जून री गरमी रे दिना में भी ओ परवत बरफ री
मोटी तह सू ढक्का रवे । अति मक्की पहाडी पगडडी सू वट्टो पड । पगडडी
पर ऊपर री बरफ र वारण तिसरण हू जाव जब मू चढाई करत वगत नीचे
गहरा खाडा में पडण रा डर लागता रवे । म्हारे साध्या में भी एक सज्जन
डर र एक जा या बठग्या हा । हिम्मत बधाने अर हाथ झाल'र चालणे मू नीठ
आग जावण ताई राजी हुया । रोहताग दरें र पार लाहौत आद जावण आळी
पक्की मडक रो रास्तो भी है । पण आ दिना भी इण मडक माथे 10 12 फुट
ऊची बरफ जम्याडी ही । नेई जाग्या सेना रा बुळटोजर बरफ हटाणे रे काम
म तगायोडा हा । रोहताग दरें री सबसू उच्ची जाग्या एक पहाडी तडवे
चाय काफी री दुकान एक तम्बू में लगा राखी हो । ऊचाई घणी हूणे सू अठ
ठड बौत तज ही अर हवा चातणे सू पाम सबन कम्पकपी छुटण जागगी ।
तम्बू में बठ र काफी पीण मू गरीर मे थोडी उधमा अर फुर्ती आइ । दरें र
सामण पहाडी टनान माथ बरफ जम्योटी हूणे सू बटी उमर रा लोग भी
दाबरा ल'क बरफ पर तिसळन री क्रिडा री आण'द लेवण लाग्या । रोहताग
परवत मू रोहित प्रपात रो निजारो भी फूटरो दीस । सास्त्रा में जकी गधक

अर किन्नर जात्या रो उल्लेख है उण रो निवास स्पिती अर किन्नोर रोहताग र दूज पास है । आज भी अठै रा लोग वीत सुदर अर लोक नत्थ आद में प्रवीण है । प्राचीन समय में देव लोक अर देव जात्या र नाम सू प्रसिद्ध आ भूमि साच ही देवतावा रो घाटी है । इण पावन भूमी रा दशन कर म्हे सब असीम आनन्द में निमग्न हूयग्या । यात्रा रो स्मृति आज भी सगळा नै हरख सू विभोर कर देवे है ।

दूध अर शहद री घाटी

प्राकृतिक सुपमा री दाठ सू भारत पर कुदरत री जित्ती किरपा है उत्ती शायद ही कोई दूज एकल देश माथ होसी। पवतराज हिमालय री विहगम शाभा तो जगत बिख्यात है। हिमालय आपरे विविध रूपा मे प्रकृति प्रेमिया न सदा आकर्षित अर प्रेरित कियो है। काकेसस सू कराकुरम ताई फली साढे तीन हजार कि मी लम्बी पवत श्रृखलावा म नद्या, हरी भरी घाटया, स्रोता री तो गिणती ही काई है। बडा बडा हिमनद, अगम्य पवत शिखर अर अविस्मरणीय अलौकिक दश्या री भी कमी नहीं है। इण सु दर पवता री घाटया मे अनक सुदर बस्तिया अर वाद्या वस्योडी है। हिमाचल प्रदेश र उत्तर पश्चिमी भाग मे इसी ही एक अग्निदय सौदय री जाग्या है चम्बा पवतीय क्षेत्र। जिके न दुधारू पशुआ री बोहतायत अर घणे जगळात मे खूब शहद हूण रें कारण दूध अर शहद री घाटी भी बोल। इण क्षेत्र र प्राचीन मदिरा अर धार्मिक स्थला, झीला, नदिया अर नसर्गिक स्थाना री यात्रा ताइ मित्रा सागे भ्रमण रो कार्यक्रम बणा र रेल मारग सू पठानकोट पूग्या।

पठानकोट सू बस द्वारा डलहौजी खातर प्रात 6 30 पर रवाना हुया। रात्रि पठानकोट र आरक्षित विश्राम घर मे विताई ही। प्राय पाच छ घटा लगातार बिरखा र बाद भोर मे मौसम खुलग्यो हो। बिरखा पछे पहाडा रो निजारो अर रूप सौदय मे और निखार आयग्यो। सगळे रस्ते वादळबाई रैयी अर हवा मे शीतलता अर मिट्टी री सीधी सुवास सू चित्त उल्लास सू भर्यो हो। आड तिरछ घेरदार पहाडी मारग मे चाकल, धारा,

दुनरा आद वस्त्या म ठहरता 80 कि मी री दूरी 4 घटा गू ताई वसा
 म पूरी वर ।। वज्या मू पला डलहोजी पूग्या । समुद्र तट गू 2036 मीटर
 ऊताई पर पाच पहाडघा पर वगी आ सात ऐकात अर अनाम गीत्य मू
 युक्त नगरी साच ही पहाडा री राणी कलायण जाग है । वेई मामला म दूजी
 नगरया गू आ घणी आछी है । धोळाघार पवत माळा र वारले ढाल माथ
 वसी ण नगरी म घणी वनस्पति सुगवणा गीतल वातावरण अर गर सपाट
 रा अनुपम सुंदर प्राकृतिक स्थल है । अठ प्रत्यय पहाडी र बीचाबीच वस्ती
 है अर गोलार्द म चारू मर चकार वाटती सडक है । इण वसावट गू भी
 डलहोजी री सुंदरता वढगी है । वस स्टड र वनई सुंदर बाजार है, एक
 स्वटिंग हाल है जब रो फग लकडी री वण्याडो है । अठ किराय रा पहिय
 आळा जूता स्कॅटस मिल । आने पर र युवा गिलाडी अनव वरतव वरता
 हवा में तिरता सा लाग । इण त्रिडा न देखणे म आनंद आव । इण पहाडी
 पर एक चौराह रा नाम जी पी आ क्वायर है । वठ भी चाखो छाटो सा
 बाजार है । अठ ऊनी वस्त्र बीत जाछा अर सस्ता मिल । म्हारे मासू नेई
 जणा ऊनी शाल सरीदया । इण चौराह गू दो कि मी दूर अजीतसिंह सडक
 सू पचपुला नाम री जाग्या पूच्या । इण स्थान पर ऊचाई सू पडण आळो वडा
 झरणो है जब रो दुग्ध धवल जळ बेई धारावा में बहतो आवपक लाग । अठ
 तीन मेर पहाडघा रो घेरा होणे सू प्राकृतिक दृश्य अत्यंत सुरम्य दीख । इण
 झरने र पाणी म सब जणा स्नान रो आनंद उठायो । पचपुला पर शहीद
 भगतसिंह र चाचा अजीतसिंह री समाधि वा री याद म वणवायाडी है ।
 जजीत सिंह भी आजादी री लडाई म आपरो वलिदान दियो । जठरो दृश्य
 थोडे अशा में देरादून र प्रसिद्ध सहस्रधारा नामक जाग्या सू मिल । जो स्थान
 गोष्ठी अर सर सपाटे री आदश जाग्या है । जी पी ओ चौराहे सू साढे आठ
 कि मी दूर काला टोप नाम री पिवनिक री जाग्या है । सपन जगळ री
 वनस्पति र बीच अठ सूरज री किरणा भी मुश्किल सू पूग अर दिन में भी
 अधेरो रेवे इण कारण ही इरो औ नाम पडजो है । सिजा ताई घूम घाम र
 वापस धूथ हास्टल र आपणे जावास में पाछा पूग्या । भाजन उपरात बाजार

में धूमण न गया। वातचीत सू मालूम हुयो कि डलहौजी 5 स्वबायर मील र धेरे में वस्यो है। इण री पाचू पहाड्या रा नाम इण भात है—वलून, कथलोग, पोत्रियन, टेहरा अर बकरोता जिवा री ऊचाई 5000 फिट सू लगार 7800 फिट ताई है। ऊची पहाड्या सू डलहौजी र आस पास री घाट्या रो दश्य मन मोवणो लाग। अठ सू रावी अर व्यास ई नइ खासी दूरी पर आकाश साफ हूणे सू चिनाव नदी भी बहती दोख। डलहौजी वीत साफ सुधरी जगह भी है। सैलाया री तावड तोड भीड भी अठ नी है अर दूजा पहडा सू आ कम खर्चीली भी है।

आगले दिन सुबह 7 बज्या हिमाचल र आछे सोवणे सरगाह खजिहार वास्त पदल रवाना हुया। डलहौजी सू खजिहार 22 कि मी दूर है। सम्पूण मारग चढाई उतराई आळो है। पगडडी र मारग 7 कई जाग्या पक्की सडक भी ररते मे मिले। मारग में देवदार अर चिनार रा घणा वृक्ष तो हं ही मकडू तरहू रा दूजा पेड भी मिल। चीड फरास, सफेदो, धोक, टीमरू, बट, पिलखण आदि विशाल वृक्षा सू हर्यो भर्यो औ पदल रास्तो दुनिया र वेहतरिन पदाति यात्रा मारगा माय सू एक गिणीज। पीठ माथ पिट्टू अर हाथ में लाठी थाम्या अलमस्त लोमा री टोळी साग दीन दुनिया न भूल र मौज में गाता बठता, खाता थवा इण वेळा सब ठाठ घरयो रह जाव लो जद लाद चल लो विणजारो पक्तियो रो अथ स्वानुभूति सू ई समझ सक्या। करीब 5 घटा में 12 बज्या र नजीक जद खजिहार पूग्या तो लाग्यो क कुदरत र सबसू चोखे बगीच में पूचग्या। चारू मेर चादी री सी बफ सू डक्या पवत शिखर। वा र ऊपर अणगिणत रगा रूपा में वादळा रो मडाव। पवत री घाट्या री कई परता में सिलसिलेवार एक रग अर एक ऊचाई रा चिनार रा हवा में झूमता मचळता हर्या वृक्ष, बीच मे प्यालेनुमा डलवा तम्बा चौडो विशाल दूब मण्डित सपाट मदान, मदान र ठीक बीचोबीच एक छोटी मुदर आकपक झील अर झील में तरतो गपू दाई एक स्थल खण्ड। सब कुछ इतणो नियोजित अर कलात्मक ढग सू कुदरती वण्योडो है क अचरज सू यात्री भी तुलसीदास जी

र शब्ददा में कवण लाग केशव वही न जाय का कहिय रग रेख विन लिखा
 चितरे समुझि मनहि मन रहिय ।' वास्तव में आ आलौकिक रचना क्या
 लौकिक रचनाकारा र बळ बूते री बात है ? रौरिक जिसा जग विख्यात
 चिनकार इण हिमालय री जिण रहस्यमय चेतन सत्ता सू उत्प्रेरित हुया । उण
 री वास्तविक झलक देख'र मन मस्तक आदर अर नमण सू झुकग्यो । खजि
 हार में शिव रो एक छोटी मदिर राजकीय गस्ट हाउस अर दा चार ग्रामीण
 दूकाना है । लोग भोळा आत्मीय अर धमप्राण है । बस सू वापस 7 वज्या
 ताई डलहौजी जा ढूक्या । अगले दिन प्रात चम्बा रो वायक्रम बणायो ।

चम्बा डलहौजी सू 50 कि मी र लगभग है । नदी, झरना, झीला
 मदिरा जाद री दीठ सू बडो रमणीक स्थान है । ब्यास नदी र ठीक पूर्वी तट
 माथ एक मील री चौडी पटटी माथ बस्यो चम्बा नगर खूब सुदर दीख ।
 नदी सू उपर बस्ती र बीच एक विशाल मदान है । चम्बा रा स उत्सव
 त्यौहार आयोजन इण मदान में हुबै । मैदान र दूज पास सडक सू पर सरकारी
 कार्यालय आद अर आ र तार सुदर राजमहल । बाजू में इटर कालेज बाजार,
 अठ रा प्रसिद्ध मदिर जर खपरल अर लकडी री ढलवा छात आळा पहाडी
 मवान । बनी खेत जका उलहौजी सू आठ कि मी आग है, सू देवदार र पेडा
 रो घणो जगळ अर बीच बीच में ब्यास नदी ठेठ चम्बा तक साथ साथ पूग ।
 चम्बा में भ्हे आय समाज मदिर में रक्या । चिपता इ चम्बा रा प्राचीन मदिर
 है । इणा में केई तो दवसी शताब्दी रा बण्योडा है । आ में लक्ष्मी नारायण
 मन्दि अर हरिराय मदिर स में जूणा है । आ मदिर र पत्थरा पर खुदाई अर
 उभरयाडो नक्काशी रो आछो काम है । इण मदिरा र स्थापत्य सू चम्बा र
 गौरव पूण अतीत री जाण कारी मिल ।

चम्बा रो भूरीसिंह सग्रहालय भां सलाण्या र आकषण रो केन्द्र है ।
 चम्बा री सांस्कृतिक धरावर अठ सुरक्षित अर सग्रहीत है । कागडा अर
 बसोहली शली रा चित्रा रो अमूल्य सग्रह अठ है । कागडा शली रा पिक्चर
 पोस्टकार्ड अठ बिक भी है । हस्त कला सम्बन्धी सामग्री भी अठ प्रदशनी दाइ

राखीज। प्राचीन जीवन शली री प्रामाणिक जाणकारी आ चित्रा सू मिल। रीति रिवाज, वस्त्र परिधान, धार्मिक आयोजन, अलकार, वाहन आद भात भात र सब विषया रा चित्र है।

चम्पा में म्हा लोगा न एक विशेष त्यौहार—न देखणे रो मौका मिल्यो। उण दिन अठ मिजर रो मेळो लाग्योडो हो। इण मेळे रो सम्बन्ध खेती अर उपज सू है। दूजा प्रदेशा दाई अठ रा खेतिहर भी मजिर र त्यौहार माथ नत्य संगीत अर दूजा सांस्कृतिक आयोजन बडी घूम घाम सू करै। चम्बा र आसपास र नावा रा पहाडी लोग रग विरगा पारम्पारिक वस्त्र पर'र हजरू री सग्या मै अठ पूच। एक वडो ऊचो चबूतरो कलाकारा र वठण अर काय क्रम प्रसरण ताइ मदान मै बण्यो है। मदान मे दिन म विशाल मेळो भी लागे जिकै में हिमाचल सरकार री तरफ सू विकास कार्या री अतक विभागा री प्रदक्षणा भी हुव। रात में रगीन रोश्या री व्यवस्था हुव।

इण में भाग लेवण वास्त हिमाचल प्रदेश रा रेडियो कलाकार ई नई पजाव अर दिल्ली हरियाणा रा भी कलाकार आव। कलाकार लोग प्राय अगरखे नुमा चोगा अर सकडो पजामो परे अर माथे माथ व रेशमी रूमाल बाधे। इण रूमाल रो नाम भी चम्बा रूमाल' ई है। रात्रि म गीत, भजन, ऐकाकी प्रहसन, कव्वाली, नत्य, वाद्य संगीत जाद रो कार्यक्रम 6 वज्या शुरू हुयो जो प्राय 4 बजा ताई लगातार चालतो रयो अर हजरू लोग बी न-देखण मुणण रो आणद उठाया। कायक्रम री भाषा हिंदी ही थी। पहाडी जीवन अर लोक संस्कृति रा अनेक रूप देखण न मिल्या। औ अनूठी आयोजन आज तक याद है। हालाकि आगली भोर में ही घमशाला वास्ते खाना हूणो हो पण आयोजन रा आनंद अत तक लेणे रो लोभ नी छोड सक्या।

दूजे दिन वस सू घमशाला ताई चाल्या। चम्बा सू घमशाला 150 कि मी दूर है। घम शाला धौलाघार पर्वत शृंखला में ई स्थित है। औ कागडा जिले रो छोटी पण सुंदर प्राकृतिक पहाडी सरसाह है। इणन वस्या 125 वरस हुया है, पण 1905 में अठ भीषण भूचाल आयो अर इ न प्राय दूवारा ई

बसायो है। आ भी शात ऐवात पहाडी जाग्या है। समुद्र तल सू 1800 मी ऊचो है। धमशाला रा दो हिस्सा है—'अपर धमशाला' अर 'लोवर धमशाला' लोवर सू अपर हिस्सो एक कि मी दूर है। लोवर री ऊचाई 1350 मी है। सरकारी दपतर अर दूकाना निचले हिस्से में इ बेसी है। काट रोड सू दोनू हिस्सा जुडया है। ऊपरी हिस्से सू नीचले ताई बीमें केई जाग्या पगोधिया रा रास्ता बणायोडा है। अपर धमशाला र पीठ कानी घोळाधार पवत री ऊभी सडी चट्टान है। अठ भी देवदार, चिनार चीड आद रा धना जगल है। धीलाधार री केई चोटया करीब छ महीना बरफ सू ढकी रव। ऊचाई सू कागडा घाटी अर व्यास नदी रो भी मोवणो हश्य दीख। धमशाला रे मक्लोड गज नामक स्थान पर दलाई लम्मा रो भव्य मठ है। तिव्वत पर चीन रे कजे रे बाद बौद्ध धम रा सर्वोच्च गुरु भारत में शरण मागी अर काने धमशाला म बसा दियो गयो। अठे भागसू नाथ रो मंदिर अर एक सुदर झरणो भी है। झरणे रो पाणी कुड में भेल्लो हुव। अठ स्नान अर मंदिर दशन रो घणी धार्मिक मानता है। फरसथ गज र जगळ में सेंट जान रो गिरजाघर है। इण में लाड एलगिन री कब्रगाह है। धमशाला र छावनी क्षेत्र कन डल नाम री सुदर बडो झील है। अठ सितम्बर महिन में गददी जाति अर अय पहाडी लोगा रो प्रसिद्ध वार्षिक भेल्लो ला।। शात सुदर अर स्वास्थ बघक पहाडा में धमशाला रो महत्वपूर्ण स्थान है। धमशाला में ठहरया कौनी। रात्रि विश्राम कागडा में कियो।

कागडा धमशाला सू 26 कि मी दूर है। औ कद पुराणो रजवाडो हो। जिण र सरक्षण में शिल्प स्थापत्य, अर चित्रकला रो आछो विकास हुयो। चित्रकला री अठ री विनिष्ट शली न कागडा चित्र शली कव। मध्य काल में अठ बीत सम्भन मंदिर हा। केई मुसलमान शासका अठ र मंदिर रा रत्नाभूषण लूटण ताई इण क्षेत्र पर सनिक आक्रमण भी कर्यो। अठ अम्बा जी रो एक प्रसिद्ध मंदिर त्रिजेश्वारी देवी मंदिर नाम स बज। सफेद सगमरमर रो भय मंदिर है अर देवी री भावपूर्ण प्रतिभा है। मंदिर रो चौक विशाल

है। मंदिर की परिक्रमा रा आहूता भी विशाल है अर लाल पत्थर स बण्यो है। मंदिर र कनै साम ई धमशाला है, बी मैं आधास कियो। सुबह चामुडा मंदिर रा दशनि कर्या। कनै ही सुदर शीतळ क्षरणो बवे। वा मैं स्नान करया। ठडा जल काटतो सौ लाग्यो, जाणे खून जम जासी। दशन भ्रमण ताई कागडा र ध्वस्त पुराणे किल मँ भी गया। कवे कै 18 वी सदी मँ अठ र राजा ससार चढ कटौच र समय कागडा खासी उ नति करी। उण वेळा ई जठ ललित कलावा रो भी विकास हुयो। राजा र गद्दी जाति रो एक गडेरिया युवती सू प्रेम कहानी रा गीत तो कागडा मँ आज ताई गाईज। कागडा रो ऊचाई कम हं पण हरियाळी अर बनस्पति रो कमी नी है अर घाटी सुदर है।

कागडा सू बस द्वारा ज्वालामुखी रोड 27 कि मि दूर है। अठ सू पश्चिम कानी 7-8 कि मी दूर ज्वागामुखी रा परसिध मंदिर है। जाजकल मदिन र सामँ केई धमशालावा अर दूजा छाटा माटा अनेक मंदिर बणग्या है। सम्पूण पजाब, हिमाचल हरियाणा अर जम्मू क्षेत्र मँ ज्वालामुखी रो घणी मानता हूणे मू अठ सैकड यात्री रोज आव। जठ केई धमशालावा बीत बडी अर आधुनिक ढग रो बण्याडी हं। अग्रवाल धमशाला मँ एक साथ केई हजार आदम्या र ठंहरण रो व्यवस्था है। अठ कमरा रो सरया भी 300 नडे है। ग्रामदा अर हाल अर प्रागण इण सू अलायदा है। इण धमशाला मँ ई म्है रुव्या। मंदिर रो पीठ कानी पश्चिम म पवत है। दर असल इण पवत रो चट्टाना सू ई केई जाग्या जग्नि रो ज्वाला निकळ। मंदिर दो तत्ला म बण्यो है। दायू मँ आनि ज्वाल जाप बरस भर निकळती रव। मंदिर सगमर भर रो बण्यो है। आग सास बडो चौक है। नवरात र दिना अठ बडो मळो लाग। वा भी कवत है क स्वय सन्नाट अकबर जठ पुत्रोत्पत्ति रो कामना सू पदल आया हो। मंदिर र बाजू सू डूगरी माथ जा र नीचे बाजार धमशाला आद रो सुदर हश्य दीख। मंदिर र बारे जलाशय है, दशनार्थी इण म स्नान करया पछ मंदिर मँ जाव। ज्या बदरीनाथ अर वशिष्ठ आश्रम आद धामा मँ गम स्रोत रो धारावा र प्रवाह न देत विस्मय अर आह्लाद हुव बी सू भी

धनो इण स्वयभू अग्नि ज्वाल न देग'र हूव । डूगर माथ करीब 400 फुट ऊपर अजुन रो मंदिर है । अजुन रो मन्दिर गायद ही दूजी जाग्या देखणे म आर्थ । केव क अज्ञात वास रं दिना अजुन अठं लुक'र बठो हो । उण रो याद में इ रो निरमाण ह्यो है । केई दूजी जूणी मृत्या अठ है । व प्राचीन तो है, पण कलात्मक नी है ।

ज्वालामुखी सू बस द्वारा चितपुरणी देवी र स्थल र दशना ताइ पूग्या । ज्वाला मुखी सू आ जाग्या 110 कि मी र करीब है । ई न सकट माचन या दुख निवारण देवी र रूप में मानीज । प्रेत सकट या भूत बाधा में लिप्त लोगा न अठ लाव । तीव्र आस्था अर सकल्प र कारण ई सही कई लोग अठ सू ठीक भी हू र जाव । इण वजह सू अठ इसा व्यक्ति आवता ई रवे । म्हे वठं पूग्या जदे एक महिला सन्निपात में आयगी ही । मंदिर में धाक देवती देवती ही मूर्च्छित हो'र पडगी । पुजारी मन्त्रो चारण र साथ मोर पख सू वं रो झाडा करता रयो । थोडी ताळम शायद स्वत वा स्वाभाविक स्थिति में आगी । मंदिर छाठो पण भव्य है । चेहरो सगमरमर सू वण्यो है । आगण काले अर सफेद पत्थरा री चौबया सू । मंदिर र बाजू में एक बृक्ष है बी री डाळा माथ मनौती रा सकडू डोरा अर लाल वस्त्र री लीरया बाघोडी रवे । मंदिर र वन ई गुप्त स्रोत है जक र आगे एक तलाब सो वणा दियो है । इण में चार फुट सू बेसी पाणी कोनी रवे । इसू ऊपर रो पाणी दूज कानी निवास सू आगे वह जाव । इण स्वच्छ ठडे जल सू स्नान कर भक्त जन मंदिर दशन अर मनौती आद रं वास्ते जाव । चितपुरणी में पहाड प्राय समाप्त सा ही है । भूमी समतल ही है । हिमाचल शृङ्खला रं निचले सिरे माथ ई ओ स्थान है ।

इण तरा उत्तर पश्चिमी हिमालय र अनूठ प्राकृतिक सौंदर्य र स्थला अर प्राचीन मंदिरा र दशन सू आनंद अर हरख रो लाभ लेता हाशियार पुर आया । अठ सू जालधर लुधियाना अम्बला दिल्ली हुता वापस घर पूग्या ।

उत्तराखण्ड रा तीरथ

प्रकृति री लूठो मदिर हिमाळय सत्, सुदर और शिव रो घणे अर्था अर स्तरा में उदघाटन करतो दीख है। आमै तव माथो ताण्या खडी ऊजळी बरफ सू ढक्कयोडी पहाडा री चोटया हिमनद रा वाहळा, हरियावळ सू लदया वस्या ऊचा डूगर, घाटया रा सुदर निजारा अर वय खेतर र जिनवरा रो खुल्लो बे रोक् टोक घूमणा आस्या नै तो फूटरो लाग ही है गैर अर्था मे मन में सिरष्टी से सिरजणहार ताई सरधा अर जिनासा रो भाव भी जगाव है। औ ई कारण है क प्राचीन ऋषि मुनिया सू ले'र आज रा सैलाणी ताई हिमाळय रो नाम सुणता इ आणद अर प्रेरणा सू भर जाव है। हिमाळय रै उत्तराखण्ड खेतर मे सक्डो ई तीरथ है जका मे हेमकुण्ड, बद्रीनाथ अर बेदारनाथ तो स सू घणा मानीता तीरथ है। इण घामा री जातरा र कायत्रम वणणे सू दिल मे घणे उमाव रो उमडणो सोभाविक ही हो।

बद्रीनाथ री जातरा ऋषिकेश सू शुरू हुव। देवनदी गगा र सारै सडक मारग सू बद्रीनाथ ऋषिकेश सू 321 कि भी दूर है। रास्ते मे देव प्रयाग, रुद्र प्रयाग करण प्रयाग अर विष्णु प्रयाग जिंसा बडा बडा तीरथ पड। गगा नदी मे भागीरथी, अलकनदा, मदाकिनी घवळ गगा आद अनेक नदमा जठे जठ मिल उण ठामा मे सगम माथ महादेव शिव रा सोवणा मदिर वणायोडा है। यात्रा र ठरण वास्ते मोकळी धमशाळावा भी उण सगळे तीर्था मे वण्योडी है। विष्णु प्रयाग सू चौडी पला जोशीमठ नामक जाग्या है। आदि शंकराचार्य अठ एक मठ री थावणा करी ही। औजू भी दक्षिण रा नम्बुद्री ब्राह्मण इण मठ रा स्वाभी है। सरदी र दिना मे बद्रीधाम रा पुजारी अठ ई

वास करे। मई र महिने बढीधाम रा पट फेर खुलणे सू अ पूजा रातर पाछा ऊपर चल्या जाव। विष्णु प्रयाग सू आगे अलवनदा र सार एक बस्ती पढ गोविंद घाट। जठ सू एव पदल मारग हेमकुण्ड अर पूला री घाटी बानी जाव जीर मूल सडक मारग सीधो बढीनाथ जाव।

ऋषिकेप सू गोविंद घाट री यात्रा बस सू पूरी कर आगे हेमकुण्ड री जातरा पदल बरण मारू सगळे साध्या समेत वायव्रम बणायो। सामान असबाव राखणे वास्ते अठ एव गुरद्वारो अर चोमी नई घमशाला बणायोडी है। यात्र्या न गुरद्वारे री तरफ सू चाय नास्तो अर भोजन नि शुल्क मिल। धार्मिक भाव सू भोजन बणाणे परोसने जर बरतन साफ बरण म यात्री भी आपणी सवा देणी पुण्य री काम मान। 5 अगस्त री भोर मे आपणो सामान गुरद्वारे रे अमानती सामान घर म जमा करा र म्हारो दळ हेमकुण्ड ताइ टुरयो। गोविंद घाट मू घाघरिया 12.5 कि मी री दूरी माथ उत्तर पूव मे बस्योडो है। अलवनदा री एव धारा बढीनाथ बानी सू पहाड रो चक्कर काट र आव दूसरी हेमकुण्ड री परिव्रमा कर उत्तर सू आव। इण सुरग सगम र पछमाद गोविंदघाट बस्योडो है। गोविंदघाट में अलवनदा माथ लक्ष्मण झूल दाइ लो री बटयोडी रस्या रो अर लकडी र माटा पाट्टा रो एव बडो झूलतो पुळ पारकर पूरब दिशा बानी ऊभी चढाई शुरू हुब जकी 2 कि मी दूर पूला गाव तक बराबर ऊंची चलती जाव। म्हे 6 बजी दिनुगे चाल पड्या हा। उण बेळा ठड भी ही अर मन मे यात्रा रो उमाव भी। दूजा सिख यात्रा र साथ सत्यनाम वाहे गुरु अर 'जो बोले सो निहाल आद वाण्या बोलता आग बढ्या। पहाडी चढाई र कारण थोडी देर म ही सास धोकणी दाई चालण लागमी पग धाकण लाग्या एकर तो रयाल आयो क शरूआत ही अती दौरी है तो आग ब्या हूसी। पण चीड देवदार अर ओक रा हरा भरया विरया अर वाहळा सुंदर झरणा रा निजारो भी मन मोबणो हो। पूला गाव रे बाद उतार आणे सू भी राहत मिली। पूला अलवनदा र आगेर म पहाड री पगबनी म बस्यो अनूठो गाव है। चारू मर घणी हरियावळ सू

नदी पहाडया । नदी मानो गाँव रा पग घोवती लाग । आगे फेर उतार चढाव आळो मारग । पण 4 कि मी पाछे पत्थर सू वणी घाटीनुमा चढाई । वाकरा चुभणे सू पगा म टीस हूवण तागगी । 1 कि मी चढाई चढण रें बाद एक चाय अर फळा री दुवान दीखी । विसाइ खातर सगळा यात्री अठे रकग्या । दूवान सू सेव खरीदया । अठ रा सेव पीळोपण लिया हळके हरे छिलके रा अर स्वाद मे खट्टा मीठा हुव । आगे रें मारग म 6 कि मी दूरी माथ 'गगा मुडार जल विद्युत याजना' रो एक बोड दीख्यो । पाणी री बहुतायत तो अठ है ही । योजना पूरी हुणं पछ इण क्षेत्र म विजली अर सिचाई साधना री भोक्ळायत हू जाती । 1 कि मी आगे मुडार गाँव पड । आ 700 लोगा री वस्ती है । कादो, फरासवीन अर साठी आद मोटा धान ही अठ नीपज । ई गाँव सू थोडी आग पहाडी ढळवा मारग सू वंती अलकनदा बडे वेग सू वं । वेई जाग्या तो नदी बडे प्रपात रो रूप ले लेव । अठ घणे वण म शहद रा छत्ता री लाग्योडा दीरया । एक दूवान सू 20 रु किलो म कई साप्या शहद खरीदयो भी । नदी माथे अठे एक पुल वण्यो है और आगे रो रास्तो अलकनदा र पूर्वी भाग मे वव । अठ फेर ऊभी चढाई शुरू हुव जरी घाघरिया तक पूचं । घाघरिया में भी सिग्यो रो गुरुद्वारो है और अठ भी गोविंद घाट दाइ चाय भोजन री निगर्ची व्यवस्था है । साठी दस बज्या ताइ सगळा थोस साथी अठ पूचग्या । 12 बज्या ताई भोजन कर लिया अर विसराम करयो । चौथे पहर एडे छेडे र चितराम निजारा रो आणद लियो । पूम फिर र सात बज्या तक पाछा गुरुद्वार पूगग्या । भोजन रें बाद आठ बज्या तक सूवण लाग्या । गुरुद्वार सू 6 6 काबळ यात्री दीठ लेणे र बाद भी शायद ही कोई ठड री बीतायत र कारण मो सकयो हो । लगभग 12 हजार फिट री ऊंचाई र कारण रात म अठ रो तापमान गूय सू ई नीच जाव परो ।

आगले दिन भोर म 6 बज्या फूलां री घाटी वास्त चाल्या । फूला री पाटी घाघरिया सू 5 कि मी दूर उतराय वानी पड अर पूरव वानी हेमकुड । घाघरिया वस्ती मू नड ही अलकनदा माथ एक पुळ है जका बिरग्या

सू टूटग्यो हो । नदी म बडा बडा भाटा नाख'र मारग बणायोडो हो । इणा पर पग राख राख'र उतराघ मोड लेंती ऊची चढाई चढणी शुरू करी । इण माग माथं जीवणे हाथ रो डूगर सीधो तण्यो काले रग री चट्टान सू बण्यो अर वनस्पति सू कोरो है । इण री तीन चोटया महादेव शिव र तिरसूल दाइ दीस । बीच मे नदी रो धीमो बहाव नीलकण्ठ री समाघ मे बाघा र डर सू धीमो बहतो लाग । ऊची ऊभी चढाई आठ इण मारग मे 2½ कि मी र बाण जगल मे बुदरती रूप सू नीपज्योडा फूला री गुरूआत हुवण लाग । जिया जिया आग बढया दूर तक फूला री पटया विछोडी दीसण लागी । सिंगळे दिरस्य म इचरज मे डालण आळी अनूठी सुदरता मौजूद है । ऊचा डूगर बफ ढकया शिलर घौळी ऊजली निरमल नदी अर मीला तक जठ तक दीठ जाव भात भात रा फूल ही फूल अनेक रगा अर आकारा आळा । इसान जे महनत कर इती माया अर प्रकार रा फूल लगावणा चाव तो शायद ई पार पड । शायद विश्वात्मा री इण विलक्षण शक्ति र वारण ई तुलसी जिंसा समथ कवि र मूड सू अचानक ही बेगव कहि न जाय कऱ बहिये जिंसा शब्द निसरया हुसी । पवत र ग्लेशियरा अर हिमनदा सू पूरी अर फूळा माडी इण घाटी री जाणवारी पला पोत मारगोट नाम री एक अग्रेज महिला ने हुई । मारगोट इण घाटी री सुदरता सू इत्ती प्रभावित हुई क वा अठ ई बसगी । अर 4 जुलाई 1939 म इण घाटी म ही वैं रो निधन हुयग्यो । अठ ई वीरी कब्र बण्योडी है अर अग्रेजी म लिख्योडो है क 'आ वाई जग्या है जिकी जिदगी भर मन प्रेरणा अर स्फूर्ति देती रई है । वास्तव म फूला री घाटी री चितराम सुदरता रो जुवान अर आलरा मे चित्रण सम्भव नी है इ रो तो खाली अनुभव ही करयो जा सक ।

आगले दिन भोर म 6 बज्या घाघरिया सू हेमकुण्ड खातर टुरया । घाघरिया क्यू क हेमकुण्ड रो आग्विरी यात्री पडाव है सो आदर भाव सू इण न गोविंद धाम भी कवे । सिख मत म आ भानीज क उण रा 10 वां गुफ श्री गोविंद सिंह जी अठ आ र साधना करी ही । गोविंद धाम सू हेमकुण्ड पूव

दिशा में 5½ कि मी दूरी पर स्थित है। ओ सम्पूर्ण मारग बड़ी दोरी ऊभी चढाई आळो है। दूजा तीरथा - अमरनाथ, केदारनाथ आद में भी जातरा लम्बी अर कष्टदायक है अर चढाई खडी है पण खाली 55 कि मी री दूरी में 5000 फिट री चढाई कम ई जाग्या हुव। मारग चट्टाना न काट'र पगडडी रूप सू बणायाडो है। यात्री भाटा रं खुबणे, प्राण वायु र कम हुणें ऊची चढाई अर हाफ जाणें स घणो थक। रस्ते में कोई वस्ती अर पढाव भी नई है पण इण क्षेत्र रा गावई लोग जातरा रं दिना में बीच बीच में दो जाग्या चाय पाणी री दूकाना लगा लेव बीसू बौद्ध राहत मिले। इण दूकाना में चाय नमकीन, बिस्कुट, टापी गोली अर सेव चकोतरा गळगळ आद मिल। पहाड री जातरा में हळको भोजन करणे अर नीबू, गळगळ आद र मात्रा रं समय प्रयोग सू पुर्ती मिलें। इण मारग र बीच में बौत वेग सू वैवण आळो एक स्रोत भी आव जिंको नीचे व र अलकनदा में मिल जाव। इण स्रोत रं उद्गम वेग रा निजारो देखण खातर अठ पत्थरा री एक बडी चौकी कोई वणा दी है। उण पर बठ'र विसाई खाणे अर धरणे री तज गति अर प्रवाह देखणे में लूठो आण द जाव। जातरी मारग री दिक्कता भूल'र तरा ताजा हू जाव। ओ स्रोत अदाज 4 कि मी माथ पड। अठ सू हेमकुण्ड किला सवा किलो मीटर है। आगे रो मारग भी आडो खडयो है पण आधा कि मी र पछ हेम कुण्ड पर वण्या टीन रं चददरा री पात दीवण लाग। मुकाम र नडे हुवणे रो पूर्वाभास मिळणे सू आपणे थम री माथक्ता मजिन पूरी होणे री सम्भावना सू गार्वना मिळ। हेमकुण्ड पूचणे पर बठ र अपूर्व सौवणे दृश्य सू हरख अर गरी शांति री अनुभूति हुव। चारु मेर दूध मानद ऊजळे ग्लेसियरा सू धिरयो पठार नुमा इण जाग्या एक गरे नीले स्वच्छ जळ री एक रमणीय छोटी झील अर उण र एक किनारे लक्ष्मण जी रो बौत प्राचीन मंदिर सामणे पुजारी रो एक कमरे रो आवास। दूसरे कानी लकडी अर टीन री चादरा सू वण्या गुरुद्वारा। कवत है के लक्ष्मण जी आपणे पूरव जिनम में शेष नाग र रूप में अठ तपस्या करी ही। गुरु गोविंद सिंह जी भी अठ साधना करी। इण बात री जाणकारी मन् 1937 में नागी। उण वेळा सू ई अठ गुरु

द्वारे र निर्माण रो काय शुरू हुयग्यो, जिको आज तक चाले है। अठ भी सेवादार जात-पात र भेद भाव सू रहित सब यात्र्या र चाय आद री व्यवस्था कर अर परसाद मे हलवो देव। बडी सख्या मे रोज सैकडो हिंदू सिख समान आदर भाव सू अठ अरदास करण आव। हेमकुण्ड इतो सुरम्य अर मनमोवणी स्थान है क लगातार कुदरत र निजारा न घटा-दर-घटा बठया देखता रणे सू भी तपित नी हुवै। दीठ अर आत्मा री प्यास बुझै नी। चारू मेर रा डूगर चादी रा मुकुट ओढया आपरो उजियारो कुण्ड र जळ म देखता जाणी ज। माखनलाल चतुर्वेदी भारत माता न 'हिम किरीटिनी रो जको सम्बोधन दियो वो अठे साचो अर पूण साथक दीखै। इण 5½ कि मी री जातरा मे 3 घटा लाग्या। शरीर थक र चूर होयग्यो। पण अठ री अबूझ और अनिवचनीय सुदरता सू मन हरप री विभोर हो उठ अर असोम आनंद री प्राप्ति हुव। घटे भर सुसताणे अर कुदरत रे विविध निजारा रो आणद लेणे रे बाद स्नान करण ताई थील र सार पूग्या तो पतो लाग्या क ठड री अधिकायत र कारण पाणी री ऊपर ली परत बरफ र रूप म जम्योडी है। घणकरा साथी तो ठड रे डर सू हावणे सू तोबा कर ली पण 6 साथी और मै तयार हुया। नुकीली डाग सू बरफ री परत तोडी। कई तान ताई तो टावरा दाई बरफ ने भाटे दाई झील माथ बगा र दूर तक फिसळती देखणे री खेल सेलता रया। प्रश्रुति रो सम्पन्न अबोधता अर निश्छळता रो बाहक हुव औ अठ पतो लाग्यो। एण त्रिडा पछ पिघळघाडी बरफ म पग मेलता ई पग री आगळया ई नही पिघळया ताई सुन्न हुगी। एकर ता भाग'र पाणी सू वार आग्या। ठड सू सगळो मात अर पग कापे हा। लक्ष्मण जी र मिदर री भीत झाल र बिया ई गहया र सवया। ह्याळया गू पगा री मालग करी क थोडी गरमी रो अनुभव हुय। फेर तो वार बठ'र लोटे गू पाणी पला पगा पर अर फेर नीठ दो चार लाटा शरीर माथ नाग र जल्नी मू कपडा परया। एक दो साध्या पाणी मे हुवकी लगई भी तो 30 मकड सू बेसी पाणी म नी ठर सवया। मदिर रा दान अर चाय पाणी म 1½ घटो लाग्यो। 10½ बज्या पाछा उतरण लाग्या। उतराई म आपो समय ही लाग्यो अर कठिनाई भी महसूस नी हुई। 12

वज्या ताइ घापरिया पूग्या । विसराम कर्यो । । वज्या भोजन पछ फेर थोडी विसाई कर 2 वज्या पूठा गोविंद घाट ताई टुरग्या । मारग म नदी र सारे चालता झरणा खोता घाटया री हरियावळ अर पल पल बदळता निजारा रो आणद लेता 6 वज्या पैता लक्ष्य ताई पूग्या । रात्री भोजन अर विसराम गुम्दारे म ही करयो ।

आगले दिन भीर मे गोविंद घाट सू बद्रीनाथ वास्ते बस सू रवाना हुया । ओ मारग 25 कि मी है । इण मे पाण्डूवेश्वर अर हनुमान चट्टी नाम री दा वस्त्या बीच म पड । पाण्डूवेश्वर मे विष्णू रो छोटा सुंदर मिंदर भी है । ऊची चढाई र कारण सडक सप दाइ वळ ग्याती चाल । कई जाग्या तो बस मू नीच सडक रा पाच छ माड तक दीख । सडक र सार ही कई जग्या पदल माग भी साथ साथ बवे । इण पगडडी र मारग सू भी सँकडो सरघालु जातरी अर साधु सत वैवता दीरता रवे । करीब सवा घटे बाद जद बस बद्रीनाथ रँ बस स्टँड पूगी तो मन हरप सू उछळण लाग्या । घणा दिना सू देश र चारू धामा मे सरसू ऊचे अर कठिन यात्रा जाले तीरथ बद्री धाम र दशना री माघ पूरी हावणे री सम्भावना सू म्है सब उमाव सू भरग्या । बस सू उतरते ही पण्डा आयग्या अर आपरे जजमाना री पूछनाछ करण लग्या । बीकानर क्षेत्र रो पण्डा जयनारामण भी बठै पूग्यो हो । म्हाने साथे लेर गीता भवन नाव री घरम शाला मे म्हारे ठहरने री उण व्यवस्था करवा दी । आवश्यक सामान आद खरीदणे री जाग्या बता दी । रात्री री भीषण ठड सू बचणे वास्ते तिराये रा बावळ आद दिलवा दिया अर दिन म भी कई बार म्हारी सम्माळ लेवतो रयो । ओ बी कयो क पाने पइसे टक री जरूरत हुव तो म्हारे वन ले तीजो । घर सू दूर परदश म एक अणजाण व्यक्ति सू आज रँ युग मे अपणाप अर मदद री बात सुण र वीत आत्मीयता रो अनुभव हुयो । आज पण्डा रँ बीवार मे लालच आद बुराया भले ई देखणे मे जावँ पण प्राचीन काल मे जातरा मे ज लोम जापणे जजमाना रा अवश्य ही बोहत मददगार हुता होसी इण म एक री मजाइश नी है । बद्री धाम दो तीन हजार लोगा री वस्ती है । घणग्या

साग पण्डा या दूजागार है व मन्दिरों का पुत्रागी आर। मन्दिर प्राचीन अर
 पहानी क्षत्री रा है। मन्दिर म धी री जात साग भर जगती रय। पुत्रारी दगण
 भारत रा तम्बुली आरणा है। एक धार्मिक विश्वाग आ थी है यानाय र
 जळ मू जर रामस्वरम र निषिन्ध रा अभिगण करात्र जर ही रामस्वर जो
 री जातरा पूरण मागीर। प्राचीन भारत म साधभूमिक्ता और अगण्डता
 रो भावता रा ण मू पागा और उगाहरण काई रू गण है। भारत रा चार
 धाम दग र चार सिनावा म ता यपाटा है ही पूजा उपासता रो दीठ मू आ
 एक दूगर मू जुटमाग है। मंदिर म यत्री विष्ठाव री सायणा मूरता है।
 मन्दिर र पाटे तीर ई गणर रा चार बटा गुण है। मानी आ मी पसा स्नान
 पर र मन्दिर जात। गुणरत रो कगी विवगण करिमा है व एक कानी ता
 ऊकळते पाणो रा ग्यात अर बी के टीव नीच 20 फुट रो दूरी पर हिमनर रो
 शीतळ प्रवाह। मन्दिर री मार हिमागय रा वरण मू मय्योटी नीला पाट्टया।
 चारु मर शात यातावरण अर गीधा गरल भना साग। एक अगीम जाति अर
 आणर अठ मिल्। दण क्षेत्र र कागिदा माध गमाज री गिगवत मुदरत रो
 परभाव बसी है। ओ ई कारण है व गहरां री सुराया ओनु तव नी अठ नी
 पूगी है। अठ रा लोग मगती आस्थावान अर महयोगी है। चारो, घोरा घडी
 आद री पठ अज तव ता नी है। प्रकृति र दाई माग म भी गुणरता ताजगी
 अर गरिमा दगण न मिल है। स्नान दगा र बाद धमगाता आग्या। नडे ही
 देसी ढायो हो। भोजन कर र विश्राम कर्यो। 3 बज्या वापस पुळ पार कर
 नदी रो अपूरव दृश्य देरण लागग्या। मंदिर सृळण म देरी ही। चार बज्या फेर
 मंदिर रा दगन कर्या। उत्तराद कानी 3 कि मी माना नाम री जाग्गी है।
 बठ गया। उण जाग्या मू दूर सामण तिब्बत री सीमा दीने। चीनी सनिवा
 रा गिगिरि दूर मू घुघळा घुपळा सा दीस। 5 बजे तव वापस पूगग्या। सीत
 मूव बढण लगगी ही हवा भी तेज ही। थोडी ताळ ताइ बस्ती र सामाय
 बाजार म घूमता रया। 6 बज्या तो हलको अपेरो हुयग्यो हा। सर्दी काफी तेज
 हुयगी। ऊनी कपडा, कनपच अर दस्ताना आदि परणा पढया। भोजन र बा

8 वज्या सू पला ई कमरे मे आणो पड्या । रात्री म सब कपडा अर विछावण औढण री व्यवस्था थका भी सर्दी रो अनुभव हुतो रैयो ।

आगले दिन तडक 5 वज्या बद्दीनाथ सू बस म केदारनाथ री यात्रा तार् चाल्या । विष्णु प्रयाग, जोशीमठ, पीपल कोटि हुता चमोली पूच्या । अठ सू एक सडक करणप्रयाग, रुद्र प्रयाग, श्री नगर अर देव प्रयाग र रास्ते ऋषिकेप जाव । दूजो गोपेश्वर, चोपता हूती ऊखीमठ पूग । अठ रुद्र प्रयाग सू जोशीमठ हू र आणे बाळी सडक भी आ मिल । 1970 सू पैला तो केदार नाथ री जातरा जोशीमठ सू ई पदल हूती पण अब त्रिजुणी नारायण सू आग गौरी कुण्ड ताई तो बस जाव, आगे री 14 कि मी री यात्रा पदल करणी पडे । साय 4 वज्या गौरी कुण्ड पूग्या हा । काली कमळी बाळे री धमशाला मे आवास करत 5 वज्या । वस्ती र मंदिर रा दशन कर्या । भाजन अर वस्ती रे अवलोकन र बाद नौ बजे तक सोग्या । प्रात घुघळके ही गौरी कुण्ड र गरम पाणी र स्रोता मे इस्नान कर तराताजा हू'र उत्तराद दिशा मे पहाडी मारग सू आगे वडणा हो । बाजार जठ खतम हुव, वठ सवारी वास्ते खच्चर अर पालकी आद रो वतजाम भी किराय सट्ट हू जावे । कमजोर अर बूढा ठेरा लोगा ने आ साधना रा सारो लेणो पड । केई सुखी सोरा नागरिक भी टट्टू किराया ले लेव । नुकीली कीले घाली लाठी भी अठ 3/4 रु मे मिल जाव । जिकी चढाई मे वीत काम आव । डळवा रस्ता म फिसळण सू वचाव । रस्ते र जीवणे कानी मदाकिनी बव अर डावे कानी ऊची पवत चौटया दीसे । इण दो या र बीच पाच फुट रो सक्डो मारग । चढाई दोरी अर आडी ऊभी । 2 कि मी चलणे र बाद जगळ चटटी री वस्ती आव । अठ चाय नास्ते वास्त यात्री आवश्यकता मुजीव ठरे । 3 कि मी ऊपर चढणे सू डाव पासी एक गाव आव, अठ भी सेव अर चाय आद मिल जाव । इण दोयू स्थाना म बिना रुक्या म्है आग वड्या । 8 30 वज्या रामपाडा गाव पूचग्या । जा जाग्या गौरी कुण्ड सू 8 कि मी दूर है । काळी कमळी बाळे बावा री धम शाला अर ठहरणे रा छोटा माटा केई हाटल है । थोडी देर सुस्ता'र आग टुरया । आग रो रास्तो

विषट चढाई आळा है। मदाविनी री धार कठई सक्डी ता कठई बीत विनाल,
 चीडी। कठई वहाव बीत घीमो है ता कठई वेगवान। 10 वजता वजता म्हे
 वेदारनाथ सू। १ कि मी दूर रयग्या। पहाडी माथे ऊचा वण्योडा केदारनाथ
 मंदिर रो गियर दीसण लाग्यो। सगळा उत्साह उमाव गू भरया आम वण्या।
 मंदिर नंडे रवणे पर पला मदाविनी र निरमळ शीतळ जळ म स्नान करया।
 वेदार नाथ री ऊचाई 12500 फिट र नड है। ठड र कारण एकर माथो
 सूनो सो लाग्यो। वगा नाह र ऊचे चक्तर माथे वण्योडे प्राचीन मंदिर रा
 दशन करण न गया। मंदिर रो वारला हिस्ता पत्थर रा है। शिलर उत्तर
 भारत र शिवालय शली म निर्मित है अर गम गृह म निर्वाणि री जाग्या एक्
 तीन कुणी शिला रास्योडी है। आ वहावत मशहूर है क जन् शिव पावती अठ
 महीप र रूप म धरती म लुप्त हूण लाग्या ता पाण्डवा वाग वाथ भर'र पवड
 लिया। आ शिला महीप री पीठ रो प्रतीक है। कवा है क इण महीप रा
 आगलो भाग नेपाल म पशुपतिनाथ र रूप म प्रकट हुयो हो। वद्री वेदार री
 आ भूमि सुरगी अर शात हूणे र कारण ऋषि मुनिया री धरती रई है। उत्तम
 स्थाना मे उत्तम विचारा री उदभूत हूणो सोभाविक ही है। आ ई वजह है क
 हिमाळय पर साधणा करण वाळा भारतीय चित्तक महान दाशनिक सिधात
 अर आदश समाज व्यवस्था देणे म सफल हो सक्या। अ विद्वान विनान र
 जनम सू बीत पला अणु सिद्धात, सापेक्षवाद रे सिधात माया और तत्व
 विनान आद सिधाता न लिख सक्या। जाचाय चरक हिमाळय सू औपध अर
 वनस्पति भेळी कर सक्या तिउत रा सत कवि मिलरया हिमालय मे अस्थ
 शक्तिया री वाणी सुण सक्या तथा वेद व्यास जिसा मनोपि अठ महाभारत
 जिस्ता गौरव ग्रंथ री रचना म सफल हुया। अठ ई युद्ध री निममता सू दु खी
 पाण्डवा ने शाति अर मुक्ति मिली। गौतम निर्वाण प्राप्ति खातर अठ ई तप
 करयो। नारद, अगस्त्व अत्री भारद्वाज आदि वदना जोग न जाने कित्ता
 ऋषिया री साधना स्थली रा दशन कर आतमा तप्त होयगी। आज भी जद
 जद इण घटणा री याद आवै तो मन विभार हू जाव है अर कल्पना री उडान
 भर उण स्थान पर पूच र घणे आण'द री अनुभव करण लाग है।

पजाव रा नुवा-पुराणा तीरथ

भाखरा बाध अर उण सू सिचाई अर बिजली उत्पादन री योजना न स्वर्गीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू आज रा तीरथ कवता हा । खेतीहर देश हुते थका भी आजादी सू पला भारत म सिचाई रा साधन बौत कमती हा । प्रथम पचवर्षी योजना रै भुजीव केई जाग्या बडा बडा बाध अर सिचाई योजनावा वणाईजी जक सू आगे चाल'र 1960 र अतिम वर्षा मे हरित क्रांति रो सूत्रपात हुयो । अठ साध्या सागे इण स्थान र भ्रमण री योजना बणा गर्मी री छुट्टा मे 27 मई 1983 न बीकानेर भटिडा रल मारग सू रवाना हुया । ओ सम्पूरण मारग बाळू र ऊचा धोरा आळो है । हरियावळ अर रूख र नाम फोग अर कर रा बिना पत्या आळा सूखा दरग्वत कठ बठई दीम नइ । रेत री ऊची नीची लहरदार पटया आळी घरती समूदर दाइ हिलोरा लेंती लाग । जळ र अभाव र कारण वस्तया दूर दूर है । रेल मारग र केई स्टेशन माय तो बीकानेर सू रेल सू लायोडी टक्या सू पाणी देईज । जीवण री पली आवश्यकता खातर ई धोर मघप करण वाले वीर वाकुरे मरवासिया रा वास्तविक जीवन कित्तो जूसारू अर जीवत रयो हूसी इण रा सहज म ही अनुमान लगायो जा सक है । बेसी मात्रा म धूळ माटी उडणे र कारण सगळा रेल यात्रा रा चेहरा, शरीर अर गाभा माय बाळू री खासी चोष्ठी परत जम जाव । अर सूरतगढ पूचता पूचता ता सूरत ई बदळ जाव । आगे र मारग म हनुमानगढ अर डव्यावाळी इण क्षेत्र री मसहूर मडया है । हनुमानगढ म बलवन रै समय रो वणामोडो एक सातरो गढ भी बत्ताव है । अठ सू आगे ज्यू-ज्यू भटिडा कानी बडा लोगा री भापा अर पहराव पर राजस्थान री जाग्या पजाव रा परभाव बढतो जाव । सुबह 9 बज रै नडे भटिडा जा

पूग्या । भटिडा ज रा माशलिम याड उत्तर भारत रे स सू बडा याडी म एक है । छाटी अर बडी लाईना रो ताता मीला दूर तक सीधा विछयाडा दीम । अठ री एक विपशेता सात अळायदी दिशावा सू जा'र मिलण आळो रत मारग है । अत्ता रास्ता रो एक जाग्या मेळ कम हुव । स्टेगन माथ सामा भीड भाड रव । भटिडा शहर तो बीत बडो बोनी पण मडी रो दीठ सू सूत्र महत्वपूर्ण है । बाजार घणखरा पुराणी तज रा है पण नुई चाल रो दूकाना भी दीस है । अठ रा तरबूजा भी मीठा अर मसहूर है । कपडे रा बिब्री बट्टा भी अठ काफी हूणे सू कपड रो दूकाना खासी बडा अर आधुनिक है ।

भटिडा सू फिराजपुर रो एक गाडी 9 30 जाव । पण उण दिन लट हूणे सू 10^{1/2} रवाना हुई । भीड काफी ही पण बठणे र आरम्भण र कारण आग री यात्रा आराम सू बटी । यू तो फिरोजपुर ताई रा रस्ता सामो हरयो भरया है पण बिच बिच म वाळु रा छोटा-माटा टीला ठेठ ताई आवता ई रवे । 1 बज्या फिरोजपुर पूग्या । जालधर वास्ते गाडी पुणा तीन बज्या जाणी ही इण वास्ते स्नानादि कर तारले दिन रो घूळ माटी सू निजात पाई । अठ दूसरी थेंपी रा हावण घर भी साफ सुधरा अर खुला है । सतळज र सार बस्त्यो हूणे र कारण पाणी री बीतायत है । नळ रो जळ भी शीतळ अरप्रवाह चोगो है । मारग री सारी थकावट मिटगी अर सगळा साथी ताजगी रो अनुभव करण लाग्या ।

फिरोजपुर जालधर रेल मारग बीत हरयो भरयो है । नहरा अर खाळा री कमी नही । धरती चोखी उपजाऊ है अर बस्त्या नड नैडे है । अठ रे लोगा री कद काठी अर नाक नसक सुदर है । महनत अर पुरपाथ री बजह सू सारो इलाको सम्पन अर सोरो है । प्राय सगळा टेशना माथ भीड अर रौनक रवे । छाटा टेशना पर भी खाणे पीणे रो खासी चीज्या मिल । चत्र बसाळ आळी फसल घणखरी तो कट चुकी ही पण गाडी स ई दीखतो हो क नई स्थाना म फसल औज भी उठ रई ही । नळरूप अर ट्रेक्टरा री सख्या इण क्षेत्र म बीत है । हिंदू बस्ती हुवा या सिवा रो गाव गुरुद्वारा री सख्या सब जगह काफी है । उण दिन गुरु जजुन देव री पुण्य तिथि ही । इण र उपलक्ष म

लोहिया सास र टशन माथ केई सरधालु ग्रामीण याना न सरबत शबील पिला रया हा। केई उत्साई ती गिलास भर भर'र गाडी रै डिब्बा मे भी आयगा। हिन्दू सिख दोयू समान रूप सू इण सेवा मे लाग्योडा हा। पजाव रो औ क्षेत्र वणम्पती सम्पदा रो दीठ सू भी सम्पन्न है। अठ वट, नीम, पिलरण हूद कीकर, टाली अर केई जाग्या खजूर रा पेड मिल। जालधर र वन सफेदे रा पडा रो सख्या भी घणी है। पानिया टेशन सु जागे कटरा दर पिड मे अगूरा रो एक वडो वाग है जिको गाडी माय सू ही दीस हो। माकळी हरिणछी हूणे पर भी मरू घरती रो कमी अठ भी नी है। फरक औ है क राजस्थान मे भूमि रो सिचाई तइ पाणी कोनी, जद क अठ जल रो काई कमी नी है। अठ रा मारू जमीन मे मूगपली रो उत्तम खेती हुव। अठ साल मे तीन फसला बरसीण कणक अर मक्का रो नीपज। मारग रै मध्य म छेगूपर नाम र स्थान पर चमडे रो कारखाना अर जनता डिग्री कालेज है। ई र वाद कपूरथळा कस्वो पड जकी आजादी रपला एक रजवाडा हा। साय 6½ बज्या जालधर पूगग्या। टेशन वन ई धमशाला म रात्री पढाव रारयो।

29 मई रो भोर मे जालधर रत्वे टेशन सू सिटी वस पकड'र नुवे वस स्टड पूच्या। अठ मू 6 ½ रो वस सू नागळ बाध ताई रवाना हुया। डड दो घटा मे होशियारपुर पूगग्या। आगे रो सम्पूरण मारग पहाडी है। बीच बीच म जठ समतल है, डूगरा सू व'र जाता बाहळा रे पाणी सू सडक जाग्या जाग्या सू काटगी है। इण मारग रो विशेषता है क इण मडक पर पजाव जर हिमाचल वायू रा क्षेत्र जाव। जठ रो पाहडया छोटी है। मारग उदयपुर-नाथद्वारा दाईं दीस। कठ कठइ पहाड बीचो बीच काट र सडक वणायोडी है। करीब 11 बज्या नागल पूचग्या। नागळ म सुदर जर माकळा बडो बाध है पण औ समतल जमीन माथ ई है। चम्बल क्षेत्र र गाधी सागर या रावत भाटा दाइ पवतीय क्षेत्र म नी है। नागळ मू माखरा बाध 7/8 मील दूर है। दिन भर आध आध घटे रे बीच सू भाखरा खातर वसा चालती रवे। घणी मवारया भेळी हूणे सू स्पेशल वसा भी चला देव। भाखरा बाध देखण वास्त नागळ रे

जन सम्पक अधिकारी मू आज्ञा लेनी पड, जिकी सारे सात मिल जाव। भायरा बाध रा दो विभाग हैं-सिचाई विभाग अर विद्युत विभाग। सिचाई वास्त पाणी न जिण भीत सू रोषे यो हिस्मो तो सगळे दर्शका ताई खुल्तो है। पण इण भीत र मायले हिस्मा म जठ टरबाइन चला र बीजळी बण अर जठ सू इण भीत र भीतरी हिस्सा री मरमत करीज इसी मरम्मतो सुरगा अर विजळी घर न देखण ताई विनिय इजाजत लेणी पड। आ दोयू री इजाजत ले'र बस सू भायरा चाल्या। बाध रें वन एक सुरक्षा चौकी माध यात्रा रा कमरा आद जमा करवा लिया जाव, क्यू व सुरक्षा री दीठ मू अठ रा पोटो लेवणा वजित है। 12^१ बजे म्हे नागल सू चल्या हा। आधा घटे म भायरा पूग्या। भायरा साच ही आधुनिक भारत र प्रमुग तीरथा म एक मिणीज। इन भारतीय विज्ञान अर तकनीक र जान र क्षेत्र म मील रो पहला भाटो क सका। विनाल आकार अर मजबूती री दीठ सू भारत ई नही एशिया म इण री समानता मुशिल है। इण बाध री ऊंचाई 1100 फिट सू बेसी है अर ऊपरी भाग री चौडाई 400 फुट सू बेसी है। इण रे निर्माण म जिती सिमट लागी उण सू सगळी दुनिया रे चारू मेर 8 फिट री चौडी सडक वण सकती ही। बाध रे लारली झील रो नाम गाधी सागर है। साच म ई आ सागर ज्यू दीसै क्यू वं इण रो दूजो किनारो दिखाई नी दव। इण वप विरसा री कमी सू और साला री तुतना म इण म पाणी कम हो। नीचे सीढ्या सू उतर र विजळी घर रा विशाल जेनेरेटर देख्या। इणा रे चालने री विधि समझावण वास्ते नमूने र रूप मे वणायोडे छोटे मिनियेचर पावर स्टेशन र पले कक्ष म प्रदशन करीज। बाध री भायली मरमत करणे वास्ते 40 सुरग्या है। वातानुबूलित हूणे री वजह सू भीपण गरमी में भी अ घणी ठडी रव। मरमत रा तरीका अत्यंत जाधुनिक है अर आपणी तकनीकी श्रेष्ठता रा प्रतीक है। 3^१ बजे नागल ताई आखरी बस जाव, पण उण दिन उडीक र वाद भी 5 बज्या ताई बस नी आई। आखर 5 बज्या भायरा री कक मन रेल गाडी सू नागळ वास्ते टुरया। सौभाग सू उण डिब्बे मे एक भान मण्डली भी चडी। चार पाच स्टेशन ताइ हरजश रो चोखो आणंद लियो। 6 बज्या नागल पूग

ग्या। जिण विजळी घर मू आज ममूळी उत्तरी भारत लाभ उठाव अर जिण सिचाई योजना सू देश री दूजी सिचाई याजनावा रो घुरूआत हुयो अर देश आज अन री दीठ सू आतम निभर हू सकौ उण आधुनिक तीरथ भाखरा रा दशना सू म्ह सब विभोर होग्या हा। हरख रो अनुभव मन मे करता होशियारपुर री अतिम बस दौड'र पकड सक्या। पण मारग मे बस री पट्रोल टकी लीक हूवण लागी। ड्राइवर अर कंडक्टर र बराबर कोशिश करणे सूरकती छकावती बस 4 बज्या बाद होशियारपुर पूग तो गी, पण आग जालघर आळी आखिरी बस निवळणी। 9½ बजे री रेल पकडी अर 11 बज्या तक जालघर पूग्या। पण अठ म्हारी घमशाला रा पट बढ हू चुक्या हा। आगर होली ड हाम नाम र होटल मे विसराम करयो। इण विघना बाधावा र वावजूद भी अनूठे सुख रो अनुभव हो रेयो हो।

30 ता री भोर म घमशाळ पूच'र दनिक नित्य कम स्नान आदि सूर निपट र अमृतसर जाणे री तयारी कर ही रया था क एक साथी किसनलाल री घडी गुम हाणे री बात सुणी। नहाते समय विण नल र बन घडी उतार'र रात दीनी ही, पण वापस आते समय वो उणन भूल आयो। ईने बीन घणी छाण बीन करी पण घडी नी मिली। घटे भर री भागमभाग र बाद निरास उदाम सगळा बठया हा क म्हार कमरे रे सारले कमरे मे ठहरयाडा सज्जन आपरे बेटे साथे बाजार सूर पाछा आया। वाने पूछणे पर घडी मिलगी। वं सुन भी पलाई लागी सूर ग्यासी पूछताछ घडी र मालिक र वारे मे कर चुक्या हा। आग सूर इमी भूल चूक नई हुव इण बात री ताकीद आपस मे करता 7½ बजे री गाडी सूर अमृतसररवाना हूर 9½ नेड अमृतसर पूच्या। सबसूर पता मिक्मा र प्रसिद्ध गुरुद्वार स्वण मंदिर गया। गुम्दारे र बार जूता अर दूजा सामान राखण री निखची सेवा व्यवस्था है। हाथ पम घाणे री टूट्या साग्योडी है। प्रथ साहब र प्रति आदर प्रकट करण ताई सिर ढक्कण बास्ते रुमात और टोपी री व्यवस्था भी सुलभ कराइज। गुरुद्वारे घेत विशाल अर पट्टरो है। प्रवण द्वार भव्य है। इण पर नक्वासी री चोखो काम है।

चढावे अर प्रसाद री आछी व्यवस्था है। प्रसाद मंदिर री तरफ सू वणें। कृपन दे'र निश्चित दर सू इ री विक्री हुव। मंदिर प्रवेश रें वग्त कृपन री एक हिम्सो मुख्य द्वार माथ लियो जावें अर दूजी अचना सू पैला सेवादार ले लेव। चढावे र पछे ओ प्रसाद फेर दशन करण आळा म वाट देवे। ई तरा जजमाना री किरपा सू मोटा हुण आळा पटा पुजारी अठ नी पनप सके। न ही भक्ता री जेवा माथ पुजारीया री लालची दीठ लागी रव। जो चढावो अठ चठ उण सू शिक्षण शालावा, लगर, पुस्तकालय आद प्रवृत्तिया चाले। बडे बडे पदा पर आसीन अर भागवान म्त्री पुष्प भाभाय आदम्या दाइ वतन भाजता, झाडू लगाता अर दशनाय या री सेवा करता दीखे। सिक्क भक्त गुरुमंदिर मे गम्भीर श्रद्धा भाव सू जाव। कोई तरह रो दिग्गवो अर प्रदर्शन नी हुव। लगर मे बडा छोटा म एक पात में बठे। एक जिंसा भाजन करे अर बडे सू वडा आदमी भी आपणा वतन आपणे हाथ सू धोव। लगर री व्यवस्था सू भूखे अर गरब री उदर पूति ता हुव ही है, समता अर भाई चारे री अनूठी भावना भी कायम हुवें है। स्वण मंदिर र चीभीत मे ही बावा अटल सिंह री नौ मजिली समाध, मुम्बानी अर सिक्क घम दशन सू जुडयो पुस्तकालय, सग्रहालय, बगीचो लगर गानो अर यात्री निवास भवन आद है।

गुरुद्वारे र घौरी माडे सू पूरव कानी कोर्क एक फर्लांग माथ भारत री आजादी री लडाई रो पूजा जोग तीरथ जळिया वाळो बाग है। इण रो प्रवेश मारग एक सक्डी गळी सू हो र जाव। नगर र वीचो बीच हुणे मू बाग चारु मेर ऊचा मकाना जर हवळया सू घिर्योडा है। उण सक्टी गळी मू इ आत्याचारा जनरल डायर आजादी रे परवाना ने घेर र वा माथ अघा घुध अर अचालक गोळया दागी। बाग री भीता माथ मड्योडा र निसाण आज भी उण रो बरबरता री गवाही देव। प्रवेश द्वार र ढावे कानी एक ऊडो चडो कुआ है। उपर लिखे हत्याकांड र समय भयकर भगदड र कारण कुओ लाशा मू भरग्या हो। बाग र वीचो बीच आजादी पछे एक शहीद स्मारक बणवामो गयो है जिको ऊचा माथो किया जाजानी खान शहीद हुमा जूझर वीरा र त्याग री गौरव गाथा गाव।

अमृतसर मे दुर्ग्याना मदिर, काली मदिर, विजली पहलवान रो मन्दि
अर कम्पनी वाग आद अय दत्तण जोग स्थान है । दुर्ग्याना मदिर खासो बडो
है अर इण में मकराणे रे पत्थर रो आछो काम है । हिन्दुआ मे इरी चोरी
मानीता है । शीतला मदिर भी भव्य अर सुदर है अर स्वण मदिर रो गरी
में वण्योडा है पण उत्तो बडो अर विगाल बानी । चार बज्या डोजल चातिउ
गोल्डन टम्पल गाडी पकड र जातधर पूग्या अर रात्रि म ही फिराजपुर रवाना
हू र भटिडा रे सागी मारग सू वापस आगले दिन घर पूचग्या । स्वण मन्दि
म सिक्ख सम्प्रदाय र लोगा म जिस्ती आत्मीय भावना अर जलिया वाले वा
री सामळ कुरबानी ताई आदर भाव हिन्दू मिक्ख दामूआ म देखण न मिन्थो
आज उण रो अभाव मन म एक दरद पदा कर देव है । एक बार गांधात्री
कयो हो क भारतीय मस्कृति रो बिगैपता इण रो समवय भाव तो है ही पण
उणसू भी वणी इण म आपर विवारा न ठीक करण रो ताकत है । निरखन
ही अष्ट राजनीति सू उपज्या अलगाव बगा दूर हा र सदिया सू कायम भाई
चारा अर आपस रो गदभाव कायम हूगी ।

हाडौती सू मेवाड ताई

गजोग मू नुव माल र पैलडे दिन ई म्हारे यात्रा री सरूवात हुई । दिनूम ठीर सात बज्या बोग सू बन मे वठ र बूदी कानी खाना हुआ । आधूणै राजस्थान री धारा री धरती में खण वाले व्यक्ति खातर सघन हरियाळी माटा मोटा बिरख आटा घाता नदी नाळा, हवोळा खेवता तळाव ईन्व अर गेहू री हरियाळी मू लदी उपजाऊ धरता री निजारो एक अपूरख अनुभव हो ।

कोटा सू बूदी ताई री कुल 23 मीन री मारा मुरतो अर रमणीक है । मारग मे चवळ र अलावा घोडा पछाड अर भीनवत टरनाद बरनाती नती नाळा ई आव जिना मे इण दिना पाणी तो नी रेंवै पण वागे रण रा म रानी के बरमात में अं चुणाव जीत्याडा उम्मीत्तार री गटं डोग मू उदरता हुनी । ठेठ ताई अळसी अर गेहू री वाला न पवन माग वूमती देखेन हिवडें में हररत हुयो । कारण क लारले केई बरमा मू राजस्थान दुपदाट दुकाळ री चदेर मे रहयो । अदाजन सवा घट में म्ह बूती पूज्या । बूदी रा राजमैत देगल पोर है । इण म्हैला रा आपतावार आगला अष्ट कानी वग्ना टोइनी गार र उणिपारे वाळी छता इत्याद गे वाग्येगगे देखे जाग है । रीनी री अ अणगड भाटां मू वणी घनी है अर वा माय घूने-बळी री रीनी री अ है । इतरा धरसा न-बरम बीया पण री बारी बिरसाई ५५५ ५५५ देणुण जोग है । ना माय माह्याण वन बूटा देग'र मे ५५५ री ५५५ ५५ गरब हुव । नीना माय नान नान रा बिनाम ५५५ री ५५५ री ५५५ पडण सागया है । विनीट अर उदयपुर री उरती म ५५५ री ५५५ माधारण है । पण टुंग री बागी माये ५५५ री ५५५ री ५५५ हाडा राजावा गे गीव गया ५५५ री ५५५ री ५५५

बूढ़ी चित्तौड़ मारण म मेनाळ रो प्रसिद्ध अर प्राचीन शिवालय आव । इसी मानता है के इण प्रसिद्ध मन्दिर रो निर्माण 11 वी सदी म हुयो । प्रमुखा शिवालय र अलावा उणर आहत म निराई नना मोटा मन्दिर अर टूटी भागी प्रतिमावा पडी है । अे खडित प्रतिमावा आज भी आश्रमणकारियां रो गाथा न उजागर कर । शिवालय रे बन ई भोळानाय र प्रिय वृक्ष बेलपत्र रा मोक्ळा गोड ऊभा है । अठे सू 3 4 मील उत्तर पूरब मे लाठपुरा नाव रो बस्ती आव । अठ दामती कोकरा सिचार्ड योजना, हठळ 14 लाख रो लागत सू 16700 लाख घनफुट जळसग्रह रो गिमता वाळो अेव जळाशय बण्याडो है जिणसू 1200 अेकड जमीन म सिचार्ड होवे । आपे मारण मे माडलगद, बेगू बीचौर पारसाली अर बस्ती इत्याद बस्वा पड । म्है सिध्या रा वरीय सात बज्या चित्तौड पूग्या । बी दिन उम र मेळे रे कारण उठ घणी भीड ही । चित्तौड कालज रा अेव साथी र सोज'य सू अेव स्थानीय घरमशाळा म रात वास रो व्यवस्था बैठणी अर दिन भर रा थाकयोडा मगळा साथी पडता ड गेहरी नोद मे सायग्या ।

2 जनवरी न तडके ई इतिहास प्रसिद्ध चित्तौड र किले माय चढ्या । चित्तौड रो नाव आवता ई महाराणा हमार, कुभा, साण, प्रताप, भामाशाह, जयमल, पत्ता, रतनसी जिसा नरपुगवा अर मोरा, पन्मणी, प'ना घाय जिमी प्रात स्मरणीया बीरागनावा र प्रति शीश मतई झुव जाव । जातीय शौरव अर घरम रो रथा मे सदा तत्पर देवण आळा इण सूरवीरा रो घरती रो अेव अेव पत्थर शाळिग्राम है अर इण माटी रो पवित्रता मथुरा, काशी, अर प्रयाण सू कम पावन नी है । जठ रा सूरवीरा आश्रमणकारिया रो दासता स्वीकार करण पान साको करण प्राण देवणा आछी समझ्यो, जठ बीरागनावा अेव नी तीन तीन बार जीह्वव्रत धारण कर घघकती ज्वाळा म बूदणी उचित समझ्यो, डस पावन स्थान माघ उ'न'र म्है समळा थडा अर हरख सू सरोवार हुयग्या ।

चित्तौड रा गढ न 'गढ तो चित्तौडगढ और सब गढया' कबत र मुजब ई पायो । जो देख जाण र घणी इचरज हुयो क गढ म सकडू अेकड सेती

जोग जमीन है जठं आज भी लेहरा लेवता सेत यूमता ऊभा हैं। अठ पाणी रा वीसू नना मोटा प्राकृतिक तळाव अर स्रोत है। इण वास्ते दुस्मण र हमल री वन्त अठ साद्य अर जळ री अभाव, नी हुय सक ही। औई कारण ही क वरसा ताई दुस्मण सू धिरयाडा रय'र भी सिसोदिया राजपूत वारी मुवावली कर सकया।

किल माथ पूगण सातर उंची चढाई आळी धुमावदार सडक सू पाडन पोळ अर राम पोळ आद सात दरवाजा पार करणा पड। ःण सू किल री मजवूती अर निरमाण करावण वाळा री सूझवूष रो परिचय मिल। किले म देखण जोग स्थाना मे नवलखौ भडार वणवीर री दीवार भामांगा री हुवेली सिणगार चवरी, रामजी री देवरो कुम्भा म्हैल कुम श्याम रो मिंदर, जस्थभ गौमुख बुड, काळवा मिंदर नवगजी पीर पदमणी री म्हैल कीरत स्थभ इत्याद उल्लेख जोग इमारता अर जगावा र उपरात किल मे सकडू सुदर देखण जोग स्थान है। इणा म कीरत स्थभ अर विजय तो स्थभ अेतहासिक महत्व र साग साग भारतीय स्थापत्य कला रा इसा नावचीन नमूना है के घडी दो घडी लगातार देष्टया पछ ई आत्मा अर आरया री प्यास नी बुन।

वी दिन ई दुपर मे अेक बज्या नाथद्वारा वास्ते रवाना होयग्या। साबला नालेरा सिंहपुर काकरिया, निवाडा, खेरखणी कपासण, मुगाडा भोपालसागर फतेनगर अर मावली होवती बस नाथद्वार पूगी। इण मारण म थोर खजूर ढाक अर कीकर रा विरख बेसी है। पाम्हेडी नाव रे गाँव म आम रे दरखता री इतनी बोहळाई है कि ओ गाव आमा आळी पाम्हेडी बाज। सिइया रा सान्नी सात बज्या रे करीव म्है नाथद्वार पूगा। धरम साळ मे समान धरन उत्तर भारत र से सू प्रसिद्ध वण्णव तीथ श्रीनाथ जी र मिंदर रा दरसण करण न पूग्या। मिंदर बहोत पुराणी है अर इणरी मानता ई घणी है। हर हमेस हजारू यात्री दूर दराज सू जठ दरसणा खातर आव। हजारू पीपा धी अठ रोज चढाव म चढे। अठरा पुजारिया ने पगार तो कम मिळे पण दोनू वन्त री भोजन प्रसाद के रूप मे मिळे। इण भोजन ने पुजारी श्रद्धालु भगता

ने बेच'र पइसा कर लेव । मोट मोटे रईस घरा रा स्त्री पुरुष श्रीनाथजी र शृंगार अर भोजन व्यवस्था मे आपरी सेवा देय र खुद न कृताथ मान ।

यणव मिदरा री व्यवस्था मुजब अठे भी मिदरा रा पट दिन मे कई वार खुल अर बंद होव । अठ री पूरी बस्ती अर बाजार मूळ रूप मे यात्रिया माथ ई निभर है । मिदर अर अठरी व्यवस्था देवण जोग है । नाथद्वारे री चित्रामकला तो जगप्रसिद्ध है ।

सिंध्या रा सात बज्या काकरोली वास्त बस पकडी । आधे घट भ ई रायसमद पूगम्या । उदपुर कानी जावण बाळा यात्रिया न र्ण विशाल झील रा दरसन जरूर करणा चाइज । झील रे तीर माथ ऊभा हुया निजर देठाळ पाणी ई पाणी निग आव । झील री आगोर कोई 42 मील री बताव । इणरो प्रमुख घाट घणो विशाल अर सातरी है । घाट रा पगोधिया ई इतरा बलात्मक अर सोवणा है के इणारी भव्यता आग हरद्वार, प्रयाग अर काशी इत्याद रा घाट ई फीका लाग । घाट र माथ ई 'नी खूटी नाव रा बलात्मक चबूतरा बण्योडा है । या र छता अर थामा माथ चोखे मकराण री मूरतिया उकेरयोडी हे अर सुदाई री खीणी वाम हुयोडी है । बीन देखर देलवाड (आबू) रा जन मिदर याद आयजाव । पण दुरभाग री बात जा के पुरातत्व विभाग कानी सू इण स्थान री कोई सार सभाळ नी होवण सू 'भद्र लोग इण बलात्मक प्रति मावा न तोड तोड'र लेजा रह्या है । इण भात हिंदू मूरतकला री आ बेजोड अर उत्तम सपदा नष्ट होय री है । रातवासी लेवण सातर म्है नाथद्वार पूगम्या ।

तीन तारीख न दिनूग श्री नाथजी रा दरसन करन सात बज्या री बस सू उदपुर वास्त खाना हुया अर की घटा मे उदपुर पूगम्या । उदपुर राजस्थान री काश्मीर वाज । अठ पिछौला, पतसागर उदसागर सरूप सागर अर ज समद जिसी टणकी झीला आयोडी है जिणसू च्यारूमेर हरियाळी ई हरियाळी छायोडी है । नगर भ श्री महाराणा रा म्हैल, गुलाब बाग मोती मगरी, चेतक स्मारक नेहरू उद्यान अर महत्या री बाडी इत्याद देवणजोग

स्थान है। जगमिंदर अर जगनिवास म्हैल तो पिछोला झील र बिचाळ बण्योडा है। नाव म वेठ'र म्हैला ताई पूगणी ई बडो आणददायक काम हैं। पयटन विभाग कानी सू उदपुर र विकास कानी पूरी ध्यान दिरीजण सू अठरी छवि सुधरी है। साफ सुधरी चौडी सडका, हरया भरघा बाग बगीचा अर लेहरा लेवती झीला मन न मोह लेवे। सहेत्या री बाडी म लाग्या फवारा ई देखण जोग है।

उदपुर री लोक कला मडल नाव री सस्था दुनिया म नाम कमायो। कठपूतळी प्रदर्शन र क्षेत्र म पूर ससार मे इण सस्था री कोई मुकाबली नी हैं। इणर सग्रहालय म प्राचीन पोशाका देख जिसी है जिण म ई मेवाडी पाग रा नमूना तो सरावण जोग है।

उदपुर, रा म्हैल-मालिया घणा भय है। शीश महल मे काच री लूठी काम हुयोडी हैं तो दूजा कई म्हैला री छता माथ सोन र पाणी री आपती काम हुयोडी हैं। सूरज भगवान री अंक अनोखी धातु री प्रतिमा इ म्हैल म मौजूद है। इण भात हाडीती सू लगायन मेवाड ताई राजस्थान री भव्यता रा दरसन सागोपाग रूप सू हुय जावं।

सस्कृत्या री सगम स्थली मगध

हिंदू, बौद्ध, जन सिक्ल अर मुस्लिम सस्कृति रो समन्वित रूप जदी एक ठोड एकत्र रूप मे देखण न मिल ती मगध मे । इण क्षेत्र मे विदेह राज जनक, महर्षि याज्ञबल्क्य, 'यायसूत्र रा रचयिता गौतम, भगवान बुद्ध, आखे ससार मे धरम री धुजा फँरावणिया महान् सम्राट अशोक, विश्व न शांति रो सदेश देवणिया जन तीथकर महावीर स्वामी, पीडित मानखे रा उद्धारक गुरु गोविंद सिंह जिसा महापुरपा री बिहार' स्थली हूणे रो गौरव प्राप्त है । पाटलीपुत्र (आज रो पटना) राजगिर, नालदा, गया, बौद्धगया, पावापुरी अर बिहार शरीफ आद विभिन्न सभ्रदाया रा अंतर्राष्ट्रीय ख्यात रा ऐतिहासिक अर धार्मिक स्थल भी इण पावन भूमी में स्थित है । चाणक्य, राक्षस, कामदक जिसा नीतिज्ञ पुस्यमित्र जिसा सेनापति, मुगल साम्राज्य न चुनीती दे'र नुवे कुशल शासन री थापना करणिया शेरशाह सूरी जिसा महापुरपा री क्रिडा स्थली आ जाग्या ई रैयी है । ससार रो दिग्विजय रा सुपना देखणिये सिक्दर रा हीसला पस्त करणे री खमता मगध री गूरवीर सेना मे ई थी । नालदा सरीखा ज्ञान विनान अर कला रा केन्द्र अर सम्पन्नता अर आर्थिक समृद्धि रा राजगृह जिसा विश्व विख्यात नगर अठ ई हा । जिण गुणा अर विशेषतावा सू परभावित हू'र मेगस्थनीज, ह्लानसाग, फाइयान जिसा यात्री भ्रमण दशन अर अध्ययन ताइ मगध आया, उण पावन भूम रा परतख दशन री याजना सू हिबडो उमाव उत्साह सू भरग्यो हो ।

गरमी री छुट्टा मे मई री 27 ता न रेल मारग सू दिल्ली हूता पटना पूच्या । दिल्ली सू आगे उत्तर प्रदेश अर बिहार मे रेल यात्रा गढ जीतणे सू कम

नी है। आरक्षण र बावजूद दिन तो दिन रात मै भी सीटा सू घणा लाग डिव्व बड जावे जर सीटा अर फरस माथे पसर जाव । टिकट बाबू की डर सू अर पइसा बटारणे री दीठ सू बाने बरज कोनी । दु ख उठाव ता बानून सू आर बरवाण आळा सीधा यात्री । दिल्ली हावडा जनता सू पटना पूगण म 20 घंटाग जाव । आगरा, बानपुर, इलाहबाद, बनारस आद बडा शहर मारग आव । पटना पूर्वी भारत री चोखे बडा ज स्टेशन है । स्टेशन र बार जी हाथ थोडी दूर सामले पास अग्रवाल बश्य धमशाला है । इण म ठरहण व्यवस्था हूगी ।

पटना री पुराणो नाम पाटलीपुत्र हा । यूनान र सांस्कृतिक इतिहास एथेस रा अर युरांन री राजनीति म राम रा जकी म्यान है, प्राचीन भारत को ई महत्व पाटलीपुत्र री है । मानख ने बल्याण री नूवा सन्देश, ज्ञान र नीति री उपदेश देवण म पाटलीपुत्र रे योग नै मुत्तायो नी जा सक । महा मीय अर गुप्त साम्राज्या री रजधानी हूण अर भारत न राजनीतिक एकता सूत म बाँधणे री श्रेय भी इण न जाव । आपरे हजारो बरसा रे इतिहास पाटलीपुत्र उतार चढाव रा अणेक मौका निरग्धा देख्या । बाल री दीड इण रा केई नाम उभर्या मिटया अर फेर पनप्या जिया - पुष्यपुर कुसुमपुर कुसभावती मीय नगर पटल अजीमाबाद, पटना आद ।

28 मइ न शहर रा देखण जोग स्थाना र भ्रमण ताइ निकळ्या । सूपला स्टेशन सू थोडी दूर गाधी मदान र पछमाद में काळी गोळ चट्टा दाई लागतो गोळघर देख्यो । बताव क 1770 ई म जठ भयकर काळ पडल हा । हजारू लोग भूख सू मरग्या । साम्राज्यवादी अंग्रेजा भारत री कृषि विकास करण बानी बंद ध्यान नी दियो । व इण बात न आपरे स्वार्थी अनुकूल नी समझता । अन्न री कमी सू आगे भळ लोग खतम नी हूव इण भा सू अन्न भंडार रे रूप में इण गाल इमारत री निरमाण हुयो । इण गोळघर ऊपर चढण ताइ घुमावदार रस्ती है । ऊपर मू नगर री शाभा देखणो आस लाग । गोळघर र मास काई आवाज कर ता बी री अनुगूज खासी देर ता

सुणीज । वासुरी री धुन अर चूडया री खणक भी चौखी लाग । वार सू नीचे रो दरवाजो बंद हूणे र कारण म्हे इण तरा री घ्वनि अर बी री गूज नी सुण सक्या ।

पटना म सचिवालय भवन री इमारत ऊंची विशाल अर सुंदर है । इ र पूरबी फाटक र चौरावे माथे शहीदा रो प्रेरणा देणे आळो एव भव्य स्मारक है । वीस फुट ऊंचे चबूतरे माथे सात शहीदा री भाव भरी मूर्त्या है, जकी आजादी र सघष अर वळिदान री वाणी वती दीस । अ मूरता शीय, सक्त्प अर कुर्बानी री जीती जागती तसवीरा दाई लाग । इणा नै देख'र 1942 री घटना सिनमा री रोल दाई आरया आगे तिरण लाग । एक झीणे जावरण र तार धीरे धीरे साफ हूता दृश्य—एच विशाल सभा । देशभक्त मतवाळा रो सचिवालय माथे तिरगो फराणे रो निरणय । 11 अगस्त नै 20 हजार लोगा री विंगाल रली सचिवालय कानी चाली । सरकारी सनिक अधिकारी र जादेश सू घुडसवार बंदूका ताण लेव । भीड रोक्या नी रक् । अचानक जधा घुघ गोळ्या री वीछार हूव । गोरा अपसर सचिवालय रो गेट बंद करवा देव । 6 युवका नै गोळी लागे । व बठई शहीद हूव । सैकडू घायल हूव । पण एक मूरमो जान हथेली माथे ले र पछमाद वारन सू सचिवालय में जा ऊपर चढ'र युनियन जक री जाग्या तिरगो लहरा देव । गोळ्या बंद नी हूव । राममोहन स्कूल र एक छात्र र भळ गौली लागे । असपताळ म 'भारत माता री जय रो जयकारे लगातो शहीद हूव । इण सात लाडला री सहादत बेकार नी जाव । देस आजाद हूव । उण री याद मै वण जो स्मारक । केई दूजा दृश्य अर उणिगारा घूम जाव स्मृति री दीठ म । चम्पारण रो सत्याग्रह, 42 रा भारत छोडो जा दालन, हजारी बाग सू जेल तोड'र भाग जाण वाळा युवका रा प्रेरणा स्रोत जे पी, श्रद्धा जोग राजेन्द्र बाबू अर नजरूल हक । आदर अर सरधा सू इण महा मानवा अर इणा न प्रसूत करण जाळी धरती मा र नमन न माथो झुक जाव ।

11 वज्या र करीब पटना संग्रहालय देखण ताई बुद्ध माग पूग्या । इण रो इमारत में हिंदू राजपूत स्थापत्य अर मुगल स्थापत्य रो बढ़िया मिश्रण

है। इण में मूरता अर चित्रा रा विशाल अर अनमोळ सग्रह है। अशोक र समय रो यक्षी मूर्ति बज जिक्की 'चारमधारिणी' नारी, रो 6½ फुट रो आदम बद मूरती, मौय काल रो स्तम्भ शीय, शुग काल रो एक मूरती फलक जक में अशोक वृक्ष र पेड रे नीचे आकयोडा दम्पति रो भाव भरो मुद्रावा रो सातरी अभिव्यक्ति, पाल युग रो भगवान बुद्ध रो भव्य मूरती, 9 मी 10 मी सदो रो कामदेव रो रति अर तृष्णा समेत मोवनी मूरती, प्रस्तर युग अर ताम्र लोह युग रा हथियारा रा अवशेष, प्रस्तरकरण रा नमूना, उल्का पिंडा रा अवशेष, तिलवत सू लायोडी राहुल सास्कृत्यायन रो इतिहास रो दुलभ सामग्री, रास्त्वपति राजेन्द्र वावू र काल म उणाने मिली भेंट वस्तुआ रो राजेन्द्र कक्ष म सग्रह इण रो अकूत अनमोळ सामग्री है। 1 30 बज्या भोजन पछ काइ विस राम कर 3 30 बज्या सिक्खा र परसिध गुरद्वार हर मदिर साहिव आया।

तस्त हर मदिर साहब सिक्खा र आध्यात्मिक गुरु अर खालसा पथ र निरमाता गुरु गोविंद सिंह रो जलम भूम है। अठ रो गुरद्वारो सिख धम र चार पवित्र धामा दाईं गिणीजण आळा पवित्र तस्ता में एक है। गुरद्वारे रो भवन 108 फुट ऊचो मकराणे र भाटे सू पाच तल्ला में बण्योडो है। भवन र नेडे ई 127 फुट ऊचो भगवा वस्त्रा सू मण्ड्यो निशान साहब माथ ध्वजा फरती रवे। जिकै कमरे में गुरु गोविंद सिंह रो जनम हुयो बठ सोने र सिहासन माथ गुरु रो तल चित्र विराज। गुरु रो हस्त लिखित ग्रंथ 'साहिव' अर बारे निजी हथियारा रो सग्रह भी अठ मौजूद है। हिंदू सिख दोयू बडी सख्या म दशन वास्ते अठे रोज दूक। पजाब रो मौजूदा स्थिति सू अठ रा सिख भी दु ली अर पीडित है। अठ रा बेई सिख पजाब र आतक वादया न सिरफिरया अर गुमराह आद कवे अर सिक्खा न मूळ रूप सू हिंदुआ रा भाई बघ ई गिण। सिजा 6 बज्या तक वापस धरम शाला पूबग्या। स्नान भोजन, वाजार भ्रमण र बाद रात्रि विश्राम कर्यो।

आगले दिन 29 मई न रेल सू राजगिर पूग्या। आ जाग्या पटना सू दक्षिण पूरब म 103 कि मी दूर है। प्रसिद्ध जैन स्वेताम्बर मदिर र सारे ई

64 मुळकता गिनल मोवणी धरती

इण मंदिर र ट्रस्ट री धर्मशाळा मे टिक्या । लाल पत्थर सू बण्यो ओ मंदिर स्थापत्य कला रो बेजोड नमूनो है । धर्मशाळा भी साफ सुथरी अर सुविधापूण है । राजगिर प्राचीन राजगृह रो बदळयोडो नाम है । बौद्ध अर जन धरम रो लूठो तीरथ है । राजगृह देस र पुराणा नगरा में भिणीज । पुराण शास्त्रा म ई रो नाम वृहद खण्ड पुर है । जन अर बौध ग्रंथा में इण रो नाम कुशाग्र पुर लिख्या है । महाभारत र महाबली जरासध री राजधानी भी ई नै ई मान । प्राचीन भारत म विम्बसार अठ रो मानीतो राजा हो, जक रो राज सगळे उत्तराद में फल्योडो हो । भगवान बुद्ध राजगृह रे कुणे कुणे में धूमता अर उपदेश देवता हा । विम्बसार रो पुत्र अजात शत्रु जन धरम री दीक्षा ली । भगवान महावीर आपरो पलो वखाण विपल गिरी री डूगरी माथे दियो ।

राजगृह रा प्राकृतिक वैभव भी कम नी है । अठ परवत श्रेण्या, गुफावा हरया भर्या वण, वन गगा, अर मधक रा गरम स्रोत आद औजू भी मौजूद है । दिनुगै 30 मई न धरमशाळा र दखण में 1 फर्लांग दूर प्राचीन वर्मा मंदिर रो दशन कर सडक मारग सू आगे भळ दक्षिण म 1 किमी री दूरी माथे सप्त धारा अर गरम कुण्ड रा झरना देरया । वरना में मधक रो सासो गरम पाणी बवे । इणा झरणा माथ दस बारह बडा बडा नावण घर बण्याडा है । बरस म एक बार कार्तिक मे अठ सातरो मेळो भरीज । सगळे विहार सू अठ जातरी आद । मुस्लिम सत मखदूम री तपोभूमि भी राजगृह ई रई । उण र नाम सू एक गरम झरणे रो नाम मखदूम कुण्ड है ।

ब्रह्म कुण्ड सू दक्षणाद मे ½ कि मी री दूरी पर सोन मडार री प्रसिद्ध गुफा है । वभव गिरी पहाड र दखणाद म थित इण गुफा न जन साधुवा बणायो । इ सू थोडी दूर दक्षिण पूरब में मणियार मठ रा अवशेष है जिण में हिंदू, बौध अर जन तीयू धर्मा री पुराणी मूरता मिली है । अठ मिट्टी रा जूणा वरतन भी मिल्या है । मणियार मठ रै कन विम्बसार री जेल रा चिह्न भी मिल । सम्राट विम्बसार न उण र जीवन रा अतिम दिना में अजातशत्रु बदी बणो लियो हो । इण कारागार में ई विम्बसार री मृत्यु हुई । खुदाई में

अठ ला री हथकडी मिली ही । इण सू आग गाति स्तूप र मारग में सडक र माड माथ मीय बाल र प्रसिद्ध वद जीवक रा आभ्रवन है । अनुमान सू जाणीज व इण वन भूमी में जडी बूटया रा भडार मौजूद हूसी क्या क उण दिना औपघ र क्षेत्र में राजग्रह रा घणो नाम हो ।

इतिहास सू आ भी जाणकारी मिल क बुद्ध काल में राजग्रह रो ससारिक बभव भी विशाल हा । आभ्रवन सू 1 कि मी पूरव में शाति स्तूप नामरो विग्यात जापानी मंदिर है । ऊची टूंगरी माथ अध चद्राकार गोळ चवूतरे पर भगवान बुद्ध री भय मूर्त्या आळा औ मंदिर जापानी सरकार र आर्थिक सहयोग सू बण्योडो है । जठ सडक सू मूर्ति ता पूगण वास्त बीजळी सू चालण आळा त्रानु माग भी है जिक म कुस या लागोडी है । इण पर बठ र आपी अधर म सिसक र ऊपर चालणो भी एक नूवो अनुभव है । उपर ताइ जावण रा पदल मारग भी है । भगवान बुद्ध र कल्याणकारी सदेशान फलावण ताई अशोक जिण धम्मधोप री घोषणा करी ही वा औजू ताई चीन जापान, बमा, थाइ देश वियतनाम कम्बोदिया आद देशा म गूज है । राजग्रह में निर्मित इण स्तूप सू आ सच्चवाई उदघोष करती दीस है । पदल इण सब स्थाना रा दशन करता सिद्धा पडगी । पाछा आवास ताई टुरया ।

31 मई री सुबह 7 बज्या नालदा वास्ते पैदळ रवाना हुया । नालदा राजगिर सू 13 कि मी दूर है । जाजकाल इण स्थान रो नाम बडगाव है । नालदा रो रस्तो हरियावळ सू भरयो है । गेहू री फसत घणी सी क तो कट गी ही पण काई कोई अज भी कणकन माहता दीस हा । इण क्षेत्र मे सिंचाई वास्त रहट रा कुआ अर खासा नळ रूप भी है । आम अर जामुन रा पड सडक माथ भी लाग्योडा है बोटया भी वेई जाग्या मिल । कट नीम, जगाक अर पीपल रा पेड वातायत में है । उपजाऊ धरती र कारण ग्रामीणा रा जीवन राजस्थान र गाव आळा सू सम्पन्न लाग्यो । गाव रा मकान भी पक्का बण्योडा है । करीब 3 1/2 घटा में यान 10 1/2 बज्या प्राचीन भारत री गौरव विद्यानगरी नालदा पूगग्या । राष्ट्रीय स्मारक र रूप में इ री चोखी देस

66 मुळकता मिनख मोवणी धरती

भाळ अर साफ सफाई राखीजै । खुदाई में मिल्या इण रा अवशेष पुराणी इमारता री विशालता अर दृढता री परिचय देव । भीता री औसार 2½-3 फिट चौडो है । सधाराम, मंदिर, विशाल चत्य अर केई छोटा बडा स्तूप खुदाई में मिल्या है । खुदाई में गुप्त काल री बौद्ध मूर्त्या भी निकली है । बिहार र खण्डरा में खास तरह रा चूल्हा भी मिल्या है ।

1951 सू बिहार सरकार प्राचीन विद्यावा रै अध्ययन अर अमुसधान वास्त 'नालदा पाली प्रतिष्ठान' री थापना करी है । नालदा री विश्व विद्यालय आज सू ढाई हजार बरस पला जाले ससार में परसिध हो । धम, दशन इतिहास अर याय शास्त्रा री अठ अध्ययन हूतो । आयुर्वेद, विज्ञान अर कतावा री शिक्षा रा भी जाछा परबन्ध हो । तिब्बत, चीन, जापान, कोरिया अर ल्वा ताइ रा छात्र भणण न अठ आता । जठ दस हजार विद्यार्थ्या र भोजन, आवास अर अव्ययन री यवस्था हूती । एक तरह सू आज र आवासीय युनिवर्सिटी रो सौ सरूप ई रो हो । जठ रा कुलपति शीलभद्र आख ससार में विख्यात हा । वा री अघ्यक्षता में अठ 1500 अध्यापक अर उपाचाय पढावता । आज विश्व री बडी सू बडी युनिवर्सिटी में भी इत्ता अध्यापक नी हव ।

इण विद्यालय में योग्यता र आधार सू ई प्रवेश मिलतो । मुख्य द्वारा माय नूवा प्रवेश प्रार्थ्या री परीक्षा हूती । द्वार पडित र सवाला री सतोप जनक उत्तर मिलणे सू इ विद्यालय में प्रवेश मिलता । छात्रा री ज्ञान पिपासा बुझावन बाळा तीन बडा बडा पुस्तकालय—रत्न सागर, रत्नभजक अर रत्नोदधि अठ हा । इण ठाम महावीर स्वामी 14 चीमासा कर्या । इण सू भी इण ज्ञान केन्द्र रो महत्व पता लाग । अठ अध्ययन वास्त चीन रा प्रसिद्ध याया रै अलावा तिब्बत रा विद्वान थोसिभोट भी पानवधन ताइ आया । तिब्बत र राजा थि सुग स्तन जाचाय शातिरक्षित न आपरे देस में जामत्रित कर्यो । विशाल दीप स्तम्भ दाइ इण विद्यालय र ज्ञान र आलाक मू देश देशातर आलोकित हा । भारत पान, विज्ञान अर आध्यात्म र क्षेत्र म जगत

गुरु हो, नालदा इण सच्चाई रो उद्घोष औजू कर । इसे स्थाना रा दशन कर आख्या री साधकता रो अनुभव हुव अर आत्मा री भूख तप्त हुव । इण अपूव स्थान रा लूठो आणद लेंता अर अतीत र सपना में डूवया दूणे हरप सू पावा पुरी रवाना हुया ।

पावापुरी भगवान महावीर र जीवण अर निरवाण सू जुडयो स्थान है । पटना-राची सडक माथ पटना सू 59 मील दूर दसणाद में आ जाग्या है । पावापुरी मंदिर र चारू मेर विशाल सरोवर है जक में नीला लाल अर सफेद कमल खिल्या रव । बीचोबीच मकराणे रो बडो भव्य मंदिर है । सडक सू मंदिर तक जाणे ताई लाल पत्थर रो पुळ है । मंदिर र चारू मेर सरोवर में पक्का घाट है । प्रवेश द्वार र सामें अर तळाव र दिसणाद दूजा मंदिर अर धरम शाळावा है ।

कार्तिक वदी अमावस न महावीर स्वामी रो देवलोक जाणे हुयो । इण वास्ते देस र कूणे कूणे सू भक्तजन अठ आव । घणी भीड रे कारण धमशाळावा में जाग्या न मिलणे सू अठ डेरा तम्बुआ री नुवी नगरी ही बस जाव । निर्वाणोत्सव में भक्ति गीत, हर जस अर पूजा रो विधान हूव । सिद्धा न दीप पव मना ईज । सगळे ससार न सत्य अहिंसा अचौय अर अपरिग्रह नाम र पंच महाव्रता रो आचरण जोग महान सदेश देणे आळे महामुनि री इण पुण्य भूमि रा दशन करणे र उपरात साय 7 वज्या बस सू पाछा राजगिर आ पूग्या ।

आगले दिन 1 जून न रेल सू गया ताइ रवाना हुया । गया दिल्ली हावडा रेल मारग पर स्थित है । पटना सू भी गया रेल सू जुडयो है अर दक्षिण भ 75 कि मी दूर है । अठ पूगणे में करीब घटो लाग । सनातन हिंदू धम में आस्था राखणिया वास्ते गया र विष्णु मंदिर रो भारी धार्मिक महत्व है । आपर पुरखा र श्राद्ध अर पिंडदान वास्ते लाखू सरघालु हर साल अठ श्राद्ध पक्ष में दूव । आडे दिना भी लोग अठ आवता ई रव । मंदिर वास्तु कला री

68 मुळवता मिनस मोवणी धरती

दीठ स् अनंत काल ताइ गौरव री गाथा गावतो रसी। मंदिर में भगवान विष्णु रा चादी सू मडयोडा पगलिया है। मंदिर में एक अनूठी 'सूरज घडी' है जकी प्राचीन भारत र ज्योतिष सम्बन्धी श्रेष्ठता री प्रतीक है। मंदिर र पिछवाड फल्गू नदी बवती ही। आजकल आ सूखगी है। नदी र पार दूजे कानी राम गया है। कवत है क राम चंद्रजी आपरे पिता दशरथ जी न अठ पिण्ड अरपित करयो। आज भी नदी र किनारे पिण्डदान करता लोग बठया दीख। म्हे बठ पूग्या ता एक हृश्य न देख'र दिल में घणो दुःख ह्यो। एक कानी तो पण्डा सरधाखु जिजमाना वन पिंड दान करा रिया हा और दूजे पासे वा सू थोडी ई दूर नदी म बेई मिनख री लावारिश लाश न कुत्ता अर कागळा नोच'र फफेडे हा। जठे मरे मिनखा री सद्गति रो कोई घणी धोरी नी हुव, बठ पितरा री मुक्ति किया अर कुण करासी? पण्डा री लोभ वृत्ति अर भोळा भारतीया री धम भीरुता कद सतम हूसी? गया में सूरज मंदिर अर शिव मंदिर भी देखण जोग ह।

गया सू 5 मील दूर उत्तर पश्चिम मे एक पुराणो डूगर है जकें ने प्रेत शिला कव। जठ एक अति प्राचीन मंदिर है जिण में यमराज री मूरती है। अठ भी श्राद्ध अर पिंड दान हुव। इण र नीचे राम कुण्ड है। भक्त जना न विश्वास है क भगवान राम खुद अठ पिण्डदान कर सिनान करयो। गया रा ब्रह्मयोनि परवत अर मदार परवत देवता देखता ककीलत प्रपात पूग्या। औ झरणो सुनर अर बेगवान है। अठ सब साध्या सागे सिनान करयो। गरमी सू निजात मिळण सू अर सुंदर मोवणे निजारे र कारण चढो आणद आयो। घटे भर री मौज भस्ती र बाद पाछा बस स्टेट आया अर बौद्ध गया री वस पकडी।

बौद्ध गया गया सू 7 मील दूर है। अठ भगवान बुद्ध निरवाण प्राप्त करयो। गौतम री साधना बोधि वृक्ष र नीच हुई। आज भी जठे अस्वस्थ रो बडो वृक्ष लाग्यो है। वृक्ष र पूव दिशा म 'महाबोधि बिहार' रो प्राचीन अर सुंदर मंदिर है। इण मंदिर री वास्तु कला तो अनूठी ई है। अतीत

15 वी शताब्दी र अतिम बरसा मे अठ यूराप र यात्री राल्फ फिच पटना नगर री सुन्दरता अर सम्पन्नता रा उल्लेख कर्यो है। अक्बर रै समय ताई एण जाग्या री हिंदू अर इस्लाम र तत्वा सू निर्मित ससृति खूब फळी फूली अर शांति अर स्थिरता अठ कायम हुई।

जिण मगध क्षेत्र न पौराणिक काल रा ऋषि, मुनि, रामायणकाल रा जनक सरीया प्रजा वत्सल राजा, मौर्य वंश रा अशोक महान, मानव कल्याण ताइ सत्य अहिंसा रो सदेश देणिया महावीर स्वामी जिसी विभूत्या री कम भूमि अर साधना स्थळी हूणे री गौरव प्राप्त है। इण रा दशन लाभ कर जीवन री साधवता रो अनुभव हुयो, पण औ विचार भी मन मै आयो क अतरी पावन भूम आज जात पात, ऊच नीच री सक्तीणता अर हिंसा री ताइव भूमि वण्योडी है। तिल मै घणो जवसाद हुयो क अपरिग्रह री जाग्या तस्वरी अर माणिया गुट री गुडा गर्दी रो अवसान कद हूसी ? हिंसे मे एक टीम उठी क आज भळ विहार ई नइ सगळे मुक्क न सत्य, अहिंसा अर सम्यक माग रो ज्ञान करणे घाळा बुद्ध अर महावीर री भळ जरूरत है।

गरबीलो गुजरात

गुजरात रो भारत र इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल सू ई औ क्षेत्र पश्चिम रा सुदूर देशा सू व्यापार व्यवसाय रो प्रधान केन्द्र हूणे सू सम्पन्न अर समृद्ध हो। प्रभास पाटन अर सोमनाथ र मंदिर रो सम्पन्नता रो चर्चा समुद्र पार ताइ फ्लोरोडी ही। इण प्रदेश में ई श्री कृष्ण रो राज नगरी द्वारिका, जन सम्प्रदाय रो सबसू बडो तीरथ पालीताणा अर पारसिया रो तीरथ उदवाडा मौजूद है। सुदामा जिसा ब्राह्मण प्रवर अर नरसी अर मीरा सरीखा भक्त अठ हूया। स्वामी दयानंद महात्मा गांधी सरदार पटेल आद धर्म प्रचारका समाज सुधारका अर राष्ट्र भक्त नेताका रो जन्म स्थली हूणे रो गौरव ईन ई है। अठ तीर्थल चोरवाड ऊभराड आद पयटका रा आकषण रा मुख्य केन्द्र सुंदर समुद्री किनारा है। दूज कानी गिरनार अर सासण गिर जिसा नामी अभ्यारण्य है। कपडे रसायन सिमेंट खनिज तेल रा विशाल आधुनिक कारखाना अठ है तो पारम्परिक खेती पशुपालन आदिवासी लोग अर लोक सस्कृति में रस्यो बस्यो पारम्परिक जीवन भी अठ देखण न मिल। गुजरात रो केई निजी विशेषताका है। अठ रा लोग शांति प्रिय, मिलन सार सहिष्णु अर अतिथि सत्कार करण आळा हूव। कृषि पशुपालन जर व्यापार र कारण इण म खासी सम्पन्नता देखण न मिल। इण गौरव पूर्ण प्रदेश र भ्रमण दगन रो आयोजन बणायो।

बीकानेर सू जोधपुर हू र अहमदाबाद पूग्या। स्टेशन साम जीवणे हाथ कानी एक धर्मशाळा है। बठ ऊतर्या। अहमदाबाद देश र बडा शहरा में एक है। औद्योगिक दीठ सू बीत महत्व रो गिणीज। अठ कपडे रो पचास्यु बडी बडी मीला है दवाया रा कारखाना भी बडी मात्रा मे है। अहमदाबाद

मैं पत्नी अर पति लायू मिल'र हाथ गाडा चलाता नगर री सडका माथ
 नीख । जीवन री गाडी रा इमा साथक वाहक और कठई नी मिल । मुगल
 स्थापत्य ग जीवत उदाहरण अहमदाबाद में जाग्या जाग्या मिल । नगर र
 निरमाण कर्ता सुल्तान जहमदशाह री वणायोडी जामा मस्जिद विशालता,
 अनुपात अर कलात्मकता री निजर सू भव्य रचना है । स्टेडान र क नई
 सद्दी मईद री मस्जिद है जक न झूलती मीनार भी कवे । इण मे दो मीनार
 एक समुक्त नीव वाले चदूतरे माथ इण कारीगरी सू वणीजी है क एक मीनार
 न दोयू हाथा सू जोर लगा र हिलाणे सू दूजी मीनार भी साफ हलती दीख ।
 सबडू साल पला वण्योडी हूणे पर भी औजू ज्यू री ज्यू खडी है । नगर र नेडे 4 5
 कि मी री दूरी पर 1451 में सुल्तान कुतुबुदीन री वणायोडी एग छोटी पण
 सुदर झील है । एण र तीचो बीच एक टापू माथ सुदमूरत वगीचा वण्या है अर
 नगीना वाली नाम से एक महल भी है । गर्मी मे सुल्तान अठे ठडी पौन अर
 हरियाळी रा आनंद लता । जाजवल अठ टावरा र क्रीडा अर मनारजन ताइ
 याल वाटिका भी वणा दी है अर जिनवरा रो छोटा सो चिडिया घर भी
 वणायो है । इण नीत न आजवन काकरिया झील कवे । गर्मी र दिना अठ
 राभी भोट अर रौनक रव । प्रगीचे मे वठण अर रोजनी री चोगी
 धवस्था है ।

गहर सू आठ मील दूर मग्नेज रोजा नाम री जाग्या है । जठ अहमद
 शाहू गग वग रो 1445 ई में वण्या मावरी अर गुजरात र प्रसिद्ध वादशाह
 महमूद शाह बेगरा अर उणरी बेगम रा मावरा भी है । अठ एक सुदर
 मस्जिद एग महल जर बेई चदूतरा है । इण इमारता में पत्थर री गुलाई अर
 पच्छीरारी रो बढिया काम है । सुदरता आकृति री निर्दोषता अर भव्य
 कारीगरी रो चोगो उदाहरण है सरग्नेज । पयटन विभाग र वग प्रसार र
 कारण अठे घणा गलानी नी आव । पुरातत्व विभाग री तर्प सू देग रोग अर
 सगई री धवस्था आणी है ।

कारीगरी री नजर मू मावग्मती र पूळ मू दूज गगी फोई 3 कि मी
 दूर गठ हर्भी गिह रो जन मस्जिद गित्त अर ग्यागय री चोगी वण्या है ।

मंदिर र द्वार, खम्भा, छात माथ बारीक तरास री काम है। फूल, पत्त्या अर विभिन्न आकार र डिजाइना सू शिल्प सज्जा री निखार और बढ ग्यो है।

गाधीजी रो सावरमती आश्रम अहमदाबाद रो नूवो मंदिर गिणीज। आ जाग्या बरसा ताइ भारत री आजादी री लडाई री प्रेरणास्थळी रयी। सावरमती नदी र किनारे शहर सू 7 कि भी दूर ऐवात वातावरण में आ वण्योडी है। अठ गाधी कुटी में वारो व्यक्तिगत कमरो अर मकान है ज्यू ई सुरभित है। सादगी अर सुरूचि सू गाधीजी र इस्तेमाल री सारी जि सा अठ प्रदशनी दाट राख्योडी है। सामण पास गाधीजी री अमरीकन शिष्या मीरा वेन री कुटिया है। डाव हाय न गाधी संग्रहालय है। संग्रहालय म गाधी र जीवन री बचपन सू मृत्यु पयत रा चित्रा री बाकी है। गाधी जी रो सम्पूर्ण साहित्य, उणा द्वारा सम्पादित पत्र पत्रिकावा रा अक उणा रा लिख्योडा राजनतिक पत्र ऐतिहासिक घटनावा माथ टिप्पण्या स कुछ अठ संग्रहीत है। ओ आश्रम वा पवित्र जाग्या है जठ मू 1930 में प्रसिद्ध नमक सत्याग्रह री डाडी यात्रा सरू हुई। आज भी उण प्रेरक राष्ट्रीय घटना सू देगवास्या री रगा में जीवट अर कुर्बानी रा भाव उमड पड है। इण स्थान रा दशन कर मन में घणे उमग उत्साह रो प्रवाह हुयो। अहमदाबाद मे भीड भाड र बावजूद चोरी जारी अर गुडा गर्दी देखणे में नी आव। साधारण लोग सहयोग अर भाई चारे रो व्यवहार कर। नारी जाति नै अठ बडे सम्मान अर श्रद्धा सू देस। सम्बोधन में 'वेन' रो प्रयाग कर। स्त्री शिक्षा रो भी अठ खासो प्रचार है अर स्त्रिया र जीवन में खुलेपण अर गालीनता रा दशन हुव। दूजा प्राता र वास्त आ विनेपता अनुकरण जोग है।

अहमदाबाद सू रेल सू सौराष्ट्र क्षेत्र मे दग्निणी पूर्वी समुद्री किनारे माथ स्थित भावनगर पूग्या। तस्तश्वर धमशाळा में ठहरया। अठ गाधी स्मृति नाम रो संग्रहालय गाधी जी र जीवन सू सम्बन्धित सामग्री रो विपुल अर चोखो मण्डार है। गाधी जी र प्रति यू तो सगळे देग में ई सरघा रो पूज्य भाव है पण इण क्षेत्र में ता वारी देवता दाइ प्रतिष्ठा है। भाव नगर

प्राचीन बदरगाह भी है। समुद्र र बने मछुआरा री नावा री लम्बी बतार सोवणी लाग। मछली पकडने रो घघो भी अठ काफी ह्य।

भावनगर सू पालीताणा 47 कि मी दूर है। रेन मू अठ पूज्या। रेन्वे स्टेशन र बन पथिक आश्रम' में ठर्या। पालीताणो जन घम रो लूठो तीरघ है। हरिद्वार, कासी प्रभाग दाइ औ भी मदिरा रो नगर है। कुल मिना'र अठ 863 अत्यन्त कलालक मदिर है। शिल्प अर म्धापत्य रा इत्ता गुन्तर जूणा मदिर इत्ती घणी सरया में बेई दूजी एवली जाग्या नद मिल। पालीताणा सौराष्ट री शत्रु जय पहाडी री पगतली में वस्योढो है। बेई पुराणा जन मदिर तो मकराणे मू वप्या है ऊचे पहाड माथ। सूर्यस्थि पछ पुजारी भी नीचे वस्ती में आ जाव अर इण मदिरा में केवल दवता निवास करे। इण सब मदिरा रा निरमाण 900 साला री लम्बी अवधि मे ह्यो ह। औजू भी नूवा मदिर बणताई रवे। जन घम न मानण वाळा भक्ता री आ भावना रव क जीवन म कम सू कम एक वार रेन मदिरा रा दान जरूर कर। इण वास्ते अठ बरम भर जातरया रो तातो लाग्यो रवे। देश भर रा जनी मदिरा र नव निर्माण खातर भी काफी दान अठ देव। ऊचे पहाडा माथ मदिरा रा जनक शिगर सगमरमर माथ सूरज री किरण री चमन मू इन्द्रलोक री सी जाभा छिटकाता दीर्म। अठे र मदिरा में रत्नाभूषणा रो भी अमोल मडार है। आनन्द रो 'कल्याण जी टण्ट' इण री देखरेप कर। बी री अनुमति सू अ जाभूषण जर रत्न यात्री देख सक। आखे भारत में अमण करण आळा याया न भी आ बात अवश्य अनुभव हुव क जन लोगा देश न प्रस्तर शिल्प रें जड्वितीय मदिरा री विशाल धरोहर मेंट दी है। देलवाडा गिरनार, रणनपुर शिखरजी, पावापुरी रा विश्व विख्यात मदिर ई सच्चाई रा गवाह है। पालिताणे री मूर्त्या री अनूठी भावमगी मदिरा में पत्थर न काट तराश र वारीक जाळी रो काम अर कलापूण खम्भा रो कारीगरी आद न देखता इ जाव ता भी जी नी धाप। वास्तव में पालीताणे री कला रो दशन एक जनावा सुखद अनुभव है।

पालीताने मू यस द्वारा जूनागढ गया । जूनागढ अठ सू दक्षिण पश्चिम म गिरिनार पवत री पगतली मे उतराध में स्थित है । लगभग 80 कि मी री आ दूरी 2 घटा म पूरी हूगी । दातार रोड र ट्रिस्ट हाउस म ठहरने री व्यवस्था हुई । रस्ट हाउस साफ सुथरो अर सुविधापूण है । जूनागढ नगर रो इतिहास काफी पुराणा है । ई पू 250 में अशोक पाली लिपि में चटटान माथ खुदवा र 14 शिलालेख लिखवाया । पुरातत्व री दीठ सू आ गिलालेखा रो घणो महत्व है । अठ राजा रुद्रदमन रा 150 ई में खुदवायोडा सस्कृत रा शिलालेख भी है । राजा स्कंदगुप्त भी 1454 इ मे अठ शिलावा माथ लेख खुदवाया । इण स्थान सू 1 कि मी दूर साढे तीन हजार फुट ऊँचो गिरिनार पवत है । गिरिनार पहाड माथ चढण न पगोधिया बण्योडा है । लोग जा री सख्या दस हजार बताव । जा चढाई सीधी खडी जर दोरी है । गिरिनार जन धम रो बडो प्रसिद्ध तीरथ है । अठ सगमरमर र पत्थरा रा विंगाल भय अर कलात्मक खुदाई आळा अनेक भात री शिल्प शली रा सुदर मदिर है । बेई बावडया अम्बा माता रो मदिर अर पहाडी र शिखर माथ दतात्रेय रो मदिर है । इण स्थान पर दतात्रेय रा पगलिया माथ एक छतरी बण्योडी है । इण शिखर सू दूर दूर ताई रा प्राकृतिक मनारम दृश्य दीस । खासो ऊचो डूगर हूणे सू स्वच्छ तेज हवा चात् । सगळा अठ आ र ताजगी रो अनुभव करे । म्हान चढाई चढण मे अर मदिरा रा दशन वरण में 4 घटा लाग्या ।

गिरिनार पहाड र बन सासण गिर नाम रो विख्यात जभयारण है । इण जगल में शेरा री बडी सरया है । आखे ससार में अफ्रीका अर गिरिनार आ दो र जगला में इ सिंह मिल । दूजा ठामा म नाहर तेंदुआ चीता आद शेरा री दूजी जात्या मिल । जगळ र राजा न नडे मू स्वतंत्र अर खुल्लो विचरण करता देखणो रूगटा सडा वरण आळो अनुभव है । अठ बंद माटर गाडी मे पयटवा न बठावें अर सिंह खुल्ला विचरण करे । जतु शाला दाइ सिंहा न बंद पिंजरा री बंद में नी रणो पड । जगल रो वातावरण भी प्राकृतिक है । जगली घास पेड पौधा री बौळावत अर जाग्या जाग्या पाणी पीणे री सुविधा उपलब्ध है ।

अठ जगल र बीच जाराम करण न सरवारो वगला भी है। म्हे लोग कई ठाम इका दुक्का अर केई जाग्या 5/7 र झुण्ड में भी सिंहा न देख'र वीत रोमांचित हुया। छाटा बच्चा तो इण दृश्य सू दहल तक जावै। एक साथी पयटक, उण री पत्नी अर दो बच्चा साथै हा। व दो-यू आपरी मा र आचल सू डर र कारण चिपकग्या। खासी देर बाद समझणे बहलाणे अर दूजा लोगान वाता करता देख'र व स्वाभाविक हा सक्या।

गुजरात री यात्रा सासण गिर र देरया बिना अधूरी है। कपो कँ सासण गिर रो जगल 500 वग कि मी में फल्योडो है इण न रक्षित वाहन र बिना देखणो सम्भव नी है। सिंह र जलावा अठ भालू, केई तरह रा हिरण, साभर जगली सूअर आद भी है। अक्टूबर र महीने सू मई जून तक इण न देखणे रा आदश समय है। जूनागढ र दशनीय स्थाना में नरसी जी री मंदिर भी उल्लेख जोग है। इण री मानता अठ र साधारण धम प्राण लागा मै घणी है। राजस्थान में मीरा रा भक्ति रा पद ज्यू आम आदमी न कठस्थ रव उण भात ही नरसी भगत रा पद गुजरात मे सामान्य जन र कण्ठा माथ रवै।

सोमनाथ र विश्व विख्यात मंदिर का दशन करण वास्तू जूनागढ सू रेल द्वारा बेरावल स्टेशन उतरणो पड़। स्टेशन र नजदीक थोराम धमशाळा म ठहर्या। प्रभास पट्टन में थित सोमनाथ री मंदिर धार्मिक अर ऐतिहासिक दो-यू दीठ सू महत्वपूर्ण धाम है। सौराष्ट्र र पश्चिमी सुमुद्री किनारे माथ औ अत्यंत प्राचीन मंदिर है। जी स्थान बर्दिक काल में भी विख्यात हो अर महाभारत में भी इण रा उल्लेख मिल। पाण्डवा इण जाग्या जा र भी तप कर्यो हो। श्री कृष्ण अर बलदेव री तपा भूमि भी आ गिणीज। सोमनाथ र मंदिर रो केई वार निर्माण हुयो अर केई वार इ रो जीर्णधार हुयो। सोलकी वश रो राजा भीमदेव जद पाटण री गद्दी माथ हो विण सोमनाथ र कीर्तिवान मंदिर रो जीर्णधार करायो। इण रो अलौकिक बभव दूर दूर तक फल्या हो। प्रसिद्ध साहित्यकार बे एम मुशी र जय सामनाथ में इण मंदिर री सम्पन्नता रो प्रभावपूर्ण चित्रण है। मंदिर री मूर्ति, कळश अर घटो साने

गरबीलो गुजरात

मू वष्या हा । पूजा में नृत्य रागीत रा त्रिधान हूतो । मकडू नतक्या रा पापण मदिर भडार मू किया जाता । महमूद गजनवी 1024 ई म सामनाथ पर हमला कर'र ईन छूटयो अर मदिर न घ्वस्त पर दिया । भीमदेव फेर इ रा उदार करया । मदिर र लम्भा अर पत्थरा पर नक्शाशी रा मुन्टर काम हा ।

मैकडू वरसा वाद स्वतंत्र भारत म इण मदिर री जीण अवस्था दग र अठ फेर नूवा मदिर निर्मित हुया । इ र नव निर्वाण रा गिलायाम भारत र प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेंद्र प्रसाद जी र कर कमला सू हूयो । मन्त्रि स्वत सगमरमर रो है अर कलात्मक हिन्दू स्थापत्य रो नमूनो है । मदिर रा मुख्य भाग खासो ऊचो है । अदर जठ शिवालिंग प्रतिष्ठित है वो प्रागण काफी चौडो है । शिवालिंग बाळे पत्थर सू निर्मित है अर भूमि सू 3 फिट र करीब ऊपर प्रतिष्ठित है । चारू मर स्वत पत्थर री चौडो जलेरी है । इण पर पीतळ र पात्र सू दुग्ध मिश्रित गगा जल रो स्वत जपण हूतो रवे । ठीक समुद्र र किनार निर्मित हूणे सू इ री भव्यता और बढ जाव । अठ समुद्र विकराल रूप दिखाना लहरा रो उछाल 30 40 फुट ऊचे ताइ ऊपर उठ अर मदिर री सीढया सू टकरा र पूठो घूम । समुद्र भगवान शिव र चरणा रा प्रक्षालन करता दीस । कव क भगवान श्री कृष्ण अठ पार्थिव शरीर छोडयो । अठ ई वा री अन्तेष्टि हुई । जठ अन्तेष्टि हुई बठ कपिला हरिण अर सरस्वती रा सगम है । यात्री अठ भी आता ई रव ।

वरावल सू बस द्वारा पोरबंदर जाया । अठ रेल मार्ग सीधो कोनी । जतलसर घूम र आव । सरदार वल्लभ भाई राड पर जतपूर्णा लाज में रक्या । पोरबंदर सीराष्ट्र र पश्चिमी तट पर सुंदर बंदरगाह है । अरब देशा रो काफी माल असबाब अठ सू आव जाव । पोरबंदर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी री जलमभूमि होणे सू आज एक नूव धाम दाइ मानीज । गांधीजी र घर न गांधी स्मृति मदिर नाम सू सावजनिक स्मारक दाइ दशन वास्ते खुलो कर दियो है । पोरबंदर रो जूणो नाम सुदामा पुरी भी बज । कव क श्रीकृष्ण रा बाल सखा सुदामा इण नगर रा ही वासी हा । अठ सुदामा जी रो एक

मंदिर भी है। दुख की बात यह है कि जिण जाग्या भारत की इसी विभूत्या रो जलम हुयो आज बठ तस्वरी अर गुडागर्दी रो बोल वालो है। सौराष्ट्र रो समुद्र तट भारत र केई दूजे प्रात सू बडो है। इण रो लाभ उठा र असामाजिक तत्व राजनतिक सरक्षण में जाधिक अपराधा में स्वाय अर लालच र कारण सलग्न है।

पोरबंदर सू यात्रा र अंतिम पडाव भारत र चारु धामा में एक अर श्री कृष्ण की राज नगरी द्वारका वस द्वारा पूग्या। अठ मारवाड्या की देवी भवन नाम की धमशाळा में ठहरया। बडो तीरथ हाणे कारण अठ लाज होटल अर धमशाळावा की कमी कोनी। पारबंदर सू जा जाग्या 225 कि मी दूर है। करीब 7 घटा अठ पूगण में लाग्या। द्वारिका पश्चिमी समुद्र सू भारत रो द्वार मानोजतो। द्वारिका नाम स भी इण की पुष्टि हुव। श्री कृष्ण आपर जीवन र उत्तर काल में मथुरा सू जठ आ र आपरी राजधानी वसाई। स्कंद पुराण मत्स्य पुराण, विष्णु पुराण, हरिवंश पुराण अर भागवत पुराण जिंसा धम ग्रथा में श्री कृष्ण की लीला अर द्वारिका रो सागोपाग वणन है। उण दिना आ समृद्धि अर सम्पन्नता की विख्यात नगरी ही। अठ दूध दही की प्रचुरता ही। आ विशेषता तो जीजू भी अठ दीख। कवे क कृष्ण जी वदावन सू अठ आया ता वारे साथ ग्वाला भी अठ पूच्या। द्वारिका मूलत यादवा की नगरी ही। आज भी गुजरात रो सौराष्ट्र क्षेत्र गाय भसा र सार आजीविना चलावण आळी - भरवाड रवारी, गूजर आदि जात्या रो निवास है। भारत की सबमू ब्रेमी दूध देणेआळी गाया गुजरात की ही है। महसाना जाफरावाद अर आनंद दुग्ध उत्पादन खातर मशहूर है।

अठ रो जगत विख्यात द्वारिकाधीश रो मंदिर स्टेशन सू दा कि भी दूर स्थित है। ओ चार पवित्र धामा मे एक गिणीज। मंदिर प्राचीन, विशाल अर कलापूण है। मंदिर र लार समुद्र रो पाणी लहरा साथ आ जाव। दिन भर समुद्री लहरो र ज्वार भाटे र भुजीव पाणी उछाळा लेतो रवे पण हर रात राणी समुद्र में भाटे र कारण सुत र पाछो जाव परो। जका यानी दिन में अठ

स्नान कर रात में वी जाग्या न पाणी सू रहित दग्ग'र अचरज में डूब जाव । पाणी र नित उतार चढाव र कारण समुद्र री सीप्या, कौडया शल आद अनगिनत सरया में बिखरया पडया रव । यात्री आपरी पसद र अनुसार आन भेळो कर र साथ लाव । जी कौतुक दिन भर चालतो रवे ।

द्वारिका में रणछोडराय जी रो मंदिर भी जग प्रसिद्ध है । औ मंदिर 110 फुट ऊचा प्राचीन अर सु दर वारीगरी आळो है । वताव क श्री कृष्ण र पौत्र व्रजनाभ इ न वणवायो । औ मंदिर भी मूर्तिभजका द्वारा बार बार ध्वस्त हुयो । पाचवी सदी में गुप्त राजावा ई न वापस वणवायो । 1460 ई में महमूद बगडा भळ मंदिर न लूटयो अर तोडयो । अग्रेजा र वसत गायकवाड र राजा इण रा जीर्णोधर करायो । इण र अलावा भादवेश्वर मंदिर अर स्वमणी मंदिर भी देखण जोग है । द्वारीकाधीश मंदिर सू कोई 4 कि मी दूर आदि शकराचाय द्वारा वणवायो गयो शारदापीठ मठ है । ज्या काची शृंगेरी आद शकराचाय रा पीठ है उण तरा औ भी शकर री गद्दी रो स्थान है अर सनतान भक्ता री पुण्य धार्मिक स्थान मानीज । द्वारिका र वन ओसा बदर गाह सू समुद्र में टापू माव भेंट द्वारिका है । अठ भी श्री कृष्ण रो प्राचीन पौराणिक रयात रो मंदिर है । देश र कुणे कुणे सू कृष्ण भक्त जठ आव ।

वस्णवा री द्वारिका तीरथ शब भक्ता रो सामनाथ, ज या रो पाली ताणा अर पारस्या र उदवाडा आळो गुजरात देश रो महत्वपूण प्रात है । देश री भावात्मक ऐकता रा दशन गुजरात में हुव । गुजरात्या में प्रादेशिक सक्तीणता नी हुव । व आपन भारत वासी पला गिण जर गुजराती पछ । अठ रा श्रेष्ठ कवि उमाशकर जोशी गुजरात री इण विशेषता रो वणन करता लिख- हू गुजर भारत वासी । सब धम सम, सब धम मम, उर ह रहो प्रकाशी ।' इण सब विनेपतावा सू युक्त गुजरात रा दशन कर घणो जान द हुयो जर लाव गीता री भावना मुजीव म्हारे कण्ठा सू आदर भाव रो स्वर व्यक्त हुयो - जय जय गरवी गुजरात ।

शिल्प अर कला रो खजानो-अजता एलोरा

भारत र इतिहास मस्कृति अर कला र क्षेत्र म मराठवाडा रो उल्लेख जोग स्थान है । महाराष्ट्र सता, समाज सुधारका, योद्धावा जर कला सजका री भूमि है । नासिक, नादेड, दण्डकारण्य, पचवटी आद पवित्र धाम अर गोदावरी ताप्ती, नमदा, वृष्णा जिसी नद्या इण क्षेत्र री पावनता री घोषण करै । एके कानी तुकाराम, नामदेव, ज्ञानेश्वर अर समथ गुरू रामदास आद सता भक्ति री अखण्ड भाव धारा बवा र आध्यात्म अर धर्म री गंरी जडा जन मानस में रोपी तो दूज कानी रानाडे, आगरकर विनावा अर कर्वे जिसा समाज सुधारका महाराष्ट्र रै सामाजिक सांस्कृतिक जीवन मे ब्रातिकारी चेतना रो प्रवाह बवा'र इण ननुवे भावा विचारा अर करमा सू सवारयो । छतपति शिवाजी महाराज, नाना फडनवीस जर तात्या टापे जिसा सूर सिरोभण्या री आरगभूमि रही तो आधुनिक भारत में आजादी री अलख जागावणिया तिलक, गोखले, सावरकर जिसा महान नेता भी अठ ई हुया । इण नमण जाग भूमि री एक विशेषता है प्राचीन जर जर्वाचीन रो सातरो सम वय । सिंहगढ, पहाला, जजीरा रा जूणा किला अठ है तो बम्बई, पूणे जिसा अत्याधुनिक महानगर भी अठई है । पारम्परिक खेती रो जौ विशाल क्षेत्र है तो चीनी, कपड और तेल शोधन रा बडा बडा कारखाना भी अठ खडया है । भय चित्रा सू माण्डयोडी प्राचीन कलात्मक गुफावा अठ है तो ट्राम्बे जिसा आणविक वज्ञानिक स्थल भी है । इति विविधतावा एक जाग्या नी मिल । इ सातर इण र परतख अमण दशन रो कायत्रम वणायो ।

रेल सू जोधपुर अहमदाबाद हूर बम्बई पूग्या । अठ रो विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन यूनानी शिल्प मै वणी पत्थर री भय, सुघड अर देखण जोग

इमारत है। बार सूता आ बड़े महल दाइ लाग। एक परिचित न पला सू
 वागद दे र सूचना कर दी हो। ब स्टेशन पूगया। बालवादेवी म सीपी टक
 नामक मुहल्ले म 'मारवाधी घाटी' नाम सू एक साफ सुथरी आधुनिक
 सुविधावा आळी आळी धरमगाळा म नमरा आरक्षित करायोडा हो। सुबह
 7 बज्या बम्बई पूगया हा। धमगाळा म सामान राग, स्नान आदि र उपरात
 तयार हू र 10 बज्या दशनीय स्थाना रे भ्रमण ताइ निकळया।

बम्बई रा पुराणो नाम मुम्बई हा। मराठी म आई मा न बवे अर
 मुम्बा अठ री अधिष्ठात्री देवी रो नाम हो। बारवी सदी री नपाली पुस्तक
 दाकानोव में भी इण स्थान पर मुम्बा देवी र मंदिर हूणे री बात लिखी है।
 देसी अर विदेशी पयटवा र वास्त बम्बई बडे भारी आकषण री जाग्या है।
 सबसू पला गेट वे आफ इण्डिया गया। बालवा देवी सू औ 3 4 कि दूर
 अपोला बंदर माध बण्यो है। 1911 ई म जाजपचम जर राणी मरी र
 स्वागत में इणन बणायो। लाल पत्थर रा ऊँचो सुहद दरवाजो अरव सागर
 रे ऊपर है। इण र डाव यानी लार बम्बई ई नही जाखे भारत रो परसिध
 होटल ताज री भव्य इमारत है। अपोलो बंदर र उत्तराद रो इलाको फोट
 र नाम सू गिणीज। बम्बई रो अति आधुनिक रेल स्टेशन चच गेट अठ ई
 है। चच गेट स्टेशन भारत र सबसू सुदर स्टेशना म सू एक है। 3 3 मिनटा
 पछ विजली री तज गति रो गाडया अठ सू जावती अर जठ पूगती रवे।
 विजली री लिपटा अर इल्ट्रोनिक्स सू गाडी री पूग रा समय बतावण आळी
 घडया जाग्या जाग्या लागोडी है। जठ खडा हू'र ग्रमीण लागान तो दूजे
 देश मे पूग जाणे रो भरम हूव।

चच गेट सू प्रिंस जाफ बल्स म्यूजियम देखण न गया। इण में पुरातत्व
 प्राकृतिक इतिहास अर कला री चीजा रा जळायदा जळायदा विभाग है। इण
 री ऊपर री मजिल में चित्र कला री प्राचीन शीलिया रा चोखा नमूना
 प्रदर्शन खातर रारयोडा है। राजस्थान री बूदो, बिसनगढ अर बीकानेर
 चित्र शली रा बहुमूल्य जर अप्राप्य चित्रा न देख बडी खुशी हुई। हल मछली

रो खासो बडो अवशेष अर दुल्भ पक्ष्या रा नमूना अठ री विशेषता है। बम्बई रा तारापोरवाला मछलीघर भी सलाय, वास्ते आकषण री जाग्या है। भात भात री छोटी बडी रंग बिरंगी मछल्या नै बडी व्यवस्था सू प्रदर्शित करयो गयो है। मरिन लाइन जर मलाबार चौपाटी रो समुद्री किनारो भी मन मावणो है। समुद्र सू दक्षिण में ऊपर पहाडी ढलाण माथ सकडू किसम रा पेड पीघा आळो सुदर है गिंग गाडन है। ई र कन ई 1952 में नेहरू जी री पत्नी कमला जी र नाम पर उणा री याद में बण्या कमला नेहरू बाग है जक में फवारा, सुदर पुळ अर परी कथा र जूत र आकार रो बच्चा रो इकमजिलो खेलघर है। बम्बई रो महालक्ष्मी मंदिर अर समुद्र र बीच बणी हाजी अली मसिजद भी दशनीय धार्मिक स्थल है।

आगले दिन सुबह जाठ बज्या गट वे जाफ इण्डिया मू 9 कि मी दूर मोटर सू चालणे वाले लाच में बठ र समुद्र र बीच स्थित प्रसिद्ध एलिफैंटा द्वीप पूग्या। गेट सू अठ ताइ पूगण मे 20 मिनट लाग्या। विक्टारिया गाडन म राखयोडी हाथी री मूरती पला अठ ही, जिण र कारण 15 कि मी जाळे इण द्वीप रा औ नाम पडयो। औ द्वीप इण गुफावा में बण्या मंदिर अर उणा री सुदर कलालक मूरता र वास्ते सिगळे ससार में मशहूर है। विक्षेप रूप सू इण री निर्मूति आपरी सजनकल्पना र कारण ससार में पलडे दर्जे री कला कृत्या मे स्थान पाव, इण गुफावा मे सातवी सदी री शिव पारवती री केई चित्ताकपक मूत्या है। मुख्य गुफा म बडता इ गगाधर शिव री भव्य मूरती दीम। जीवणे पासं शिवजी ताण्डव करता दीख। शिव पारवती री अठ नौ मूरता है जिकी स री स जत्यंत अकपक अर कलात्मक है। यू तो बम्बई मे जोगेश्वरी, काळी जाद केई गुफावा आपरी मूर्ति शिल्प वास्ते प्रसिद्ध है पण समयभावर र कारण इण सब न नी देख सक्या।

बम्बई सावभौम सस्कृति रा यवाथ मे 'कास्मोपोलिटिन' नगर है। इण म बडो सरया में हिंदू, मुस्लिम पारसी, इसाई, बौद्ध, जन जर दूजा धर्माबिलम्बी बस। मध्य अरब र देसा और इग्लण्ड अमरीका सू समुद्री माग

सू जूड़यो हूणे सू अठ विष्णो नागरिक, विदेशी रा वडा-वडा बक अर औद्योगिक प्रतिष्ठा आद है। भारत र मराठी अर गुजराती लागी र अळावा गोवानी, मारवाटी, पावणी, मुग क्षेत्र रा वासिण अर दक्षिण भारत रा लाग बडी तादाद में अठ रव। अठ सक्डू बो-या अर भापावा रा प्रयाग हूव। इतिहासवार पत्नीन लिम्यो है कं दुनिया रा कोई नगर इत्ता घर्मा जाल्या अर विचार धारावा रा प्रतिनिधित्व नी कर जितो क बम्बई। इण वास्त ई सरदार पटेल बम्बई न छाटा भारत ई करता।

बम्बई सू एलरा देगण जावण ताई जवतपुर रेल मारग पर देवलाल सू आगे मनमाड स्टेगन आव। अठ हैदराबाद लागन री दूजी गाडी पकड र औरगाबाद जाणो पड। अठ सू एलोरा 28 कि मी दूर है। एलारा सहयाद्रि पवत माळा र छेडें एक छोटी डूगरी र ढाल माथ है। एक समूळो पाहडी न वाट र गुफावा बणाई है। इण म कुल 34 गुफावा में 16 हिंदू मंदिर 13 बौद्ध मंदिर अर 5 जन मंदिर है। अ मंदिर शिल्प कला री दीठ स आद्वितीय ता हैं ई धार्मिक सहिष्णुता अर सह आस्तित्व रा भी जीवता जागता नमूना है। पयटक विद्यार्थी कला समीक्षक जर सौंदर्य प्रेमी स न एक सरीसा आकषित कर। एलोरा री गुफावा अजता र वाद बणी है। इण रा निरमाण काल ई सन 300 सू 1300 ताइ मानीज। पण आ र चित्रा अर मूरता में गति अर अभिनय रा भाव अजता सू बसी कलापूण है। एक अतर औ है क अजता म खाली बौद्ध धर्म रा मन्दिर है जद क अठ तीयू धर्म रा। इ कारण एलोरा हमशा तीथ बण्या रयो, पण अजता सक्डू बरसा ताइ उपेक्षित रया अर काल री मिट्टी तळ दब'र खाम बरसा ताइ गुमनाम हूयग्यो।

एलोरा री कलाग मंदिर स सू बडा अर भव्य है। इणगे निरमाण राष्ट्रकूट राजा कृष्ण जाठवी सदी मे करायो। एक पूरी चट्टान न 80 मी लम्बी अर 50 मी चौडी खोद र एक बडे खाडे म इण विशाल मंदिर न बणवायो हो। 2 लाख टन र बजन री चट्टान न वाटने जर इसे अद्वितीय मंदिर र

वर्षाणो में सो वरस लाग्या। मदिर री लम्बाई 42 मीटर, चौडाई 18 मीटर अर ऊचाई 30 मीटर है। मदिर रा द्वार, गोवा पगोधिया अर खम्भा माथ खुदाई रो इण ढग रो आकपक काम है क मन चकित अर मुग्ध र जाव है। इण मदिर में तीन मण्डप है जिण में प्रतिमावा र माध्यम सूवयालीस धार्मिक दृश्य अकित है। स एक एक सू वढकर नायाव। रावण द्वारा बैलास न उठाणे रो अर त्रिपुर दाह रा दृश्य तो घणा भावपूण जर सजीव है। पत्थर सू तराशयोडे महान दीप स्तम्भ री टक्कर रो दूजो स्तम्भ ससार र और कोई देश में नी मिल। ऐलोरा र दूजे हिंदू मदिरा में शिव पारवती व्याव, नरसिंह अवतार मारकण्डय उद्धार भरु री मूरती अर इन्द्र इन्द्राणी री प्रतिमावा दीत भव्य अर गरिमा आळी है।

बौद्ध गुफावा में 10 न रो गुफा महायान भवन निर्माण कला रो ज्ञानदार नमूनो है। इण र स्तूप म भगवान बुद्ध री एक विशाल प्रतिमा टाच र बणायोडी है। पाचन रो गुफा में बिहार है, जक री ऊचाई 40 फुट र नेड है। 12 न रो गुफा में तीन मजिल है इण सू ईन तीन तल कवे। इण र एक तल म बुद्ध री प्राणायाम करती आकपक मूरती है। ओ बिहार आकार री दीठ सू देश रो मवसू वडो बिहार है।

जन गुफावा कलाश मदिर सू एक वि मी अळगी है। इण में इन्द्रसभा और जगन्नाथ सभा विशेष रूप सू देगण जोग है। वेई कला पाररया री राय में इन्द्र सभा री ऊपरली मजिल रो शिल्प ऐलोरा में स सू अनूठो है। जिण पहाडी पर जन गुफावा है उण माथ तीथकर पारसनाथ री 5 मीटर डीगी मूरती भी उत्कीण है। आज सू हजारू वरम पला जद विज्ञान अर तकनीक रा उ नत साधन विद्यमान नी हा हजारू लाखू टन पत्थरा न हाथ सू खाली छणी हथोडे जिस्त ओजारा सू तोडनो ई नइ बान सुदर कलात्मक मदिरा रो आकार अर भव्य मूर्त्या रो निर्माण करण आळा कलाविदा रो धय जर कारीगरी विस्मित करणे आळी है।

ऐलोरा गू वग म पूठा औरगावाद आया । अठ गू अजता वस में ई गया, रेन अठ ताइ ती पूग । औरगावागू गू अजता 100 कि मी दूर है । अजता ती गुफावा विश्व ती सर्वोपरि गुफावा में गिणीज । जद आधिनाग मसार जगळी क अघ जगती अवस्था में रती उण दिना में भारत वास्तुवला, चित्रवला अर शिल्पवला में पारगत हा, आ बात अजता गू सिद्ध ह्य । इण गुफा मन्दिर रा निर्माण ईसा र जन्म गू 400 वरस पला गू ले'र 700 ई वाद तय ह्यो । अजता ती भीता पर जवा चित्र अरित है, वा रा भाव आश्रत्या अर परिप्रेक्ष्य अत्यन्त अगूठा है अर दो हजार वरसा वाद भी वा रा रग अर चमक प्रभावित कर है ।

अजता ती गुफावा में भी मह्याद्रि पयत माथ 80 मीटर ऊंची चट्टान न पूरव गू पश्चिम ताइ एक तिहाई कि मी ती दूरी ताइ अघ चद्रावार सुदर घेरे म वाट र इण में बिहार चत्य आद बणाया है । डाइनामाइल र आविष्कार र राद भी इण तरा ती सुदाई में जोर आय, ती बिना आधुनिक उपकरण ती उपलब्ध र तराशगिरी ती स्तो वलात्मक वाय आज र यात्रिक युग में भी अजूबो ई मानीज । अजता गुफावा में अनक वलावा ती सगम है अर प्राचीन वला जगत में अ बेजोड है ।

पहले नम्बर ती गुफा महायान वास्तुवला ती अनायो नमूना है । इण ती भीता अर छात माथ भारत रा पुलबेशन द्वितीय ईरान र गुसरो द्वितीय अर वारी राणी शीरी ती आप रे राज्य में स्वागत करता दर्शाया है । इ र अलावा कुमार महाजनक र राज्याभिषक उठता ग घव अर अपसरा अर पद्मपाणि बुद्ध ती अलवृत्त मूरत्या है । दूज न ती गुफा में चोसा भिति चित्र है । चार नम्बर ती गुफा ती बिहार अजता ती सबसू बडो बिहार है । ती नम्बर ती गुफा हीनयान शिल्प ती उत्कृष्ट उदाहरण है । आ अजता ती सबसू पुराणी गुफा है । जा ईसा र जन्म गू सकडू वरस पला बण चुकी ही ।

अजता र शिल्पया अर चित्रकारा आपरी सगळी प्रतिभा सोळहन ती गुफा ती रचना म लगा दी । इण म एक राजकुमारी र मरती बेळा ती

कलात्मक चित्र बौद्ध मूल्यवान है। गिफ्थ नाम की कला समीपक कवे है कला र इतिहास में औ चित्र अपूर्व है। करुणा र भाव न व्यक्त करण में शायद ही विश्व र केई चित्रकार न इत्ती सफलता मिली होसी। सनह न की गुफा र चित्र में यशोधरा बुद्ध न राहुल कानी इशारो करती देखाई है। औ चित्र बडो सोभाविक लाग। उगणीसवी गुफा में नागराजा की सपत्नीक मूर्ति है। जिकी अत्यन्त भव्य है। आ गुफा बौद्ध बाल र सब सू उत्तम स्थापत्य अर शिल्प की नमूनो है। इण रा सम्भा छज्जा ताक, गोला आद सब मूर्तियां अर खुदाई के काम सू अलंकृत है।

अजता की अ सब गुफावा बौद्ध धर्म अर कला सू सम्बन्धित ही। बौद्ध धर्म के पतन र उपरांत अ उपक्षित होगी। देख रंग अर सम्भाळ के अभाव में इणा की घण खरो भाग धूँड माटी र नीचे खस्यो। करीब एक हजार बरसा ताई अ अज्ञात रयी। सन् 1879 ई में अचानक जा की खोज एक अंग्रेज करी अर एक र बाद एक उत्तम गुफावा अच्छी हालत में मिली। हजार साल बाद भी चित्रा की रंग अर मूर्तिया खम्भा आद की चमक ज्यू की ज्यू कायम है। औ भी अचरज लाग क छोटा छोटा चारणा आली जधेरी गुफावा में बत्ती बडी अर विशाल मूर्तिया की निर्माण अर आ की कलात्मक साज सज्ज किया करीजी। सगळ संसार में आज कला तीर्थ दाई पूजित अर प्राचीन भारत की कला श्रेष्ठता सू दुनिया भर र कला परग्या अर समीक्षणा की आदर मान अर प्रशंसा पाव जक स्थाना र दर्शन लाभ सू म्हे सब भी अपने आपन भाग्यशाली समख्यो। उण आनजाण कलाकारा अर निर्माण कर्तावा ताई मन ही मन सरधा सू नमन करता यात्रा की सफलता सू अत्यन्त आनन्दित हुया। इण र स्मरण मात्र सू जाण भी सबन हरख हुव।

मुलकता मिनखा री मोवणी धरती-गोवा

गोवा देश र दूजा हिस्सा मू अलग निराळी अर खुसनुमा जाग्या है। अठ रा अनूठा समुद्री किनारा, सुंदर थरना पील्या, नद्या, सुपारी नारियल अर काजू र पेडा री हरियाळी, पहाड्या री शृंगला, नद्या र बीच द्वीप अर सरगाह देण'र लाग क बुदरत खुद आपरे हाथा सू इण न सजायो सवारो है। अठ ना तो बडे शहरा जिसा हल्ला गुल्लो घूम घडाको है ना छोटे गावा दाई मून अर नीरसता। अठ रा लोग हसता मुळता नाचता गाता दीस। अ लोग काम करता करता गाव अर चालता चालता नाचण लाग। गोवानी लोग माथ समय समय पर अत्याचार अर आक्रमण हूता रया है। पण सक्टा अर कठिनाइया र बीच हसी खुशी जीणे री तला रो तरीको इण लोग सीख लियो है। उदास अर दुखी चेहरा शायद ही अठ दीस। घणा सा गोआ'या रा व्यक्तित्व आकषक हुव। व मेहनती, गुणी अर कलाप्रेमी हुव। जीवन सू पलायन री जाग्या मुख भोग सू जि'दगी बीताणी वा री उद्दश्य हुवे। व चोखो खाणो चोगो पहरणी पसद कर। काजू फनी रा शराब म् वान काई परहेज नइ। मस्ती सू भरया अ लोग नत्य गान र जलावा अभिनय चित्रकारी अर लेखन विशेष रूप सू नाटक अर काय सू भी प्रेम कर। इ कारण ई गोवा में अनेक नामी संगीतकार साहित्यकार अर कलाकारा रो जलम हुयो है।

गोवा जावण ताड पूना मू वास्को डी गामा ताई रेल मारग है। बीच में मागोआ स्टेशन आव। गोवा री राजधानी पणजी सू नडो हूण र कारण म्हे अठ उत्तरया बस सू पणजी पूग्या। पणजी में मुख्य बाजार में सुंदर लाज में ठहरया। तयार हूण र उपरांत 200 रु मं रात्रि दस बज्या तक री एक

टक्की किराय ले ली । गोवा मे यातायात रा साधन मस्ता है अर ठक्की आळा मला अर सज्जन हुवै । पणजी गोवा री राजधानी है । इत्ती छोटी अर साफ सुयरी राजधानी देश मे दूजी नही है । इण री बसावट चार पाच किला मीटर में फन्थोडी है । पणजी पैली नजर में ई मन मोव लेव । दूध जिसी सफैद बाग आळी भाड्डी नदी र डार्वे किनारे बसी इण नगरी नै माण्डवी राजकुमारी भी कव । यू तो समुद्री किनारे र सार बस्थोड अर हरे भरे पहाडा सू धिरयोडे गोवा री सगळी धरती मुल्त अर आकषक है । पण इण री राजधानी पणजी री गोभा निराली ही है । पणजी एलिट्ल्हो नाम री पहाडी र चारू मेर प्रम्यो है । इण पहाडी र उपर सू पेडा री पात र बीच स्थित लाल छात आळा मलीके सू बस्था मवान दशवा 7 आणद प्रदान कर । अठ सू हरे भरे मैदाना र बीच मद गति सू बँहती माण्डवी नदी इया लागै जाणे धीळे रग रा बोई सरप हरो घास माथ नचीतो हूँर सूत्यो है । उण माथ सफेद पाल वाळी नावा रमतिया दाड लाग । पहाडी सू उत्तर दिशा म नीनो आसमान अर अरब सागर री नीनो पाणी अतिभ में हत्की नीनिमा में सुतद मिलन री आभाम दता लाग । जिण जाग्या माण्डवी अरब सागर में मिल बठ अगुआद अर रिस मागोम नाम रा प्रसिद्ध ऐतिहासिक किला है । नदी र सार सुदर सडक कव । पणजी री सरकारी थर निजी सुदर इमारता इण र सार बस्थोडी है । इण मारग पर केई मूत्या अर बागीचा रा भी दशन हुव । नगर सू दक्षिण मै औ मारग मोरामार समुद्र तट पर आ र खतम हुव ।

मोरामार समुद्र तट मुलापम वाळु अर हवा में झूमता नारेळ रा पेडा री बौळायत र कारण बम्बई र जुहू समुद्र तट री याद दिरावै । सगार र सबसू सुदर तटा में इ री गिणती हुव । इण री दूजो नाम गास्पर लायस भी है । जिक मँलाण्या हवाई द्वीप रा जगत प्रसिद्ध समुद्र तट देख्या है व गोवा र समुद्री तटा 7 वा री जोड रा कव । उण तट पर ताड रा अमरुथ सोवणा रिरग है । 16 वी सदी रँ युरोप री महाकवि लुइस डी क मोस जद गोवा आयो उण इसा विरगा सू युक्त समुद्र री घणी प्रतामा री ही । इण रूप मोडग र गार

मुळरता भिनगा री मोवणी धरती-गोवा

गोवा न पूरव री राणी अर 'भारत में रोम आद नामा सू आदर जोग सम्बोधन मिलती हा । मीरामार तट मार्घ मलाया रो मेळो सो रव पण सिमा पड्या घणी रीनर रवे । स्थानीय सोगां र अनावा देग विदेगा रा बीत लोग अठ पूमता दीले अर कोंकणी, मराठी, पुतगाली हिन्दी अग्रेजी आद भाषावा र कारण इण तट रो स्तर यशिवर रूप ले लेवे है । ध्रमण अर सागर स्नान रं अलावा अठ रे मूर्त्यस्त रो दृश्य भी पपटवा र हृदय म सुदर छवि री अनूठी छाप छोड ।

गर सू 5 कि मीटर दक्षिण में दाणपाउल नाम रो द्वीजो लुभावणो अर प्राकृतिर सौन्दर्य र गगने दाद लागण आळो अनोवो समुद्रतट है । गोवा निवासी छुट्टी अर गोठ मनावण अठ वडी तादाद में आव । अठ समुद्र र बीच जल में एक ऊची अटारी बणायोडी है । एक पुळ सू अटारी ताइ जाण रो रास्तो है । अठ सू समुद्र रो रजक रूप दीले । मुरगाव रो बदरगाह अर आसमान सामे मिलता दीले । अटाद र ऊपर ताइ समुद्र री लहरा री उठाळी पूग । वपडा ई नई मन अर काया सब कुछ आनद री तरगा सू भीग जाव । लहरा र साग सलाणी भी किलकारया भरता हरव मू उद्वेलित हूण लाग । वडो रोमाच अर आह्लादकारी अनुभव हुव ।

अठ मू नजदीक ही बादशाह आदिल गाह रो पुतगालया र आगमन सू पला रो करीब 500 वष पुराणो महल है । आजकल अठ सचिवालय रो दफतर है । इण इमारत र सामे एवे फारिया नामक एक गोवानी सपूत री एक असाधारण अर चित्ताकपक मूर्ति है । इण में व एक महिला न सम्मोहित करता दिखाया गया है । मूर्ति गोआ र विख्यात कलाकार वामत र बणायोडी है । फारिया विद्वान वज्ञानिक अर सम्मोहक है । कवत क सम्मोहन विद्या रे आरम्भ कर्तावा में व प्रमुख है । पणजी नगर र बीचोबीच मुख्य चौक र ठीक सामने एक क्रिश्चन महिला र नाम पर बण्यो भाय गिरजाघर है । इण री गिनती गोआ र प्रमुख दशनीय स्थळा में है । इणरी आकपक सीढया बडी ऊची भीनारा अर उण पर लाम्पो सुदर घटो ई र आकपण न ओर बढाव । गिरजा

घर र कन महालक्ष्मी कर हनुमान जी रा मंदिर है। नडे ही एक मस्जिद भी है। अं सब धार्मिक समन्वय रो सुदर आदश उपस्थित कर। गोवा री आवादी में भी साठ प्रतिशत हिन्दू पैतीस प्रतिशत ईसाई अर वाकी मुस्लिम, जन, बौद्ध आद है पणजी म मेण्ट्रल लाइब्रेरी' नाम रो पुस्तकालय है जक मे लटिन भाषा री दूल्भ पुस्तका है। पुर्तगाली साहित्य अर इतिहास री प्रसिद्ध अर प्राचीन अलम्य पुस्तका अठे मिल। इण तरा कला, सस्कृति, इतिहास अर प्राकृतिक सौंदर्य आद रा पारखी प्रेमी सलाया न पणजो में बौत कुछ देखण जाणण न मिल।

पणजी र अलावा भी गोवा मे मोकळा देखण जोग समुद्र तट है, जका री शोभा सुदरता री आनन्द बाने देखा ही पायो जा सक। आ में कलंगूट री नाम बौत मगहूर है। पणजी र उत्तर में माण्डता नदी रो पुळ पार कर गाआ रो वारडेज ताल्लुको शुरु हुवं। इण क्षेत्र मे पश्चिमी किनारे पर औ समद्र तट है। बेमिसाल सुदरता अर लोकप्रियता र कारण इन गोवा र समुद्र तटा री राणी कवे। वारडेज कद पुराणे जमाने मे वारह क्षेत्रा में बटयोडो हो ईण कारण ई औ नाम पडयो। इण समुद्र तट पर नारियळ रा अणगिणत लुभावना रूख है। वाळु मय चौपाटी र कन घास री लम्बी पट्टी आळो मदान अर सात किलो मीटर लम्बो नीले मेहराव दाइ समुद्र रो किनारो। मदान मे सुदर चौपडया री बीच बीच म व्यवस्था। गर्म्या मे हजारू दशक अठ रे दृश्या र आनन्द ताई आवें। इण र आखिरी सिरे माथ अगूदा रो प्रसिद्ध किलो अर बडो सुमद्री दीप स्तभ है। इण र उत्तर म कसुजा अर वागाटोर नाम रा गाठ मनावणा रा सुदर स्थळ है। माच सू मई तक र महिना में तो अठ मेळो सो ई लाग्योडो रवे। औ समुद्रतट ब्राजील र प्रसिद्ध कोपकावना तट री याद कगव।

वाग समुद्रतट कलंगूट र नड ही उत्तर कानी स्थित है। कलंगूट र अर इण र बीच एक नदी है। समुद्र में भाटो आव जण इन नदी री पाणी जिण जाग्या कम है बठ मू पदल पार कर कलंगूट जाठ दस मिनटा में ई पूग्यो जा

सक। नइ तो खासो चक्कर लगा'र आणा पड। वाग रो तट वास्को डी गामा र दक्षिणी क्षेत्र में जुवारो नदी र डाय किनारे है। वास्को रा निवासी इण तट माथ घूमण न अर तिरण न आव। अठ सू मुरगाव वदरगाह रा निजारो भी चोखो दीस। ग्यास तीर सू रात में वदरगाह अर उण र जाहजा री पिल मिल करती रोशनी मन मोव लेव। वाग तट र एक पास जमीन ग्यासी ऊची है। वठ विश्राम करण री जाग्या ता है ई, ऊचाई र कारण दूर दूर तक समुद्र रा दृश्य दीव। ईया समुद्र तटा र जलावा कोलावा वागतूर, श्रीदव अर मेंद्र जाद और भी रमणीक तट गोवा में है पण ममय री वमी र कारण म्है आ न नी देख सकया। गोवा र अलावा भी जिना समुद्र में देरया है। उणा सू तुलना करणे सू गोवा रा अ तट अपूव सुदर क्या जा सक।

टकसी सू पणजी र पूरव में फौडा ताल्लुके में इण क्षेत्र र मदिरा रो अवलोकन वास्ते गया। गोवा रो मदिर शिल्प दृजा जाग्या सू भिन है। अठ रे मदिरा में प्रवेश द्वार र सामै प्राय मीनार भी बणी हुव। गोवा रा मदिर विशाल आयताकार हुव। आ र ऊपर ईसाई स्थापत्य री छाप भी झलक। गोवा में सबसे परसिध मदिर मगेशी मदिर है। एक छोटी पहाडी री बगल में ओ शिव पावती रो सुदर मदिर है। ई रे चारु भेर यात्र्या र रवण वास्ते 12 अग्रशाळावा बण्योडी है। मदिर र वारे म एक कथा कईज। एक बार भगवान शिव हिमालय सू कठई चला गया। वान फर पावण वास्ते पावती जी तपस्या करी। इण र फलस्वरूप शिव जी सिंह र रूप में पावती जी र सामें प्रकटया। पावती चीत्कार कर उठया ब नाहिमान गिरीश कवण लागी। शिव असली रूप में प्रगट हुया। वाद मे शिव भक्त मग्रीश यानि सिंह रूप में शिव रो आराधना करण लाग्या। ई मदिर र वन एक ग्वाले र बणवायोडो मुलवेश्वर (शिव) रो छोटी मदिर है। गोवा में बहुत प्राचीन काल म आदिवासी रसा हा। ब नाग सिंह अर लिग आद रो पूजा करता। सारस्वत ब्राह्मण उत्तर सू बाद में जठ आया। ब्राह्मणा भी अठ र लोर देवतावा रो पूजा आदिवासा दाई करणी आरम्भ कर दी। मगेशी मदिर आय अर जादीवासी सस्टति र समवय रो अठो उदाहरण है।

फौटा तातलुका मै ही मारदोल नामक स्थान पर म्हाल्सा देवी रो हि दू शली मै बण्यो काष्ठ रो सुदर मदिर है। काष्ठ शिल्प रो दीठ सू औ सगळे देश मै प्रसिद्ध है। हि दू स्थापत्य म इ रो निर्माण हुयो है। औ जम्बा माता रो मदिर है। म्हाल शमा नाम र एक भक्त ने देवी रा अकस्मात दशन हुया। देवी रो वचन हो क इण स्थान पर खुदाई करणे सू निज मूर्ति निकळसी। कथन सत्य नीकळयो। वा मूर्ति ही अठ प्रतिष्ठित है। उण र चरणा मै म्हाल रो लिंगाकृति मूर्ति भी बण्योडो है।

फौटा सू 2 मील दूर कावलेम रने ड घारगल मै श्री शाता दुर्गा रो प्रसिद्ध मदिर है। कवे क एक वार शिव अर विष्णु भगवान मै भयकर युद्ध हुया। ब्रह्मा जी युद्ध रोकण ताड जगदम्बा नै विनती करी। युद्ध बंद करणे र कारण माता श्री शाता दुर्गा नाम सू विरयात हुई। इण आरयान र अनुसार ही इण मै तीन प्रतिमावा ह। श्री शाता माता बीच मै अर शिव विष्णु वारे आर सार विराज। त्रिमूर्ति रो औ सगम शायद ही और कठई मिल। श्री शाता दुर्गा रो पूजा गोवा म प्राय घर घर हुवै। हि दूधरा र साम तुलसी रो चौरा गोवा मै जावश्यक रूप सू मिल। तुलसी चौरा ईसाई घरा र जागे भी मिल पण उण चौरा माथ 'नास' रो चिह्न हुव। इण मदिर रो निर्माण सतारा र साहू कराया। मदिर निर्माण रो कला म औ सगळे देश मे अनूठो गिणीज। इ र खम्भा अर मण्डपा रो शोभा चकित कर देव है। हर वरस दिसम्बर महिन मै श्री शाता दुर्गा रो शोभा यात्रा निकळ। भक्त लोग मदिर अर प्राब्र-तिक सुपमा न देखण रो लाभ उठा र प्रसन्नता प्राप्त कर।

गोवा मै खाम तौर मू पणजी सू उत्तर पूरब मै जव क्षत्रन पुराणो गोवा कवे अनेक सुदर गिरजाघर भी बण्योडा है। आ सगळा न देखणा ता सम्भव कोनी हो। टक्सी सू गावा र सब सू सुदर अर प्राचीन सी केथेड्रल गिरजाघर न देखण न गया। औ गोवा रो पला गिरजाघर हो। जठ राज धार्मिक उपदेश अर समारोह हुव। औ गिरजाघर तस्कनी अर डारिक शली रो वास्तु कला, रो निराला नमूना है। इ रो भव्यता देख र गुरापर एक विख्यात ५

डा फ्रायर 1675 में कयो क इ री जोड रो गिरजागर कमसू कम ब्रिटेन में तो कोनी। 1808 में भळ योरोप र एक यात्री डा बुक्नन इ बात री ताईद करता कयो क औ शानदान गिरजाघर युरोप र केई नगर री शोभा बडा सक है। इणरो निर्माण पुतगाली सेनापति अल्बुकुक मुसलमाना सू गोवा खोसण री खुशी में करायो। क्यू क पुतगाल्या न आ जीत साता कातारीना र त्यौहार र दिन मिली ही, इण हेतु गिरजाघर र मुख्य द्वार पर एक शिला माथ लेल है मुसलमाना माथ विजय प्राप्त कर, 1510 ई में साता कारानीना रं शुभ दिन गवनर आधोसु द अल्बुकुक इण दरवाजे में प्रवेश कियो। 'हर साल 25 नवम्बर न गोवा विजय री याद में अठ समारोह हुव। इण न पूरो बणण में 75 बरस लाग्या। गिरजे रो मायलो भाग बारले सू बेसी सुंदर है। इणरी लम्वाई 142 फुट अर चौडाई 70 फुट र करीब है। चारू दिशावा में बण्या पूजागृह इ सू अलायदा है। आज भी औ गिरजा घर गोवा में पुतगाली शासन र उदय जस्त री कहानी री घोपणा करतो लाग। यूनानी शली री इसी कम ईमारता ई देश में मिल।

इण रे बाद सोलवी सदी में बण्योडे वामजीसस रे प्रस्थात गिरजा घर देखण न पूग्या। औ भी पुराणे गोवा में ही है अर गोथिक भवन निर्माण शली म बण्यो है। डी जे म्हास करेन हेस नाम र ईसाई सेठ इण न बणवायो। 1605 म बण र गिरजो पूरो हुआ। इण र एक बाजू में प्रसिद्ध ईसाई सत सेंट फ्रांसिस जेवियर री कब्र है दूज म होली सेन्नामेट नामक स्थळ है। धम गुरु पोप र आदेश सू इण गिरजे न रोम र प्रसिद्ध अर महत्ता प्राप्त सात गिरजा घरा र बराबरी रो दर्जो मिल्यो है। सेंट जेवियर री कब्र र चारू मेरकासे री वारीक कलात्मक नक्काशी रो काम देरया ही बण। इण गिरजे री भी गोवा मे धणी मानता है। अठ सू वापस पणजी आया। एन दिन पणजी रुक र पूठा बम्बई हुता घर पूग्या।

जिदगी सू भरपूर प्यार करणिया आकषक अर जिदादिल गोवा रा वासिदा बठ री ईसाई पुतगाली ढग री जीवन शली न रू व रू देखण रा

सुहावणी अवसर आज ताइ स्मृति में ताजो है । आज गोवा भारत रा अभिन अग है अर भारत री जीवन धारा र साग बवे है । पण फेर भी आपरी परम्परागत रगीनी अर जि-दादिली नै ब कायम राख्या चालै है । अठ रा खाता पीना नाचना गाता जीवन प्रमी लोग दूजा प्रदेशा सू आया अतिथ्या रो स्वागत सत्कार प्रेम अर जोश सू करे । इण प्रदेश री रूप शोभा अर गोवानी तागा रो भीठो व्यवहार भुलाया नी भूल ।

आधुनिक नगरा अर नदनवन री भूम

प्रकृति र सुरम्य दृश्या सू परिपूर्ण, गौरव शाली परम्परा अर आधुनिक यात्रिकी री घर खुशगवार मौसम हरया भरया सुन्दर विशाल मन मोवणा वागीचा अर पक्षी आरण्य आळे कर्नाटक प्रदेश में सब रुचिया र पयटका न जाकपित करणे आळा स्थान अर सामग्री है। वानस्पतिक उद्याना अर सुरम्य आधुनिक बगाचा री तो अठ भरमार है। शिल्प अर स्थापत्य रा नायाब केद्र, धार्मिक स्थळ प्राकृतिक बदरगाह सुरम्य समुद्री किनारा, विख्यात पशु बिहार आद री भी अठ कमी कोनी। इण प्रदेश ई भारत न हैदर अली टीपू सुल्तान अग्रेजा सू टक्कर लेणे वाली वीरागना राणी चिन्मा विदूर अर स्वाधीन भारत रा प्रारम्भिक वीर सेनापति जनरल धिमया जर जनरल करिअप्पा जिसा नर पुगव प्रदान किया। विजय दसवी र त्यौहार री उपासना भूमी वीर प्रसविणी बयो नइ हूसी ?

विजय नगर गोलकुण्डा बीजापुर आद ऐतिहासिक साम्राज्या री रगस्थली आ भूमी ई रयी है। हम्पी रा कलात्मक अवशेष श्री रगपट्टण रा स्मारक श्रवण बेलगोला री मूर्त्या इ री सांस्कृतिक ऊच्चाई री घोषणा कर। अठ री सगीत भारतीय सास्त्रीय सगीत में अनूठो मानीज। मल्लिकार्जुन भीमसेन जोशी कुमार गधव सगीत री इण रसमय परम्परा न अक्षुण्य राखण जाळा आदर जोग भारत रा सपूता री जननी आ भूमी ही है तो सी वी रमण विश्वेस्वरया जिसा वज्ञानिका री भातभूमि होणे रो गौरव भी कर्नाटक न इ प्राप्त है। इण बदना अर दशण जोग स्थल र भ्रमण रो कायक्रम बणा र अहमदाबाद बम्बई हैदराबाद हुता दण री राजधानी बगलूर पुण्या। कर्नाटक रो जूणो नाम मसूर राज्य हो। अठ री भाषा कन्नड

है जिण में 'ट' बग रा आयर वासी सत्या में हुव । जनसरया अर क्षेत्रफल री दीठ सू भारत रो छठो बडो राज्य है । इण राज्य म तेरह हजार बग मील क्षेत्र म घणा जगळ है । टीक अर वास र जलावा अठ चदन रा पेड खूब हुवै । चदन री लकडी अर बीरा इत्र, फुलैल अर सुगध युक्त अगरवती, साबुन आद उत्पाद जगत भर में प्रसिद्ध है ।

बैंगलूर कर्नाटक री राजधानी है । ओ नगर बसावट, मौसम और उद्योग घघा री दीठ सू भय आधुनिक नगरा मे श्रेष्ठ गिणीज । चार पाच सदी पला अठ सामान्य वस्ती ही । हैदर अली र राज में अठ की उन्नति हुई । बीसवी सदी में अठे रो योजनाबद्ध विकास हुयो । स्टेशन माथ उतर ताई लाग्यो क केई सुंदर जाकपक अर आधुनिक शाली में निर्मित भव्य ईमारत मे पूग्या हा । बैंगलूर में ठहरण वास्तु सबडू होटल है । सराय धमशाळावा री भी कमी बोनी । स्टेशन रोड माथ कोई 500 गज दूर ही गुप्पी थोटाडप्पा चौल्टी नाम री धमशाळा है । उण में ठरण री व्यवस्था हुगी । स्टेशन पर ई वीस्यू ट्रवल एजेंस्या रा दलाल घूमता रवै । पयटका न वारी व्यवसायिक अनुभवी दृष्टि तुरत आळख लेव । बैंगलूर मसूर अर श्रीरंगपट्टण म दसन जोग स्थाना वास्ते रोज टूरिस्ट बसा स्टेशन बन सू दिन भर चालती रव । 50 रु प्रति सवारी सू 35 रु ताई भाव ताल में जठै वात बण जाव तय कर र बठा लेवै ।

बैंगलूर चौडी सडक्या, आधुनिक भवना अर प्रगीचा आळो सुंदर नगर है । 25 30 लाख री आबादी आळे इण शहर में मर जाति, धम, सप्रदाम अर प्रदेशा रा लोग रवे । अठ लाल बाग, कब्बन बाग, कुमार बाग आद केई बाग है । बागा री बोळायत सू केई लाग इण नै उचाना रो नगर' भी वाले । बागा में केई केई एकड भूमि में कमल र फूला री लम्बी पात, भान भात रा पेड पौधा, झाड लता आद देखण न मिल । टूरिस्ट बस वाळा खाली लाल बाग बने रोके यात्री निजी तौर सू देखणा पड । लाल बाग स्टेशन सू घणो अळगो कानी । ओ काफी बडो है । हैदर अली मसूर र महाराजा न ओ बाग मॅट

करयो। दक्षिण री वनस्पति र मुजूव सब प्रकार रे पेड पौधा री विशाल सख्या अठ मौजूद है। जाग्या जाग्या नक्ली पहाड, चरना, होज अर फव्वारा भी बणायोडो है। हर साल बसत, री वेळा में अठ पुष्प प्रदशनी लागे। 2 मील र घेरे में फल्यो होणे सू माय सवार्धा आळा बाहो भी जाणे री इजाजत है। अठ आणे आळा ताजगी हर प्रसन्नता रो अनुभव कर।

बैंगलूर रो 'विधान सौध' विशाल खम्भा टोड्या तोरणा अर गुम्बदा माथ आधुनिक स्थापत्य शैली में निर्मित एक आधुनिक इमारत है जकी मसूर रा सुदर महला री याद अणाव है। इण में विधान सभा अर सचिवालय रा दफतर लाग। शहर र वसवन गुडि क्षेत्र में नदीश्वर रो शिवालय है। मल्लेश्वरम म बहादेव अर गविपुरम मुहल्ले म गगाधरेश्वर रो मंदिर है। तीनु मंदिर शिव रा है, अर मुदर बण्योडा है। बैंगलूर रो सत्रमू दशनीय विश्वेसरया तकनीकी म्यूजिम है। अठ काच री अलभारया में पाणी निकाळने रा पम्पिंग सट भारी समान उठाणे री त्रेन मशीना, खाना खोदणे री ड्रिलिंग मशीन सिंचाई री आधुनिक मशीना, टक्टरा आद रा छोट नमूना प्रदशन ताईं राखाडा है। विशेषता आ है क आ अलभारया रे हेठ विजली रा बटन लाग्योडा है। दशक आप वा बटनान दवा र मशीना री काय विधि अर सचालन न देख सक है। रूखाळी वाळा कमचारी तो एक दो ऊभो रवे पण जोर कोई प्रदशन अधिकारी बठ नी हुब। इण स्वचालित व्यवस्था में सलाणी जद अपने आप चला'र आन देख तो देश र विकास में काम आणे आळी अति आधुनिक मशीना री जाणकारी सू तान वृद्धि तो हूव ही है।, व्यक्ति री एक तरह सू भागीदारी इण में सम्मिलित होणे र कारण बीन घणो आन'द आव। बरुचा र रजन अर जान री दीठ सू इसा म्यूजियम दूजी जाग्या लगावण री योजना वण तो और लोगान भी लाभ हुब।

बैंगलूर विशाल औद्योगिक नगर है। अठ भारत विख्यात बडा बडा कारखाना अर औद्योगिक सस्थान है। हिंदुस्तान विमान कारखानो, भारत इलम्ट्रोनिकस, इडियन टलीफोन इंडस्ट्रीज हिंदुस्तान मशीन टूल्स आद लूठी

औद्योगिक इकाईया अठ है। भारत रै लगभग सब प्रदेशा रा लोग इणा में कायरत हूणे सू एक सावभीम नगर रो स्वरूप औ ले लेवै है। अठ प्रसिद्ध वज्ञानिक अनुसधान केन्द्र भी केई है—इंडियन इन्स्टीट्यूट आफ साइंसेज अर रमण रिसच इन्स्टीट्यूट आ मै उल्लेख जोग है। अठ उद्योग री दृष्टि सू भारी मात्रा में चदन री लकड़ी, सुगंधित द्रव्य, लडाकू विमान, टैलीफून रा उपकरण, घडया मशीन रा औजार अर कळ पुर्जा, विजळी री मोटरा अर इलैक्टोनिक्स रा टी वी कलकूलेटर बी सी आर जिसा बहुविध सामान वर्ण।

वास्तव में अनेक दीठ सू बंगलूर देश रा दूजा नगरा में आपरो अनोखो स्थान राख। अठ रा कृष्ण राजद्र बाजार अर रसल बाजार द्यौत सुदर अर विशाल है। हर तरह री आधुनिक जिंसा जठें मिल जाव। बंगलूर री साडया भी मशहूर हुव। रेशमी साड्या अर जवाहरात अठ सू विदेशा में भी निर्यात हुव। चिकपट अर एव यू रोड साडया रा प्रसिद्ध बाजार है। महात्मा गांधी रोड माथ कलात्मक वस्तुआ रो सरकारी 'कावेरी आट एम्पोरिया' है। हाथी दात रो सामान, लकड़ी री छडिया, खिलौणा, लकड़ी माथ चित्रकारी, चदन की सामग्री अर रेशमी कपडा जठ सहूलियत सू बाजब दामा में मिल।

बंगलूर सू 138 कि मी दक्षिण पश्चिम में महला री नगरी मैसूर है। अठ महल अर बागीचा इत्ता सुदर है व ईन आधुनिक इन्द्रपुरी भी कव। इण नगर रो विकास अठ र रजवाडे योजना वद्ध तरीके सू कर्या है। सडका, बाजार, भवन महल स आकषक अर कलात्मक है। देरया जी धान अर निजरा देखती ई र जाव। मैसूर रो राज महल 1897 म वर्ण र पूरो हुयो। आधुनिक स्थापत्य रो बेजोड नमूनी है अर हिंदू अर मुस्लिम शिल्प र मिश्रण सू बण्या भारत र सबसू बडा भय मैहला में इण री गिणती हुव। ई रो सामलो चहरो बडो सुदर है। बीच र हिस्से मे पगौविया है। ऊपर री मजिल में पैला बालकनी है। इण र ऊपर महलात है। महल र सामे विशाल प्रागण है। मैसूर राज्य में उत्सव आयोजन र वखत राजा लाग बालकनी में बठता, सामत

सभासद नीचे पगाधिया पर अर आम जनता सामे चीगान में भेळी हूती । मैसूर में दशरावे रो त्यौहर घूम धाम सू मनाईज । उण वेळा महल री रोशनी देखण जोग हुव एक एक फुट री दूरी माथ लाग्योडा मुदर दीपा रा रोसनी सू सम्पूण महल जगमगाव ।

म्हैल में सुदर अजावघर है । जिण में पुराणा हथियार चित्र, सजावट री सामग्री, वस्त्र अलवार आद रा चाखो सग्रह है । म्हैल में एक विशाल आगार है जको कलात्मक चित्रा सू सज्या रवे । दरवार हाल में सोने रो सुदर सिंहासन प्राचीन राजकीय बभव री बीती गाथा सुणावतो लागे । क्वक 1691 में बादशाह औरंगजेव मैसूर रै चिक्का देवराजा न ओ सिंहासन भेंट में दियो । म्हैल रो मुख्य द्वार कमान छत अर सीढया मन न मोहित कर देव । महल में दशराव रे जलूस रो शानदार चित्र जमित है जको बडोसजीव है । विवाह कथ बहुमूल्य जिंसा रो सग्रह है । नगर र चौक में सगमरमर री ऊची चौकी मार्थ मैसूर र अतिम राजा र दादे री बडी मूरती है । आ भी बडी आकपक है । नगर र बार चामुण्डी पवत मारग माथ स्वच्छ धोळे वरण रो सोवणी विशाल ललित महल है । एकात सुदर वातावरण म ओ म्हैल अमरावती र महला सो लाग । वाशिंगटन र वाइट हाउस री सी झलक ई मै मिल । इ री सीढया ईटली र सगमरमर सू बणी है । इण में भारत रा प्रधानमंत्री अर राष्ट्रपति ही ठर सक । यात्र्या, र देखण ताइ ओ खुलो है । पला अनुमति ले'र जाणो पड जकी पयटक विभाग सू मिल जाव ।

मैसूर नगर सू 13 कि मी दूर चामुण्डी पवत माथ मैसूर राजघरान री अधिष्ठात्री देवी चामुण्डी रा 12 वी शताब्दी म बण्या प्राचीन भय मंदिर है । चामुण्डा दुर्गा माता री प्रतीक है । मंदिर र आधे मारग में नदी री सोलह फुट ऊची विशाल प्रतिमा है । इ र गळे में पुष्प माळा जर घटया भी पत्थर तरास र बणायोडी है । कारीगरी रो चाखो नमूनो है आ मूर्ति । मंदिर र नेडे महिषासुर राक्षस री 26 फुट ऊची प्रतिमा है । आकृति भयकर दीख । हाथ में खाडो भी धारण है । पण मात शक्ति चामुण्डा र सामे राक्षस भी नी ठर

सक्यो। भारत की आ मायता भी नमन जोग है। ससार की कल्प वृत्त्या रो निवारण मात शक्ति र उमेप स ई सम्भव है इ में कोई शक नई। चामुण्डा पहाडी माथ अणेक मंदिर अर तळाव आद है। ऊची डूगरी माथ स्थित आ मदिरा की रोशनी में रात में ओ सम्पूर्ण स्थल परीलोक सो लाग।

मैसूर सू 12 कि मी दूर वृष्ण राज सागर बाध है जो चौडाई में 2 कि मी लम्बो है। कावेरी नदी माथ निर्मित हुण सू बाध की लारली भीत माथ कावेरी माता की भावपूर्ण प्रतिमा बणी है। इण बाध की निर्माण विश्व प्रसिद्ध अभियता विश्वेस्वरया करायो। बारी स्मृति में एक शिला माथ बारी आदर जोग नामोल्लेख है। ओ बाध भारत र बडे बाधा मायसू एक है। बाध पत्थरा सू बण्यो है। जलाशय 50 बग मील क्षेत्र ताई फल्यो है। वृष्ण सागर बाध र लार पूरबी दिशा में जग प्रसिद्ध वृदावन उद्यान है। ई रो मूल नाम नदन बाग हो। नाम की साधकता अर सच्चाई इण न देख र ही मालूम हुव। इण रा मुलापम दूब आळा विशाल कढया सवरया बागीचा ऊचे सू नीचे जावती केई पटया में प्रवाहित होता झरना रग बिरगा मोवणा पुष्प वेग सू बँवता ऊचा रगीन फवारा बीच में घोळी झील झील म नौका बिहार की पवस्था। उद्यान र एक कुण में शीतल पेय अर नाश्ते आद की कटिन अर होटल जाग्या जाग्या विश्राम खातर सु दर चौकया उद्यान र ऊपरी भाग सू सारे दृश्य न देखण आळी सु दर बारादरी कृत्रिम झरना में मछल्या र सचरण रो आभास देंती रेस्तावा की कारीगर आद सब कुछ इन नदन बन की वास्तविकता प्रदान कर।

उद्यान रा सजामजाया पीधा बेल्या गुल्म क्यारया मन में उल्लास भर देन। दोपहर र समय फवारा माथ पडती सूरज की किरणा ठोड ठोड इन्द्र धनुष की आकृत्या बणाव। इ द्र लोक अर उण रा उद्यान तो कल्पनिक् ही है पण धरती रो ओ इन्द्रोद्यान जीती जागती हवीकत है। मैसूर र वदावन गाडन रा दशन सौदर्यावलोनन की बडी भारी साधकता है। इण न देख र म्है सब आपरे भाग्य की सराहना करता नी थाकया। मैसूर सू 16 कि मी दूर थी रग

आधुनिक नगरा अर नदनवन की भूम 101

पट्टनम नाम रा प्रसिद्ध स्थान है। इन भगवान रगनाथ की नगरी भी क्व। कावरी नदी की दो धारावा र बीच बस्योडा ओ मुदर नगर 1610 मू 1799 ताई मैसूर राज्य की राजधानी भी रयो हो। हैदर अली अर वी रो सूरवीर चेटो टीपू मुल्तान अठ रा प्रसिद्ध गासक हा। टीपू 1789 में अग्रेजा र विरुद्ध धमासान युद्ध करतो अठ ई वीर गति पाई ही। इण स्थान पर टीपू रो गढ़ अर आस पास रा क्षेत्र ऐतिहासिक दीठ मू दग्गण जोग है। सत्रहवीं अर अठारवीं दो गताब्दां ताइ मुसलमान गासक की इण राजधानी आपरे जीवन काल में साम्प्रदायिक ऐतता अर सद्भाव रो जको आन्ध्र स्वरूप उपस्थित कर्यो वी आज भी इतिहास में याद करीज है। साम्राज्यवादी अग्रेजा मू इण दो-यू कौमा सम्मिलित रूप मू युद्ध लड्यो अर कुचिया दीनी। खुद टीपू युद्ध म दुग र फाटक सामे वीर गति प्राप्त हुयो। आज भी अठ अनक हिन्दू मंदिर अर मुसलमाना की मस्जिदा चारे सह अस्तित्व रो उदघोष कर। रगनाथ मंदिर 500 वष पुराणो है। मंदिर विंगाल अर कलापूण है। इण क्षेत्र में इ की मानता भी वीत है।

श्री रगपट्टणा र दूजा दशनीय स्थाना में टीपू रो गर्मो की स्त रो श्रैल गुम्बज दरिया दौलत बाग महल अर सगम देखण जोग है। इण इमारता की नक्काशी करयोडी महाराजा, छना दीवारा अर रगीन मूर्तियां दसका न लुभाण आळी है। श्री रगपट्टण मू 1 मील दूर जकी गुम्बज है बा मुस्लिम गासक र ठाठ घाठ अर गान की सूचक है। एक दगीचे र बीच आ गुम्बज काळे सगमरमर र पत्थरा मू बण्या राम्भा माथ पीले वरण र पत्थरा मू बणी है। हरी धरती अर नीले आसमान र बीच पीत वरणा गुम्बज रग चेतना अर कलात्मक निर्माण रो अनोखो दृश्य पेश कर है। नक्काशी रो काम फूटरो है खम्भा विशाल अर सुहृद है। रग विरोध वस्तु शिल्प की अपूर्वता दिखत। इण गुम्बद में टीपू अर उणा र पूवजो की मजार भी है। इणी ठाम टीपू मुल्तान की निजी वस्तुआ रो कलात्मक संग्राहलय भी बण्योडी है। अठ मू वापस बगलूर पूग्या अर वापस घर ताइ रवाना हुया।

भौतिक अरु भौगोलिक, ऐतिहासिक अरु धार्मिक, कलात्मक अरु सुपमापूण कर्नाटक आपरी स्पष्ट छाप पयटका माथ छोडे । कन्नड लोग स्वभाव सू भी ज्ञात, गभीर धार्मिक अरु मिलनसार हुव । कपट अरु धोके री प्रवृत्ति भी इण प्रदेश में बौत कम दीखै अरु बारला लोगा रो व सत्कार भी कर । अठ र लोगा रो परिधान अरु भोजन भी सादो हुव । देश भक्ति रो भाव पला र समय दाइ आज भी इण प्रदेश र लोगा म मिल । अठ री स्त्रिया भी धरम परायण अरु वीर हुव । चादवीची, रानी चैनम्मा अरु मल्लमा जिस्सी विरागनावा री भूमि आज भी साहस अरु कमठता सू ओत प्रोत दीख । इण सब विशेषतावा सू युक्त आधुनिक भारत र निमाण में अपूरव योग देणे आळे इण क्षेत्र री यात्रा रो स्मरण मात्र हरख पुलक सू हिये न भर देव है ।

पोगल अर मदिरा री धरती-तमिलनाडु

द्रविड सभ्यता री लीला भूमि ललित कलावा री अक्षय निधि, श्रेष्ठ साहित्य री जननी पागल री धरती भात भात र शिल्प सू वण्णा मदिरा री उद्भव स्थळी तामिलनाडु रो भारतीय सस्कृति र विकास मे स्मरण जोग योगदान है । जन अर वण्णव देवी देवतावा रा अवतार पुरूपा र रूप में अठ विनाल कलात्मक मंदिर वण्णा है । इण मदिरा रा आभ छूवता गोपुरा में महा पुरूपा री कथावा अर लीलावा अनूठी मूरती शिल्प मे माण्डयोडी है । रामायण महाभारत, पुराण अर दसावतारा सू सम्बन्धित सायत ही कोई प्रसंग हुव जक न इण म स्थान नही मिल्यो हुव । मदुरा काचीपुरम रामेश्वरम अर कन्याकुमारी रा जगत विख्यात मंदिर इण धरती पर ई है । देश वासी ई नडँ ससार र दूजे देगा सू भी दशनार्थी अठ आय दिन पूग ।

भारत री घमप्राणता अर इ रो खेतीहर स्वरूप द्रविड सस्कृति री भूमी तमिलनाडु में देश र दूज प्रदेशा दाइ यक्त हुव । तमिल क्षेत्र में सूर्य भगवान री आराधना बेसी हुव । अठ पोगल र तीहार री घणी मानता है । मकर सत्राति न तमिल में पागल कब । सूर्य भगवान जद भूमध्य रेखा सू मकर रेखा कानी बढ उण बेळा मकर सत्राति हुव । यानि सूर्य देव री किरपा सू जद उष्मा बढ अर सीत रो परभाव कम हुव उण वखत ही वनस्पति में अकुरण फूट फसता ऊग अर धन धान्य सू पोषण अर विकास हुव । धान ईख बटहल बेळा हळदी अर नारेळ सू घर बाजार भर जाव । उण बेळा कृषक कृतज्ञता र रूप में पागल न आ जिंसा अर फळ फूळा रो नवेद्य चढाव । पागल रो औ त्यौहार तीन दिन मनाईज । पले दिन किसान कूडो वाकड वाळ

न नष्ट कर। इण आयोजन न भागी कँवे। दूर्ज दिन प्रहू वेद्या रगोळी मजाव। सवामण्या अर जाती जवापा री अभ्यथना अर सम्मान हुवँ, उणा नँ मॅट वघाई मिल। तीज जिन पशुआ री पूजा 'भाट्टपागळ' हुव। आत्मीयता, स्वच्छता अर कलात्मकता र साग वनस्पति अर मानवेतर जीवा रँ प्रति उत्तर दायी सहजगित्त्व पूण जीवन रो ईँ सू उत्तम और क्या परिचय हो सक ? पागल रो त्योहार भारतीय जीवन पद्धति री मम्पूण व्याख्या दाइ लाग। एण मुदर अर पावन भूमि रँ दशन रो कायनम कई साध्या भेळ बणया।

दिल्ली सू मद्रास ताइ रल सू पूग्या। मद्रास तमिलनाडु री राजधानी है। भारत र दक्षिण पूरबी समुद्र तट रो ओ एक विशाग बदरगाह है अर अठँ रो ममुद्र तट दुनिया र मयमू सुदर तटा में एक गिणीजँ। हवाई भारग मू भी मद्रास दुनिया रा केई बडा देशा सू जुडघाडो है। मद्राम रा एगमार स्टेशन अत्यंत आधुनिक अर बडो है। हजार आदमी नित दूर प्रराज मू अठ पूग। ताहवार पट र महेश्वरी सदन में आवास रो सुदर व्यवस्था हुसगी। पना ग ईँ पत्राचार मू पूव आरक्षण ठरण ग्वातर करा राखी हो। एन मित्र न भी लिग राख्यो हा। प्र स्टेशन अगवाणी ताईँ पूचग्या। आपरे राम पाज मू छुट्टी ले'र प्र तीन दिन र मद्रास प्रवास में लगातार साथ र र जिण आत्मीयता अर सहृदय ता रा परिचय दियो, वो। आज तक धाद क'र हरग हुय। दिन र तीसरे पर नगर भ्रमण न नीसरया। सबसू पला म्यूजियम देगण र गया। मद्रास म्यूजियम एक विगाल पुरातत्व संग्राहलय है। ईँ रा चार हिग्गा हे। चारा ग्वातर अळायदा भवन है। एक् भवन में प्राचीन मन्थताया रा अवगोप है। चाल चेर पल्लव, राष्ट्रकूट अर विजयनगर साम्राज्य ब्राह्म रा पुराणी कलात्मक चीजा रा चोग्यो संग्रह है। देवी देवतावा री जूणी मूरतया भी पासो मस्या म है। दूज भवन मे प्राचीन चित्रा रो भंडार है। एणा म द्रविड मन्वृति अर जीवन रा सब पहल्लू-रहन महन, वपभूषा परिधान आभूषण, भेळा त्योवार, राजावा अर सामता रो भोग विगान म कुरा विभिन्न रगा अर आकारा में चित्रित है। ताईँ नामी गरामी

चित्रकारों का चित्र भी क्या मैं सामिन है। तीज भवन में देवी देवताओं में पायमारथी, सुश्रेयानियम विष्णु वरदराज अर शिव की मूर्तियाँ हैं। ज मूर्तियाँ पीतल काम या अष्ट घात सू बण्योडी है। नटराज की भात भात की मुद्राया की मूर्तियाँ सबगू वेगी है। चौथ भवन म द्रविड लिपि में लिगयोडी हस्त लिपित प्राचीन पोथ्या गगीत रा अनक प्रचार रा वाच यत्र पुराणा शस्त्र जीर ऋण धेय र राजावा की तसवीरा आद है। मग्रहालय में हवल मछली रा कनाळ तरह तरह रा साप अजगर जगती जिनावरा रा मसाले भरया मिर हजारू बरस पुराणी मानव गापठ्या अर कनाळा रा अवगप भी मौजूद है। विविधता की दीठें गू ह्य भात की जूणी एतिहासिक गामग्री अठ दीय।

इण र वाच चौथ पहर राजगोपालाचाय की याद में बण्योडा स्मारक देन्यो। राजाजी तमिला रा ई नी दस र बडे आदर जोग नताया म हा। उणा की सूत्र वृज्ज अर कुटनीतिज्ञता की बडाई आग्नी दुनिया करती। इण कारण ई आन स्वतंत्र भारत की पलो गवरनर जनरल बणायो गयो। राजगोपाल चाय गू सम्यधित चित्र, उणा की लिन्योडी पुस्तका आद की चोखो सपह अठ है। इण गू घोडी ई दूर गाधी रमारक भी दगण जोग अर आदर जोग है। ऋण की मुद्र गली में मंदिर दाई निरमाण हुयो है। गाधीजी सम्बधित दुल्भ चित्र अठ है। स्मारक में बठण अर कीतन करने की ध्यवस्था भी है।

दूज दिन सप घर देगण न गया। साहूवार पट गू 5 6 मील दूर आ ज्याग्या है। सापा रा ऋसो दुल्भ सग्रह वीत कम जाग्या मिल। तरह तरह रा छोटा बडा जहरीला अर बिना जहर रा साप अठ है। आ रा सबडू प्रकार अठ है। आ न पूरे प्राकृतिक वातावरण म राखणे रा पूरो प्रयत्न अठ हुव। सापा न जाली अर वाच र घेरा म रास। रुगाळा ई वात की ध्यान राख क आन सलानी नी छेडे ना ई कोई चीज खुवाक। पूठा माहेश्वरी भवन आ र भोजन विसराम आद र उपरात साय मद्रास समुद्र तट र अवतीकन तार्द गया। इण समुद्र तट म केई विशेषतावा है जकी दूजी जाग्या नी है। एन ता बम्बई कलकत्ते गिरा बडा सरा दाई अठ समुद्री बिनारे उपर निजी

इमारता, काठी, जगला आद यण्याडा कोनी । समुद्री विनारे र सारे सारे लम्बी सीधी सडक बव । सडक र दूज वानी सरकारी कार्यालय जर साजजनिक विशाल इमारता री इकसार ऊची अर भव्य पात दीस । दूजी विगपता आ है क सडक पर जाग्या जाग्या साहित्यकारा, कलाकारा अर देश भक्ता री विशाल मूर्त्या ऊच बड खम्भा माथ सडी कर्वाडी है । विद्या जर मानव विभूत्या र प्रति औ सम्मान आपाणी सस्वृति री उच्चता रो द्योतक ह । मद्रास र समुद्र म सदा ऊची लहरा हिलीरा लेती रवे । इण रो गजन 3 4 किमी दूर मू ई सुणीजण लाग । सिद्धा र बसत सलाया अर स्नान रो आणदलेण आळा रो मेळा सा मॅडयो रव । खाणे पीणे री चीजा, गुब्बारा खिलीणा रा खोमचा दुकाना री भीड भी हा जाव । आगले दिन प्रात पाथ सारथी रा मंदिर देख्या । भगवान कृष्ण रो दक्षिण मे औ नाम इ ज्यादा परसिध है । मंदिर दक्षिण शाली रो है । मुख्य द्वार पत्थर रो है । प्रदक्षिणा रो वरामदी सासो बडा है । पुजारी अर भक्त जन माथ पर आडा त्रिपुण्ड लगाव । मृदग अर शहनाई सू मिलता सा वाद्य भक्त जन प्राय वजाता रवे । दापहर र वाद रो समय बाजार सू चादी रा छाटा माटा आभूषण खरीदण अर परिचिता मू मिलण म लगायो ।

मद्रास सू रेल द्वारा काचीपूरम गया । भारत री सात पुरिया मै-जयाण्या, मधुरा काशी काची अवति अर द्वारिका न बडा पवित्र धाम गिण । मद्रास सलम रेल माग माथ मद्रास मू 71 कि मी दक्षिण पश्चिम म आ मंदिरा री नगर बस्योडी है । स्टेशन नडे एक धमशाळा मे ठहरण रो जाग्या मिलगी । अठ धमशाला न चीलटी कव । षण रा प्राचीन नाम वाचन पुरी हो । फल्लव राजावा र काल म विणेप रूप मू महूद्र वमन अर मामतल नरमिह वमन र समय जठ अनक सु दर मंदिरा रो निर्माण हुषा । काची ज्ञान अर दान शास्त्र रो भी बडो केन्द्र रयो है । आदि शंकराचार्य रामानुजाचार्य अप्पर अर भिक्षु बोधिधम ाद री आ लीला भूमि रयो है । कौटिल्य, दिडनाग, दण्डी अर भारवी जिज्ञा नीतिन अर विद्वान भी अठ ई बसता हा ।

वाचीपुरम र मन्दिरा में कलाशनाथ रा मंदिर स सू जूणो है। वारवी सदी म पल्लव स्थापत्य कला म बण्यो ओ अनागा मंदिर है। पल्लव शिल्प रो एक जीर मंदिर वकुठनाथ परुमाल भी वास्तु कला रो वजोड नमूनो है। इण म विष्णु रो भव्य प्रतिमा है। ओ नदिवमन द्वितीय र वणवायोडा है। नगर र बीच म देवी कमाक्षी रो मंदिर है अर सवतीथ र विनारे विश्वेश्वर मंदिर है जक म कद आदि शकराचाय निग रूप सू पूजा अराघना करता। व्यास पूजा र दिन कामाभी मंदिर में थित शकराचाय रा मूर्ती रो शोभा यात्रा इण मंदिर तक जाव। विजय नगर र राजा कृष्ण देव राज रो महायता सू बण्यो एकावरनाथ र मंदिर रा गोपुर दाक्षिण र गोपुरा म सवसू ऊचो जर देखण जोग है। इण रो ऊचाई 190 फिट है। जाधुनिव द्रविड शली र मंदिरा म जठ रा वरदराज स्वामी रो मंदिर वीत उत्लेख जोग है। इण म एक सुदर मडप अर सौ लम्भा रो पत्थर रो खुदाई र सोवणे काम सू युक्त हाल है। एक जाग्या चट्टान न काट र साकळ बणाई है जके न देखता ई रवा। इण रो गोपुरसात तल्ला रा है जक रो ऊचाई सौ फुट है। विजय नगर शिल्प रा तगडा जमूनो है। इण मंदिर र अलावा भी शिव वाची विष्णु वाची अर जन वाची रा अनेक मंदिर भव्य अर कलापूण है। जठ तक कवे क पल्लव काल म कद जठ 1008 शिव मंदिर अर 108 विष्णु मंदिर हा। वास्तव म ई वाची आपरी प्रतिभा र मूर्तीव घम आध्यात्म रो एक केन्द्र ही है। जाज व्यवसाय रो दीठ सू वी भारत म इण रो महत्वपूण स्थान है जठ रो रेशमी साडया विश्व प्रसिद्ध है। ज हाथ सू बणोज।

आगते त्तिन मदुर रो गाडी पकटी। करीव दस घटा मे सेलम हूता मदुरा पूगग्या। मारवाडी धमशाळा म टिग्या। मीनाक्षी मंदिर न मंदिरा रो मंदिर कणो ठीक होसी। इण में मीनाक्षी अर सुन्दरेश्वर (शिवजी) रा दो विंगाल मंदिर हजरू आदम्या र एक साथे स्नान रो व्यवस्था जाळा तीन बडा सरोवर हस्त कला मूर्त्या, चित्रा अर प्रसाद पुष्प वेचणिया रो पचासू दूकाना अर एक बडो संग्रहालय है। अतो बडो विशाल अर भव्य मंदिर कोई दूजो नी है। इ र चार दिगावा में बण्या गोपुर आभी छूता सा लाग। दक्षिण र शिल्प चित्र मूर्ति अर वास्तु कला रो सगम है ओ मंदिर। इण मंदिर रा

निर्माण 10 वीं से 12 वीं सदी के बीच हुआ बताया है। कबत है व मीनापी देवी के ई पाडच राजा की कथा ही। त्रिण आपरी भक्ति र परभाव सू शिवजी रा वरण कर्यो। इण खातर ही मंदिर र एउ भाग म मीनापी अर दूज म शिव रा मंदिर है। मंदिर रो विशालता न देसता लाग व इण र वणार्णे म वीस्यू बरस लाग्या होसी। मंदिर रो वारलो परिव्रमा रो भीत किले रो ऊची दीवार दाइ है। मूळ मंदिर संकडू सम्भा माथ लडया है। गम्भा पत्थर रा है, अर इणा माथ खुदाई रो अद्भुत काम है। मंदिर र वारल चहरे माथ भात देवी अर पित दख रो मूरत्या अर वार उपमया रो मकडू मानवावार मूर्त्या बणायाडी है। एक कानी केई राजावा रो मूर्त्या भी है। हो सक निर्माण में सहयोग र प्रतीक रूप में अ वणाई जी हुव। मंदिर र वारले फरे म एक गम्भा दुसे पत्थर रा वण्या है व लकडी रे प्रहार मू संगीत रो स्पष्ट ध्वनि कर। दशभार्थी वार वार भान वजा'र देखे अर आण'द लव। नायक वश र राजा तिरसल इण र विस्तार में काफी योग दियो हो।

मदुर नगर कागड नदी त्रिनारे वस्योडो है। जो दक्षिण भारत र प्राचीनतम नगरा में गिणीज। इण स्थान पर 2 हजार बरमा तक सम्यता अर संस्कृति रा लगातार अटूट विकास हुता रयो है। मूर्ति भजक इस्लामी जाक्रमणकारी अठ तक नी पूब सक्या। अठ रो तमिल अकादमी में भारत भर सू पढणन विद्वान भाव अर जठ र पजीकृत छात्रा रो स्तर ऊचो मानीज। दक्षिण भारत र धार्मिक रीति रिवाजा र अध्वता वास्त मदुर सू जाडी जाग्या और भानो। आज भी औ शिक्षा, व्यापार उद्योग, कला अर साहित्य रो केन्द्र है। जनसंख्या रो दीठ मू मद्रास र बाद 2 रा दूजा स्थान है। मदुर र वास पास र क्षेत्रा म भी त्रिपरण कुदरम (8 कि मी) धो वितली पुत्तूर आदि तीरथ है। जठ समय र अभाव र कारण मू नो जा सक्या।

मदुर सू एउ रास्तो पूरव कानी ठेठ समुद्र तक रामश्वरम ताई जाय दूजा विननवल्ली हूर कयाकुमारो ताइ। मदुर सू शिक्षा रो सवारी गाडी मू खाल्या जकी भार म 3 वज्या रामेश्वरम पूगी। रामेश्वरम सू थोडी पैला मडपम नाम रो जाग्या है। मडपम अर रामश्वरम र बीच समुद्र रा पाणी 3 4 कि मी ताइ फल्पोडा है अर रत्न लाइन पुल पर हूर इ र ऊपर कर

निचल । ओ रल माग माथ देश रा सवगू बढा पुळ ह । ँण मू मुजरणा एव रामाचकारी अनुभव हा । मदुर गू रामश्वरम 164 कि मी दूर है । दक्षिण भारत र तीरथा में गवमू षणी मानता ह रा है । रामश्वरम रा समुद्र एकदम शात है । अठ समुद्री लहरा नइ चासे अर पाणी रो उछाळ नी हूव । राम लका विजय र समय अठ ई सतु वाध्या हा । मन में विचार हूव क ँणयद धी डर सू ई उदत्त रूप धरता ओ शका वरता हागा । इण ँणत समुद्र में स्नान करणे म सूव आनंद आयो ।

रामश्वरम मंदिर सामे ही विद्यमान है । अठ 22 जल कुण्ड है । भक्ता रो मायता है क इण कुण्डा में स्नान करणे सू मनुष्य रा पाप बट जाव अर मुक्ति मिल । इण कुण्डा रा नाम देग रो पवित्र नदया र नाम पर है ज्यू क गगा, यमुना गोदावरी कण्णा कवरी तुंगभद्रा आद । दश रो एकत्मता अर गावभीमिता रा अनुभव करणे रो रिता अनूठी भाव ँण र लाग छिप्या है । राष्ट्रीय एकता रो इण साजळ म एर कडी आ धी है क वद्री-केदार रो गगा रे जळ मू रामश्वर जी र गिव लिंग रो अभिपक यात्रा रो सम्पूणता मानीज । प्राचीन भारत रा ज धार्मिक विश्वास ही मदिया ताठ जाति, भाषा अर क्षेत्र रो अपार भिन्नता र उपरात भी दग न एकजुट राग मक्या अर सम्पूण हिंदू जाति में मास्टृतिव एगारमरता रा बढ अभाव नी हूयो । इण कुण्डा म स्नान करयो । समुद्र र पाणी र लवण प्रभाव मू भी मुक्त हूया । रामश्वरम र मंदिर रा गापुर बापी ऊचा है । दूर सू ई दीखण लाग । मंदिर र चारु मर ऊची चारणीवारी है । खम्भा माथ जदभुत कारीगरी रा काम है । मंदिर रा गलिदारा ससार र कोई भा दूज मंदिर सू लम्बा अर चौडा है । कवत है क रावण बध र बाद राम इण ठीर ही शिव रो पूजा कर र ब्रह्म हत्या र अपराध मू छुटवारो पायो । राम भक्ता रा ओ मानीतो तीरथ गिणीज ।

रामश्वर र मंदिर मू 1 कि मी पूरव में समुद्र तट पर एक प्राचीन छाटो मंदिर है । इण न राम झरावो कवे । लका प्रयाण मूपला राम चद्र जी जठ डेरा जमायो । आ भी कवे क हनुमान जी रामाज्ञा सू अठ सू ई छलाग लगा र लका गर्मन करयो । नल नील र द्वारा सेना पार करण वास्त सतु बध रो बात भी इण सू जोड । भारत र एव जतिम कूणे में स्थित चारु घामा म सवसू जळग अर पावन धाम रा दशना मू असीम शांति अर सुख रो अनुभव

हुया । उण दिन ही गाडी सू वापस मदुर पूज'र यात्रा र अतिम पडाव क'या कुमारी री तयारी करी ।

मदुर सू क'याकुमारी जाण वास्ते बीच मे तिरुनेलवेली रो जवशन आव । अठ सू गाडी त्रिवे'दरम वास्ते पश्चिम में मुड जाव । दूजो रेल मारग नागर कोली तक जाव । नागर कोली रेल रो दक्षिण रो अतिम स्टेशन है । क'याकुमारी अठ सू 18 कि मी दूर है । अठे सू बस में जाणो पड । तिरुनेलवेली में पला गाडी बदलणी पडती ही । आजकल तो मदुर सू सीधे नगरकोली पूच है । क'या क' गाडी में चवत्त वाकी हा म्ह लोग तिरुनलवेली र प्रसिद्ध निल्लपर मंदिर देखण न गया । स्टेशन सू पूरव में 2 फलाग दूर 7 वी सदी रो औ अत्यन्त प्राचीन अर भव्य मंदिर है । विष्णु री शेषसाथी मूरती अठ पौडे । गलरी री भीता में पत्थर री चौन्वी मूर्त्या मड्याडी है । मूर्त्या माथ रग भी कर्योडो है । दीवारा माथ द्रविड लिपि रा लेख है । नटराज अर दुर्गा री मूर्त्या कलात्मक है । सगळो मंदिर मजबूत पत्थर रा खम्भा माथ खडयो है । अठ भी एक खम्भे में मदुर दाट लवटी मू ठोउणे सू सगीत री आवाज नीसर । मंदिर र गलियारे म 81 मूर्त्या ह जिण मे नटराज री ताम्बे री मूर्ति अर शिव री पत्थर री मूरती काफी गु'र ह । इण मंदिर म रावण री मूरती भी विद्यमान है । वाग्ले गलियार मू मायले गलियारे म जाव । मायले गलियारे म विष्णु मंदिर अर नौ ग्रहा रो सुंदर मंदिर है । गोपुरम रें वनें फूल पत्र पुष्प प्रसाद अर मिठाई आद री दूकाना है । षण तरा दक्षिण में छोटा छोटा कस्बा म भी बौत प्राचीन अर भव्य मंदिर है ।

तिरुनेलवेली सू नागरकोली पूग्या । यठ सू क'याकुमारी पूचा । गावळ र वता नारियल ताडी अर लजूर र दरन्ता र बीच सडक चाल । उण दिन आवाग में वादळवाई छा'योडी ही । समुद्र र वन हूण सू वातावरण म ठडक ही । 20 25 मिनटा में विवेकान' आश्रम री एक विशाल घमशाळा म पूग्या । व्यवस्थापन मू मिल र मान 2 र म साप सुथरो बडो कमरो ठहरण ताई मिलग्यो । भारत रा अतिम किनारा क'याकुमारी है । आ वाईं जाग्या है जठ भारत र दक्षिण म हिंद महासागर अर असागर अर बंगाल री गाडी मि' । स्वामी विवेकान'द रो मचमू प्रिय स्थळ जठ समुद्र र बीच किनार

गू गरीब। तिलो मीटर दूर एक विंगान चट्टान है, जिण माथे वेट'र विवेकानंद साधना करता। विंगानद आथम सू समुद्र 2 किता मीटर दूर है। जिण टापू नुमा चट्टान पर स्वामी जी प्रिराजता आज बठ अत्यंत भव्य विवेकानंद स्मारक है। आथम सू समुद्र तर जावण मातर नि गुल्न वस सेवा रा परबध है। अर समुद्रतट गू माटर बोट में बोट'र स्मारक ताद जाणे री व्यवस्था है। चट्टान माथ उची गोण्या चढ र ऊपर बणे मंदिर म पूजा। माथ स्वामी विवेकानंद जी री अल्पात री गुदर जा'म बढ प्रतिमा ऊंचे चवतर पर प्रतिष्ठित है। मूर्ति र चंहरे पर माम्यता, गाभीम अर शांति रा अनुपम भाव बिराज। दण मंदिर र नीचे गभगृह म साधना वास्ते एक नीरव अर शांत गुदर बढा कमरो है। मंदिर र सामे विंगाल गुले प्राणण रो छाटी चार दीवारी गू घिर्या विंगान आहता है। अठे गू तीनु समुद्रा न मिलाण आळे अतरीप रो अनूठो दृश्य दीम। ओ स्था आत्मिक शांति रो इसी अनुभूति कराव जिव न शब्दा सू वर्णित नी कर सका। मार्कोपाला और टातेभी जिता प्रसिद्ध थाया दण स्था री जापर यात्रावृत्ताता में सुब प्रशसा की है। विवेकानंद स्मारक सू मूर्खोदय अर सूर्यास्त रा माहर दृश्य दीम।

क्या कुमारी मण नाम रा ई पवित्र मन्दिर है। पुराणा रो कथा र मुताबि पतिराज हिमालय री पुत्री पावती रा गिवजी गू परिणय अठ इ हुगो हो। आज अठ क्याकुमारी (पावती) रो मंदिर है जिणे महत्व पूण तोरथ मानीज। सुय दान स्था अर स्नान घाट भी अठ रा जा'पण है। विवेकानंद आथम म प्रशनी हाल म नर पुगव स्वामी जी र जीवण सम्बन्धी विविध चित्रा अर उण द्वारा चित्रित प्रथा रो सग्रह है। आज र सदम म दण र माध्यम स स्वय विवेकानंद री राणी फेर मुखरित हूती सुणीज वं दक्षिण भारत रा ज वेई प्राचीन मन्दिर अर गुजरात र सोमनाथ सरामा दूजा मंदिर घान सबडू पोथ्या सू घणो नान प्रदान करमी अर जातीय 'तिहाम रो जातरि' प्रता न समनण रो दीठ देमी। देखो दण मंदिरा माथ सबडू हमला अर साडू पुनरु धारा रा चिह्न बिलखान है। दण मंदिरों रा भग्नावशेषा मा सू सदा उद्वार होता रया अर उ सदा नुवा अर सुन्द वण्या रेया। ओ ई आपण राष्ट्रीय मन अर राष्ट्रीय जीवन प्रवाह रा सच्ची रूप ह।



अमरनाथ कश्यप

जलम
गिम्हा
लेखन

23 मार्च 1935 बीकानेर राजस्थान
एम ए इतिहास, हिंदी एल एल बी
सन् 1962 सून पत्रकारिता सून जुडया
(पटिऔट), हिंदी अर राजस्थानी री
भित्त भित्त विघावा री पत्र पत्रिकावा म
लेख आकाणवाणी मूर्चितन, लग अर
वार्तावा री नियमित प्रसारण ।

सम्पादन
प्रकाश्य
सम्प्रति

अरुणिमा' सविद अर रचना
बीच सफर के मुक्ताम ममय बी दस्तक
विभागाध्यक्ष
स्नातकात्तर हिं ती विभाग,
रामपुरिया महाविद्यालय
बीकानेर